आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 मार्च, 2017
डाक प्रेषण तिथि 10 मार्च, 2017

वर्ष : 75 अंक : 03
फाल्गुन, 2073 मूल्य : 10 रु.

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

'जैन जीवन-शैली' अंक

75 हीरक वर्ष

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

जो मिला है वह मेरा नहीं,
मुझे उसका सदुपयोग करना है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone : (079) 23276252, 23276204-0

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वाएण हीरमाणंमि,
चेइयंमि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता,
एए कंदंति भो खगा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.10

हे विप्र! एक दिन हवा चली,
वह चैत्यवृक्ष तब उखड़ गया।
ये पक्षी रोते हैं आश्रित,
जिनका सुनीड़ है उजड़ गया।।

मार्च, 2017

वीर निर्वाण संवत्, 2543

फाल्गुन, 2073

वर्ष 75 अंक 3

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986 IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, फैक्स : 0141-4068798, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

'जैन जीवन-शैली' अंक

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (3)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-आचार्य महाप्रज्ञ	9
विचार-वारिधि-	इच्छा-परिमाण	-संकलित	10
प्रवचन-	असत्य का स्वरूप और उसकी भयानकता	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
	दया सुखां री बेलड़ी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	18
	जैनी की पहचान	-महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.	24
प्रासंगिक -	मैला पानी : एक समस्या	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	25
जैन जीवन-शैली -	अपरिग्रही जैन जीवन शैली	-डॉ. सुषमा सिंघवी	26
	सामाजिक विकृतियाँ और जैन जीवन पद्धति	-प्रो. भागचन्द्र जैन	33
	ब्रह्मचर्य की बहुआयामी महिमा	-डॉ. दिलीप धींग	43
	श्रमयोगी श्रावक : पुनिया	-श्री विजयमुनिजी 'साहित्य रत्न'	51
	जैन संस्कृति में सेवा-भाव	-श्री रेणुमल जैन	53
अंग्रेजी-स्तम्भ-	The Jaina way of life	-*Sh. Dulichand Jain*	28
वैज्ञानिक-आलेख-	जैनों का आहार : कितना वैज्ञानिक	-डॉ. नंदलाल बोरदिया	37
बाल-जिनवाणी -	भगवान महावीर	-सुश्री लोरी मोदी	84
	सुविनीत कौन?	-श्री बटुक	84
	वर्ग पहेली	-संकलित	85
	विद्यार्थी के पाँच लक्षण	-संकलित	85
	सोते समय चिंतन करना	-संकलित	85
	An Apple Tree	-*Sh. Shol Silversteen*	86
	वैज्ञानिक बन जाऊँ	-डॉ. दिलीप धींग	87
	पापा सुना है तम्बाकू खाने से लोग......	-श्री मुन्नालाल आबड़	88
	जैन जीवन-शैली	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	89
	हमारा जैन धर्म गुणखान	-श्री सूरजचन्द सत्यप्रेमी	91
अभिमत -	विज्ञान अंक पर अभिमत	-श्री सुनितकुमार जैन	17
		-श्री चन्द्रप्रकाश गाँधी	49
कविता/गीत-	गुरु की उत्तम शिक्षा है, गुरु की उत्तम शिक्षा है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	52
पाक्षिक-पत्र-	जैन पाक्षिक-पत्र	-संकलित	50
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	54
परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा-परिणाम	-संकलित	55
सूची -	आजीवन शीलव्रत धारकों की शेष सूची	-संकलित	57
संयम-पथ-	रत्नसंघ में पाँच मुमुक्षुओं ने अपनाया प्रव्रज्या पथ	-संकलित	58
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	67
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	79

सम्पादकीय

जिनवाणी की हीरक यात्रा (3)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जिनवाणी पत्रिका को श्रेष्ठ बनाने हेतु पूर्व में भी सतत प्रयत्न होते रहे। जैन साहित्य और संस्कृति के मर्मज्ञ मनीषी वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे विद्वानों के विचारों का प्रकाशन हुआ। जैन विद्या की महत्ता पर उनका कथन है- ''भूगोल, संस्कृति, सामाजिक रहन-सहन हर पहलू पर जैन साहित्य प्रकाश की नई किरणें फैलाता है। राजप्रश्नीयसूत्र में बड़े विस्तार में एक देव विमान और स्तूप की रचना का वर्णन किया गया है। ऐसा जान पड़ता है जैसे लेखक ने सांची-मथुरा के स्तूपों का, उनकी वेदिकाओं और तोरणों का आंखों देखा वर्णन किया हो।'' उनकी दृष्टि में राजप्रश्नीयसूत्र भारतीय संगीत और वाद्ययंत्रों पर कार्य करने वाले विद्वानों के लिए अनमोल सामग्री प्रस्तुत करता है। प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम, मुम्बई के डॉयरेक्टर डॉ. मोतीचन्द्र लिखते हैं-'' बिना जैन ग्रन्थों के अध्ययन के भारतीय संस्कृति के इतिहास में पूर्णता नहीं आ सकती, क्योंकि जैन साहित्य भारतीय संस्कृति के कुछ ऐसे अंगों पर प्रकाश डालता है जिनका बौद्ध अथवा संस्कृत साहित्य में पता ही नहीं लगता, और पता लगता भी है तो उनका वर्णन केवल सरसरी तौर पर होता है। उदाहरण के लिए सार्थवाह के प्रकरण को ही लीजिए। ब्राह्मण-साहित्य दृष्टिकोण की विभिन्नता से, इस विषय पर बहुत कम प्रकाश डालता है। इसके विरुद्ध बौद्ध साहित्य अवश्य इस विषय पर अधिक विस्तृत रूप से प्रकाश डालता है। फिर भी उसका उद्देश्य कहानी कहने की ओर अधिक रहता है, इसीलिए बौद्ध साहित्य में सार्थवाहों की कथाएँ पढ़ कर हम यह ठीक नहीं बतला सकते कि आखिर वे कौनसे व्यापार करते थे और उनका संगठन कैसे होता था। पर जैन साहित्य तो बाल की खाल निकालने वाला साहित्य है। उसे कवित्वमय गद्य से कोई मतलब नहीं। वह तो जिस विषय को पकड़ता है उसके बारे में जो कुछ भी उसे ज्ञात होता है, उसे लिख देता है।'' (नवम्बर-1954)

जिनवाणी के प्रचार में श्री भीकमचन्दजी चौधरी-धुलिया का निरन्तर सहयोग रहा। उस समय जिनवाणी प्रतिमाह 10 तारीख को प्रकाशित होती थी। आज भी वह 10 तारीख को ही प्रकाशित हो रही है। अच्छे लेखों पर पुरस्कार राशि दिये जाने का प्रावधान किया गया। जिनवाणी पत्रिका में पंडित मुनिश्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज के द्वारा समय-समय पर रत्नसंघ के विभिन्न आचार्यों का परिचय दिया जा रहा था। आचार्यश्री रत्नचन्द्रजी महाराज, आचार्यश्री हम्मीरमलजी महाराज आदि संतों के चातुर्मासों एवं उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख किया गया। पूज्य श्री जयमलजी महाराज कृत सिद्धान्त-बावनी का हिन्दी अनुवाद लघु लक्ष्मीचन्द्रजी महाराज द्वारा किया गया। उस समय श्री भंवरलालजी बोथरा जिनवाणी का व्यवस्था सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य देख रहे थे। उनके द्वारा संतों के विहार सम्बन्धी समाचार भी प्रकाशित किए जाने लगे। उन्होंने अपने घर को पत्रिका का कार्यक्षेत्र बना लिया। इंग्लैण्ड के विलियम हेनरी ने जिनवाणी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा- " I am very much delighted to know that your Jinwani has completed 11 years and will be entering in prosperous 12th year. I am very much pleased to note the nature of Jain teachings, excellent method of editing and good capacity to new editorial board.

Particularly Shri Shanti Chandraji Meheta and Shri Champalal Ji Karnawat 'B.A.L.L.B.' hav done good deal for Jinwani. Mehetaji had strange capacity in foriegn propaganda work of this magazine. Several foreigners have appriciated the teachings of Jinwani. (जिनवाणी, दिसम्बर 1954 आवरण पृष्ठ)

जिनवाणी पत्रिका के मुखपृष्ठ पर लिखा रहता था-''इतिहास, साहित्य संस्कृति और धर्म की मासिक पत्रिका।'' उस समय इतिहास विषयक सामग्री जिनवाणी में निरन्तर प्रकाशित होती रहती थी। श्री अगरचन्द नाहटा,

पण्डितमुनि श्री लक्ष्मीचन्दजी महाराज आदि के लेख जैन इतिहास को उजागर करते थे। 'बाल वाणी' में नरेन्द्रकुमार भानावत की रचनाएँ प्रकाशित होने लगी, जो आगे चलकर 1957 में जिनवाणी में प्रकाशित बालवाणी-स्तम्भ के सम्पादक बन गये और फिर 1967 में जिनवाणी पत्रिका के मानद् सम्पादक हो गए। तब जैन धर्म का श्री त्रिलोकरत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड प्रारम्भ हो गया था, जिसकी सूचनाएँ जिनवाणी में समय-समय पर प्रकाशित होती थी। साहित्य सत्कार के अन्तर्गत नई प्रकाशित पुस्तकों की सूचना एवं समीक्षा भी होने लगी। सादड़ी सम्मेलन के पश्चात् भीनासर सम्मेलन की तैयारी चल रही थी। स्थानकवासी परम्परा के अनेक श्रमणों के द्वारा काव्यपरक रचनाएं लिखी गईं जिनका उल्लेख जिनवाणी पत्रिका के अप्रेल 1955 से अनेक अंकों में हुआ। इन रचनाओं पर कई शोध कार्य संभव हैं। रचनाकारों में आचार्य श्री जयमलजी महाराज, चौथमलजी महाराज, रायचंद जी महाराज, आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज, कुशलदासजजी महाराज, श्री विनयचन्द्र जी महाराज, श्री अमोलक ऋषिजी महाराज, श्री माधवमुनि जी, श्री खूबचंद जी महाराज, आचार्यश्री जवाहरलाल जी महाराज, आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज, आचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज, मुनि श्री कनीरामजी महाराज, श्री सुजानमलजी महाराज, श्री त्रिलोक ऋषि जी महाराज, जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज आदि अनेक नाम उल्लेखनीय हैं।

आचार्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज का अप्रेल 1955 में स्वर्गवास हो गया, जिनका परिचय मई 1955 की जिनवाणी में श्री भानु ऋषिजी द्वारा देते हुए लिखा गया कि आचार्यश्री जी का अध्ययन सर्वतोमुखी था। उन्होंने 32 आगमों का हिंदी अनुवाद किया। जैन तत्त्व प्रकाश, परमार्थ मार्ग दर्शक, मुक्ति सोपान आदि छोटे-मोटे लगभग 102 ग्रंथ तैयार किये।

प्राकृत भाषा में प्राचीन आचार्य कृत कुलक का हिन्दी अनुवाद जिनवाणी के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हुआ जो एक आत्मार्थी मुनि द्वारा किया गया। बटुक नाम से आचार्य हस्ती ने दान पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा-'दान में चित्त, वित्त और पात्र की ओर ध्यान दो। ये जितने शुद्ध और पवित्र होंगे वह दान उतना ही पवित्र एवं शुद्ध रहेगा। बडे-बडे धनी पुरुषों द्वारा किए गए दान से निर्धन के एक रूपए का दान अधिक महत्त्व रखता है।' जैन रामायण की दृष्टि से पउमचरियं का नाम प्रसिद्ध है, किन्तु जैन धर्म में रामायण की रचना निरन्तर होती रही है। श्री अगरचंद नाहटा ने जून 1955 के अंक में मुनि केशराज के रामयशोरसायन का उल्लेख करने के साथ त्रिविक्रम कृत रामचंद्र चरित्र एवं ऋषि चौथमल जी कृत रामचरित्र का परिचय दिया है, जो राजस्थानी भाषा में रचित हैं। राजस्थानी भाषा एवं साहित्य पर शोध कार्य करने वाले छात्रों के लिये भी ये ग्रंथ उपयोगी हो सकते हैं। श्री देवेन्द्र मुनि जी, श्री मनोहर मुनि जी, श्री गणेशमुनि जी आदि की रचनाएं जिनवाणी में प्रकाशित होती रहती थीं।

सितम्बर 1955 का जिनवाणी अंक 'पर्युषण' पर प्रकाशित हुआ। आचार्य हस्ती (तत्कालीन पंडितरत्न सहमंत्री श्री हस्तीमलजी महाराज) ने विचार इस प्रकार अभिव्यक्त किए- "उपशम ही चारित्र का सार है। इसके बिना चाहे कितनी कठोर तपस्या करो, यदि राग-द्वेष का उपशम नहीं किया, वैर-विरोध को नहीं भुलाया तो सारी करणी बेकार समझनी चाहिए।" अक्टूबर से दिसम्बर 1955 के अंक अनुपलब्ध हैं। जनवरी-1956 में साधु-समुदाय पट्टावली के अन्तर्गत अगरचन्दजी नाहटा ने 22 साधुओं के टोलों (समुदाय) का उल्लेख किया है- 1. बड़े पृथ्वीराज जी, 2. कानजी ऋषि, 3. हरिदासजी, 4. धर्मदासजी, 5. धन्नाजी, 6. धनाजी, 7. जयमलजी, 8. रघुनाथजी, 9. रूपचन्दजी, 10. मनजी, 11. रामजी, 12. सामजी, 13. पुरुषोत्तम मुकुटरामजी, 14. खेतसीजी, 15. खेमसीजी, 16. लोकमलजी, 17. सीतलजी, 18. छोटा पीथाजी, 19. बड़े पीथाजी, 20. अमरसिंहजी, 21. मलूकचन्दजी लाहोरी, 22. मिनोरजी। धन्नाजी के दो टोले थे। इनके आधार पर 'बाईस सम्प्रदाय' नाम पड़ा।

उस समय बाल-दीक्षा का ही नहीं, दीक्षा का भी विरोध देखा गया। संयम की साधना का महत्त्व हर एक को

समझ में नहीं आ पाता है। फिर भी साधु-साध्वी की संख्या पहले की अपेक्षा आज काफी अधिक है। जिनवाणी में बुद्धि परीक्षा स्तम्भ प्रारम्भ हुआ, जिसमें श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करने वाले प्रश्न उपस्थित किए जाते थे। यह स्तम्भ कई अंकों तक जारी रहा। कभी नाटक या एंकाकी का भी प्रकाशन होता था। धन्ना-शालिभद्र को लेकर एकांकी का प्रकाशन जिनवाणी के फरवरी से अप्रेल 1956 के अंकों में हुआ। दहेज प्रथा के विरोध में लेखन चल रहा था। फरवरी-मार्च 1956 के अंकों में 'दहेज का दानावल' शीर्षक से एक संवाद प्रकाशित हुआ।

नई और पुरानी पीढ़ी के विचारों पर प्रकाश डालते हुए श्री मनोहरमुनिजी ने लिखा- ''जैन दर्शन श्रद्धामय दर्शन है, परन्तु फिर भी उसने बुद्धि को तिरस्कृत नहीं किया है। बुद्धि और श्रद्धा का सम्बन्ध सौत का सम्बन्ध नहीं है, अपितु सखी का सम्बन्ध है। धर्म का प्रज्ञा से समीक्षित होना अनिवार्य है। बुद्धि के आलोक से ही धर्म के विराट् रूप को पा सकेगें।'' नारी के उत्थान के सम्बन्ध में कुमारी प्रेम ढीलीवाल ने लिखा- ''मेरा आशय यह कदापि नहीं कि नारी वर्ग अशिक्षित रह कर कूप मंडूक बना रहे और घर को छोड़ कर बाहर के क्षेत्रों में उन्नति करना अपना कर्त्तव्य ही न समझे। किन्तु वह मर्यादा में रह कर उन्नति पथ की ओर अग्रसर हो। पाश्चात्त्य सभ्यता की शिक्षा तथा वेशभूषा का अन्धानुकरण करना उसके लिए श्रेयकर नहीं।''

अगस्त 1956 में पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी महाराज के जीवन पर आलेख प्रकाशित हुआ। मुनिश्री ने 36 वर्ष के जीवनकाल में 17 शास्त्र कण्ठस्थ किए तथा अनेक चरित्रों की रचना की। वे कवि के रूप में प्रसिद्ध थे। श्री मोती ऋषिजी ने लिखा है कि महाराज श्री ने लगभग 70 हजार कविताएँ गुम्फित की हैं। मुनिश्री मिश्रीमलजी महाराज मधुकर द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र पर रचित हिन्दी पद्यानुवाद भी जिनवाणी के अंकों की शोभा बढ़ा रहा था। नवम्बर-1956 के अंक में रत्नवंशीय संत वादीभ केसरी श्री कनीरामजी महाराज के जीवन से संबंद्ध आलेख प्रकाशित हुआ। उन्होंने सिद्धान्त सार एवं ब्रह्म विलास नामक ग्रंथ की रचना की थी। सिद्धान्त सार ग्रंथ तेरापंथ के खण्डन में लिखा गया। ब्रह्म विलास ग्रंथ में तीन खण्ड एवं 87 ढाले हैं, जो उत्तराध्ययन सूत्र के 13 वें अध्याय के आधार पर लिखी गई हैं।

महास्थविर श्री ताराचन्दजी महाराज का जयपुर में 17 नवम्बर 1956 को निधन हो गया, जिनकी स्मृति में जनवरी-1957 का अंक समर्पित रहा। अनेक आलेख एवं काव्य रचनाएँ उनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर लिखी गईं। जिनवाणी के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा था। व्यवस्थापक श्री भंवरलालजी बोथरा के द्वारा सूचना प्रकाशित की गई- ''अनुभवी सेवाभावी प्रचारकों की आवश्यकता है जो भारत के कोने-कोने में घूमकर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार कर सकें।'' मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की सूचना भी लगभग प्रत्येक अंक के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित होती थी, जिसमें उल्लेखनीय ग्रंथ थे- 1. श्रीमन्नन्दीसूत्र भाषा टीका सहित, 2. श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र भाषा टीका सहित, 3. श्री वृहत्कल्पसूत्र सछाया, 4. गजेन्द्रमुक्तावली भाग 1-2, 5. अमरता का पुजारी, 6. आदर्श विभूतियाँ, 7. प्रबन्ध मुक्तावली आदि। इनमें अधिकांश ग्रंथ पूज्य आचार्य श्री हस्ती की विद्वत्ता का एवं साधना का परिचय दे रहे थे। जिनवाणी के प्रकाशन हेतु गणगौरी बाजार, जयपुर में एक अलग प्रेस प्रारम्भ हुई, जिसका नाम जिनवाणी प्रिण्टर्स रखा गया। जिनवाणी के प्रचार में योगदान करने वालों का नामोल्लेख किया जाने लगा। आचार्यश्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के संक्षिप्त परिचय को भी जिनवाणी के विविध अंकों में स्थान दिया गया।

अप्रेल 1957 में श्री चम्पालाल कर्णावट के साथ श्री चाँदमलजी कर्णावट का नाम भी सम्पादक मण्डल में जुड़ गया। कल्याण पत्रिका का गीता प्रेस, गोरखपुर से उस समय भी प्रकाशन हो रहा था, अतः कभी कोई आलेख कल्याण पत्रिका से उद्धृत भी किया गया। जिनवाणी का न्यूज पेपर के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन हो चुका था, अतः रजिस्ट्रेशन सम्बन्धी सूचना अप्रेल 1957 के अंक में प्रकाशित की गई। उस समय सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर के न्यायाधीश श्री इन्दरनाथजी मोदी थे। अक्षय तृतीया के अवसर पर उपाध्याय पंडित रत्न श्री

मिश्रीमलजी म.सा. द्वारा केकड़ी में जो व्याख्यान दिया गया, उसका जिनवाणी मई 1957 के अंक में प्रकाशन हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर ने दान की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करते हुए फरमाया- "देने की भावना से व्यक्ति का शारीरिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक जीवन भी सुखी और सम्पन्न रहता है। पारिवारिक जरूरतों में ही धन का व्यय कर देना सुख और शान्ति का कारण नहीं। उसे विवेकपूर्वक परहित या समाजोपयोगी कार्यों में शुभभावना से बिना भय और यश की कामना के लगाना ही सच्चे दान का रूप है।" चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, महावीर जयन्ती के दिन जोधपुर में बाबाजी श्री पूरणमलजी महाराज का स्वर्गगमन हो गया। आप एक आदर्श त्यागी-वैरागी संत रत्न थे। राजस्थान विधान सभा में उस समय जैन समाज के कई बन्धु निर्वाचित घोषित हुए। पीपलदा (कोटा) से श्री रिखबचन्दजी धाड़ीवाल (उप वित्तमंत्री), अकलेरा (झालावाड़) से श्री सम्पतराजजी जैन, गंगापुर (सवाईमाधोपुर) से रिद्धीचन्दजी जैन-पल्लीवाल, बेगूं (चित्तौड़) से श्री सुगनचन्दजी जैन, बनेड़ा (भीलवाड़ा) से श्री तेजमलजी बाफना, नावा (नागौर) से श्री किशनलालजी शाह, कुम्भलगढ़ से श्री मनोहरसिंहजी कोठारी तथा सरदारशहर (चुरू) श्री चन्दनमलजी बैद। राजस्थान से संसद के लिए श्री जसवन्तराज जी मेहता-जोधपुर एवं श्री नेमचन्दजी कासलीवाल कोटा से निर्वाचित हुए। जुलाई 1957 में श्री अगरचन्द नाहटा का पूज्य नाथूरामजी के सम्बन्ध में एक आलेख प्रकाशित हुआ, जिसमें लोकाशाह के गच्छ का वर्णन करते हुए लिखा गया- "16 वीं शताब्दी में लोकाशाह का मत स्वतंत्र रूप से प्रसिद्धि में आया। उनके अनुयायी लोकागच्छी कहलाये। लोकाशाह ने मूर्ति पूजा को अमान्य ठहराया। पहले उनके अनुयायी 45 आगमों को मानते थे। फिर क्रमशः 31 या 29 आगमों की मान्यता हो गई जो अंत में 32 की संख्या पर आकर टिकी। लोकागच्छ की प्रधान 3 शाखाएँ हैं- गुजराती, नागौरी और उतराधी। लोकाशाह के अनुयायियों में से कुछ प्रसिद्ध मुनियों के नामों से 12-13 उपशाखाएँ (मत) प्रसिद्ध होने का उल्लेख मिलता है। प्रारम्भ से ही लोकाशाह के अनुयायी छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त होते गए। उनमें से बहुत सी शाखाओं की परम्परा लम्बे काल तक नहीं चल सकी। इसलिए उनका जैसा चाहिए इतिहास उपलब्ध नहीं होता। फिर भी बहुत से साधकों के सम्बन्ध में कुछ रास व गीत आदि मिलते हैं, जिनसे इनकी जीवनी सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हो जाती है। पर खेद है कि इन ऐतिहासिक साधनों के प्रकाशन का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। अनेक भण्डारों में से छोटी-मोटी ऐतिहासिक प्रतियाँ प्राप्त हुईं, उनका मैंने संग्रह कर रखा है। यदि कोई उनको प्रकाशित करना चाहे तो उनका संग्रह ग्रंथ सम्पादित कर सकता हूँ। नागौरी लोकागच्छ की पट्टावली भी मेरे संग्रह में है।"

इतिहास साहित्य, संस्कृति और धर्म की इस मासिक पत्रिका का नवम्बर-दिसम्बर 1957 का अंक 'अहिंसा' विशेषांक के शीर्षक से प्रकाशित हुआ। लगभग 50 पृष्ठों के इस अंक में अनेक उपयोगी आलेख प्रकाशित हुए। जैन दर्शन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह को पंचशील के रूप में ही जाना जाता है। भारत की राजनीति में भी पंचशील का निर्माण हुआ, जिसमें अखण्डता, प्रभुसत्ता, अहस्तक्षेप, सह-अस्तित्व और सहयोग को स्थान दिया गया। एक देश दूसरे देश की सीमा का उल्लंघन न करे, उसकी स्वतंत्रता पर आक्रमण न करे, उस पर अनुचित दबाव न डाले, जिससे उस देश की अखण्डता में विघ्न उत्पन्न न हो। राष्ट्र की अपनी प्रभुसत्ता है, जिसमें अन्य प्रत्येक राष्ट्र को बाधक नहीं बनना चाहिए। किसी देश के आन्तरिक मामलों में दखल नहीं देना चाहिये। विशेषांक में यह भी प्रकट हुआ कि अहिंसा मानव जाति के ऊर्ध्वमुखी विराट् चिन्तन का सर्वोत्तम विकास है। हिंसा और विनाशकता, अधिकार लिप्सा और असहिष्णुता, सत्ता लोलुपता और स्वार्थान्धता से उत्पीड़ित विषाक्त संसार में अहिंसा ही सबसे अमृतमय विश्राम भूमि है। धर्म के जितने मार्ग हैं सब एक तरह से अहिंसा के भी मार्ग हैं। क्या सत्य, क्या अस्तेय, क्या ब्रह्मचर्य और क्या अपरिग्रह सबके साथ अहिंसा चलती ही है। आचार्य हस्ती का कथन है कि अहिंसा में आध्यात्मिक जगत् की तरह सामाजिक जगत् में भी बड़े-बड़े अलौकिक प्रभाव दिखाए हैं। सभी राष्ट्र अहिंसा विश्व शान्ति के लिए उपयोगी है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से अहिंसा की महत्ता को समझने लगे थे। **(क्रमशः)**

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयमब्बवी। तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य। ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 23.37-38

अर्थ- केशीश्रमण ने गौतम स्वामी से पूछा- शत्रु किन्हें कहा गया है? गौतम स्वामी ने यह प्रश्न करने वाले केशी श्रमण को उत्तर दिया- नहीं जीती गई अपनी आत्मा, कषाय एवं इन्द्रियाँ शत्रु हैं। इनको न्यायोचित उपाय से जीतकर मैं विचरण करता हूँ।

विवेचन- संसार में हम प्रायः अपनी इच्छाओं की पूर्ति में बाधक बनने वाले लोगों को अपना शत्रु समझते हैं। अपने लक्ष्य की पूर्ति में जो बाधा उत्पन्न करता है, उसे भी शत्रु मानते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि कहती है कि शत्रुता को बाहर ढूँढने की अपेक्षा अपने भीतर विद्यमान शत्रुओं पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। भीतरी शत्रुओं को जीते बिना बाहरी शत्रुओं को जीतने का कोई महत्त्व नहीं है। उत्तराध्ययन सूत्र निर्देश करता है कि आत्मा ही अपना शत्रु होता है तथा वही अपना मित्र होता है। जब वह सन्मार्ग पर चलता है तो अपना मित्र कहलाता है तथा जब उन्मार्ग पर चलता है तो शत्रु कहलाता है। युद्ध में लाखों शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा स्वयं को जीतना अधिक महत्त्व रखता है। वही परम जय कही गई है।

परिवार, समाज और व्यवसाय क्षेत्र में हमें अनेक शत्रु दिखाई देते हैं। उन शत्रुओं के कारण हम अपने जीवन में अशांति और उद्विग्नता का अनुभव करते हैं। किन्तु वास्तव में अपने भीतर में यदि समता का भाव हो तो बाहरी शत्रु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हमारी दृष्टि का मोह आत्मा को मलिन बनाये रखता है। यह मलिन आत्मा ही प्रमुख शत्रु है। केशी श्रमण के द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में गौतम स्वामी ने दस शत्रुओं का कथन किया है। इनमें दृष्टिमोह से युक्त मलिन आत्मा प्रथम शत्रु है, फिर क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय हमारे आभ्यन्तर शत्रु हैं। क्रोध उत्पन्न होने पर हम क्या कर बैठते हैं, उसका हमें भान नहीं होता। क्रोध के कारण व्यक्ति अपना विनाश तो करता ही है, दूसरों को भी हानि पहुँचाता है। इस प्रकार यह शत्रु आत्मघातक एवं परघातक होने से हेय है। मान-कषाय आत्म-गुणों के विकास में सबसे बड़ा बाधक तत्त्व है। यह मनुष्य को मिथ्या अभिमान के नशे में चूर रखता है जिससे स्वयं के दोष न तो दिखाई देते हैं और न ही उन्हें दूर करने का सामर्थ्य उत्पन्न होता है। माया-कषाय मनुष्य को भुलावे एवं आत्म वंचना में बांधे रखता है। मायावी व्यक्ति सच्चाई को जानता हुआ भी पुरुषार्थ नहीं कर पाता तथा स्वयं को झूठी तसल्ली देता रहता है। लोभ कषाय सबसे बढ़कर है। इसके चंगुल में फँसा हुआ व्यक्ति स्वाधीनता को खोकर विषय एवं वस्तुओं के आधीन हो जाता है। ये चार कषाय उत्तेजना के समय मधुर लगते हैं, किन्तु इनका परिणाम दुःखद होता है। पाँच इन्द्रियाँ भी एक अपेक्षा से शत्रु कही गई हैं। क्योंकि व्यक्ति इन इन्द्रियों के कारण ही विषयों के प्रति आकृष्ट होता है। यद्यपि विरक्त चित्त वाले साधक को इन्द्रियों के विषय विचलित नहीं कर पाते, किन्तु असजग चित्त वाले व्यक्ति इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षित होकर अपनी समता और साधना को कलुषित कर देते हैं। इन्द्रियाँ वास्तव में तो विषयों का ज्ञान कराती हैं, किन्तु मन में रही मलिनता के कारण व्यक्ति उन विषयों के अनुकूल होने पर राग तथा प्रतिकूल होने पर द्वेष करने लगता है। इसी कारण इन्द्रियाँ भी शत्रु कही गई हैं। जो इन्द्रियों को एवं मन को नियंत्रित करके संयम के मार्ग पर आगे बढ़ता है वह चार कषायों को जीतता हुआ पूर्ण रूप से आत्म-जय को प्राप्त कर लेता है। इनको जीतने के उपायों का उल्लेख आगम में यथास्थान किया गया है। इन शत्रुओं को जीतने के प्रमुख उपायों में संयम, समता तथा अप्रमत्तता का समावेश होता है। जीतने का प्रारम्भ दृष्टि मोह को तोड़ने पर ही संभव होता है। **-प्रधान सम्पादक**

विचार-वारिधि

इच्छा-परिमाण

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जीवन में पहला स्थान देव-भक्ति का, दूसरा स्थान संत-सेवा का, तीसरा स्थान परिवार के सदस्यों को संभालने का, चौथा क्रम अपने स्वास्थ्य को संभालने का और पाँचवा स्थान काम धंधे का। इस तरह से जीवन को चलाओगे तो गाड़ी अटकेगी नहीं, भटकेगी नहीं और समाज में नीचा देखने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं, किन्तु वह उन्हें स्वेच्छा से बढ़ा लेता है। आज तो मानव ही नहीं, देश भी आवश्यकताओं के शिकार हो गए हैं। विदेशों में क्या भेजें और कैसे विदेशी मुद्रा प्राप्त करें, यह देश के नेताओं की चिन्ता है। जब उन्हें अन्य पदार्थ भेजने योग्य नहीं दिखते, तो उनकी नज़र पशु-धन की ओर जाती है। बढ़िया किस्म के वस्त्रों, खिलौनों और मशीनों की पूर्ति के लिए धन कहाँ से दिया जाए? इसका एक रास्ता पशु-धन है। एक समय भारतवासी सादा जीवन व्यतीत करते थे, पर विदेशों का ऋण नहीं था, किन्तु आज विचित्र स्थिति बन गई है। नन्हे-नन्हे बच्चों को दूध न मिले और गोमांस विदेशों में भेजा जाए, यह सब आवश्यकताओं को सीमित न रखने का फल है।
- आज मानव परिग्रह को उच्चता और सुख-सुविधा की निशानी समझता है। वह भूल गया है कि परिग्रह उच्चता की निशानी नहीं है।
- जितना जल्दी बिना श्रम के, बिना न्याय के, बिना नीति के पैसा मिलाया जाता है, उस पैसे से लखपति, करोड़पति हो सकते हैं, लेकिन वह पैसा उस परिवार को शान्ति और समता देने वाला नहीं होता। पैसा पाया और घर में शान्ति नहीं तो पैसे का फायदा क्या?
- इच्छा-परिमाण श्रावक के मूलव्रतों में परिगणित किया गया है। इच्छा का परिमाण नहीं किया जाएगा और कामना बढ़ती रहेगी तो प्राणातिपात और झूठ बढ़ेगा। अदत्त ग्रहण में भी प्रवृत्ति होगी। कुशील को बढ़ाने में भी परिग्रह कारणभूत होगा। इस प्रकार असीमित इच्छा सभी पापों और अनेक अनर्थों का कारण है।
- परिग्रह का परिमाण कर यदि आप परिग्रह को कम करना चाहते हैं तो अपरिग्रह की भावना के साथ उपभोग-परिभोग को, भोगोपभोग की सामग्री को घटाने की आवश्यकता है। उपभोग-परिभोग को घटाने के साथ ही परिग्रह की आवश्यकता स्वतः कम हो जायेगी और परिग्रह-संचय के लिये होने वाला पाप भी कम हो जायेगा।
- व्रती श्रावक धन-वैभव आदि परिग्रह को जीवन-यात्रा का सहारा समझता है, साध्य नहीं। धन अर्थात् परिग्रह को ही सर्वस्व समझ लेने से सम्यक्दृष्टि नहीं रहती। व्रती श्रावक आवश्यक परिग्रह की छूट रखकर शेष का परित्याग कर देता है।
- परिग्रह का परिमाण करने वाला श्रावक यदि धन, सम्पत्ति, भूमि आदि परिमाण से अधिक रख लेता है तो अनाचार समझना चाहिए। वैसी स्थिति में उसका व्रत पूरी तरह खंडित हो जाता है। पचास एकड़ भूमि का परिमाण करने वाला यदि साठ एकड़ रख लेता है तो यह जानबूझ कर व्रत की मर्यादा को भंग करना है और यह अनाचार है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

असत्य का स्वरूप और उसकी भयानकता

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

असत्य का रूप

शायद मुझे यह बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी कि असत्य किसे कहते हैं। एक जमाना था जब लोगों को बुराई की पहचान करानी पड़ती थी। पर आज तो भलाई की पहचान करानी पड़ रही है। पाप क्या है, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं होती, पर पुण्य क्या है, यह बताना पड़ता है। तो असत्य क्या है, झूठ क्या है, मृषावाद क्या है यह बताने की जरूरत नहीं होगी। छोटा-सा बच्चा जिसके दूधिये दांत भी नहीं आये, वह भी आज झूठ बोलना सीख जाता है। क्योंकि घरों का वातावरण ही ऐसा है, जहाँ सत्य की जगह असत्य का ही बोलबाला है। माता-पिता, भाई-बहन सब कोई बात-बात में झूठ बोलते हैं, और बच्चे उन्हें देखते हैं, बच्चों को भी झूठ बोलने का संस्कार मिलता है, और वे बहुत जल्दी सीख जाते हैं, माता-पिता के संस्कार पकड़ लेते हैं। आपके जीवन में ऐसे प्रसंग आते होंगे जब आप घर में बैठे होते हैं, बाहर कोई बुला रहा हो, तब आप बच्चे को कहते हैं कि जा कह दे, पिताजी घर में नहीं हैं।'' बच्चा आपकी आज्ञा का पालन जरूर कर लेगा, पर उसके मन पर क्या संस्कार पड़ेगा, ''पिताजी झूठ बोल रहे हैं।'' यही न?

एक वकील साहब थे। बड़े झूठे मुकदमे लड़ते थे। पत्नी ने एक दिन कहा- ''इतना झूठ मत बोला करो, कुछ तो भगवान से डरो।''

वकील साहब बोले- ''झूठ न बोलें तो वकालात ही डूब जायेगी, जो जितना अच्छा झूठ बोलेगा, वह उतना ही बड़ा वकील होगा।'' बच्चे ने पिताजी के शब्द सुन लिए। एक दिन वकील साहब बाहर से आते गर्म-गर्म जलेबियाँ लाए, बच्चे को दी, जा घर में ले जा। दो-तीन बच्चे थे। सबने मिलकर बीच में ही गटागट खाली। वकील साहब को मालूम हुआ कि जलेबी घर में नहीं पहुँची है, तो बच्चों को पूछा- जलेबी तुमने खाई? उसने कहा- ''नहीं?'' वकील साहब को गुस्सा आया। डांटा- अभी से झूठ बोलना सीख गया? एक-दो चपत लगाई, तो उसने सच बता दिया कि हम बच्चों ने मिलकर खाली। वकील साहब ने डाँटकर कहा-''खाई तो खाई, बता झूठ क्यों बोला?''

बच्चे ने रोते हुए कहा- ''मुझे भी वकील बनना है, आप ही ने उस दिन कहा था, जो जितना ज्यादा झूठ बोलता है वह उतना ही बड़ा वकील होता है।''

तो बच्चों में आज झूठ, बेईमानी, चोरी आदि के बुरे संस्कार घर करते जा रहे हैं, उसका मुख्य कारण है- घर का वातावरण। माता-पिता का व्यवहार। आप बच्चों को सच बोलने की शिक्षा देते हैं और स्वयं झूठ बोलते हैं, तो उसका क्या असर होगा? हम देखते हैं बहुत से पिता स्वयं मुँह से सिगरेट का धुआँ निकाल रहे हैं और बच्चों से कहते हैं- ''बेटा! बीड़ी-सिगरेट मत पीना।'' कोई बच्चा आपसे पूछ ले- ''पिताजी! फिर आप क्यों पीते हैं?'' तो क्या उत्तर है आपके पास? बच्चे नकल प्रिय होते हैं, उनके मन पर उपदेश और शिक्षा का उतना असर नहीं होता, जितना व्यवहार का होता है। वे जैसा देखते हैं वैसा करते हैं। तो मैं कह रहा था आज छोटे-छोटे बच्चे झूठ बोलते हैं, कहना चाहिए माँ के पेट से ही झूठ बोलना सीखकर आते हैं। ऐसी स्थिति में झूठ क्या है, असत्य क्या है, यह बताने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

शास्त्रों में जहाँ असत्य का, मृषा का वर्णन किया गया है, वहाँ असत्य के विविध रूपों का वर्णन भी हुआ है। प्रश्नव्याकरण सूत्र (1.2) में असत्य को शठ, अनार्य, माया-मृषा, वंचना, अभ्याख्यान आदि तीस नामों से बताया गया है। उक्त सब प्रवृत्तियाँ असत्य की कोटि में आती हैं। धूर्तता, ठगाई, परनिन्दा आदि को भी असत्य में गिना गया है। भगवती सूत्र (शतक 12, उद्देशक 5) में एक प्रश्न के उत्तर में भगवान ने माया के पन्द्रह नाम बताये हैं। उसमें भी असत्य का समस्त परिवार आ गया है, जैसे- माया, उपधि, निकृति, वक्रता, वंचना आदि। तो यह सब असत्य के भाई बंधु हैं। सिर्फ झूठ बोलना, असत् को सत् बताना मात्र ही असत्य नहीं है। यह तो असत्य का सर्व सामान्य रूप है। मन में और वचन में यह जो कपट का रूप है वह भी असत्य में गिना गया है। आचार्यों ने बताया है-

अन्नं भासइ अन्नं करेइ त्ति मुसावाओ।-निशीथचूर्णि, **3988**

कहना कुछ और करना कुछ यह मृषावाद है। ऊपर मधुरता का दिखावा, आडम्बर और भीतर में कटुता, इसे भी असत्य ही कहा जायेगा। कोई आदमी किसी को मीठा बोलकर ठगता है, लालच दिखाकर अपने जाल में फांसता है। उसे गलत रास्ता बताकर कष्ट में डालता है। किसी की गुप्त बात प्रकट करके परस्पर में भेद डालता है, प्रीति तुड़वाता है। सौ देकर दो सौ का झूठा लेख आदि लिखता है- तो यह सब असत्य का आचरण है। श्रावक के सत्यव्रत के अतिचारों में जो पाँच अतिचार बताये हैं-**मिथ्योपदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूट- लेख-क्रिया न्यासापहार-साकार-मंत्रभेदाः**- मिथ्या उपदेश, गुप्त भेद बताना, झूठा लेख लिखना, धरोहर रखकर मुकर जाना और चुगली खाना अथवा परस्पर में फूट डालने की नारद वृत्ति करना- ये सत्य के अतिचार हैं। इनके आचरण से सत्यव्रत दूषित होता है, अतः गृहस्थ को इन अतिचारों से बचना चाहिए।

घर-घर में जासूसी

सत्य-असत्य का स्वरूप सामने आने पर आपको लगता होगा- आज का जन-जीवन कितना सत्यमय है और कितना असत्यमय? आज जिधर भी देखो असत्य का बोलबाला है। लोग कहते तो हैं- सत्य का बोलबाला है, पर आचरण इससे उलटा कर रहे हैं। सत्य की बात मुँह पर है, किन्तु जीवन में पद-पद पर असत्य का ज़हर घोलते जा रहे हैं। रात-दिन असत्य प्रधान चिंतन, असत्य व्यवहार और असत्य भाषण की कड़ी बंधी चल रही है। जब भी देखो यही सोचना, यही विचारना कि अमुक की वस्तु रखी है तो मांगने को आने पर कैसे नट जाएं, अमुक दोनों में बड़ी प्रीति है तो कैसे उनमें फूट डालना, मनमुटाव पैदा करना, अमुक की गुप्त बातें, छल छिद्र देखने के लिए जासूसी करना आदि सब असद् आचरण है। यह मत सोचिए कि जासूसी सिर्फ राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रों में की जाती है। आज तो हर वर्ग, हर परिवार व हर घर में जासूसी होती नज़र आयेगी। एक दूसरे के छल-छिद्र देखना, अवगुण देखना, बुराइयाँ देखनी यह जासूसी नहीं तो क्या है? व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में एक दूसरे को गिराने की भावना आती है। अब गिरायें कैसे? इसके लिए उसकी दुर्बलता, उसकी बुराई और छल छिद्र देखे जाते हैं। थोड़ी सी कण भर बुराई मिल गई तो उसे मणभर रूप देकर लोगों में उसे बदनाम करना, उसकी प्रतिष्ठा पर धूल डालने का प्रयत्न करना, उपहास, मजाक आदि से उसे नीचा दिखाने की चेष्टा करना, यह सब रूप आते हैं प्रतिस्पर्धा में और इसके लिए होती है जासूसी। अनेक व्यक्ति ऐसे मिलेंगे, जिनका धंधा ही यह हो गया है कि इसकी बात उसको भिड़ा दी, उसकी बात इसको बता दी और बीच में अपना उल्लू सीधा कर लिया। ऐसे लोग बिल्ली के जैसे होते हैं, बस कोई चूहा फंसा तो उसका काम तमाम कर डालना।

इस प्रकार आज के जन-जीवन में असत्य चिन्तन, असत्य आचरण, असत्य भाषण बढ़ता ही जा रहा है। इससे रौद्र ध्यान की वृद्धि होती है, परिणामों की कलुषता बढ़ती है। कलुष परिणामों से मनुष्य का पतन होता है।

आत्मा की पवित्रता, मन की उज्ज्वलता और आत्मबल का नाश होता है। परस्पर अविश्वास और भय का वातावरण बनता है। एक दूसरे के प्रति शंका, आशंका और धोखाधड़ी की भावना बनती है। इस तरह जीवन में चिंता, भय और संदेह छाया रहता है।

बहुत से मनुष्य दूसरों को धोखा देने के लिए, ठगने के लिए बड़े-बड़े जाल गूंथते रहते हैं। जैसे बहेलिया चिड़ियाओं को फंसाने के लिए जाल फैलाकर खुद कहीं छुपकर बैठ जाता है। बस एकटक ध्यान लगाकर देखता है कि कौन चिड़िया आकर फंस रही है? इसी प्रकार असत्यवादी धूर्त मनुष्य भी दूसरों को जाल में फांसने के लिए असत्य का जाल फैलाते हैं, स्वयं एक ओर छिपे रहते हैं और जब कोई भोला पंछी उसमें फंस जाता है तो फिर खुशी में नाच उठते हैं, उसकी अच्छी तरह से हजामत करके ही छोड़ते हैं। कल्पना करिए- यदि उस भोले पंछी की जगह कभी आप किसी के जाल में फंस गए तो आपको कितनी पीड़ा होगी? किस प्रकार आपकी आत्मा भीतर-ही-भीतर क्रन्दन करके उसे दुराशीष देगी? तो क्या यही स्थिति उसकी नहीं होती होगी जो आपके जाल में फंसा है? उस समय एक ओर करुण दशा और दूसरी ओर क्रूर कठोर मनोदशा। कितना रौद्र रूप धारण करती हैं आपकी भावनाएँ, दूसरों की पीड़ा और क्रंदन पर भी दया नहीं आती। बस एक ही ध्यान रहता है, अपना काम बनना चाहिए। अपना काम बनाने के लिए जो चाहे सो किया जा सकता है- धोखा, हिंसा, हत्या।

पुरुष ही नहीं, आज तो महिलाएँ भी झूठ, फरेब और धोखाधड़ी में पुरुषों से आगे बढ़ रही हैं। दूसरे देशों में जासूसी करने के लिए, उनके सैनिक और राजनैतिक भेद लेने के लिए आज स्त्रियों का खुलकर उपयोग किया जा रहा है। उन्हें जासूसी की ट्रेनिंग दी जाती है। धोखा, छल करने की शिक्षा दी जाती है। वे स्त्रियाँ दूसरों को छलने के लिए अपना शरीर तक उन्हें सौंप देती हैं। यह कितना घृणित और दुष्ट तरीका है? क्या आप नहीं जानते कि जिस व्यक्ति को आप दूसरों को धोखा देना सिखाते हैं, वह कभी आपको भी धोखा दे सकता है। आपका भी सत्यानाश कर सकता है। धोखे का शस्त्र जो दूसरों के लिए तैयार किया जाता है, वह कभी अपने ऊपर चल गया तो..... ?

एक व्यापारी के यहाँ एक लड़का मुनीम था। बोलचाल में वह बड़ा चालू था। पास में ही एक दूसरा व्यापारी था। दोनों में प्रतिस्पर्धा चलती थी। सेठ ने मुनीम से कहा- ''देखो अपने पड़ौसी का ध्यान रखा करो, कौन-कौन बाहर के व्यापारी आते हैं, क्या माल बेचता है, किस भाव बेचता है, सब रिपोर्ट रखा करो। इस काम के लिए तुम्हें स्पेशल तनख्वाह दूँगा।'' बस मुनीम को स्पेशल तनख्वाह का लालच आ गया। उसने पड़ौसी के मुनीम से दोस्ती की, उसके साथ घूमने जाता, सिनेमा जाता और होटलों में खाता-पीता। उससे दुकान के भेद पूछने लगा। एक दिन पड़ौसी सेठ ने अपने मुनीम को उस मुनीम के साथ देखा तो उसे शक हो गया। वह समझ गया, उसने भी अपने मुनीम को वही सीख दी जो पड़ौसी ने अपने मुनीम को दी थी। अब परिणाम यह हुआ कि उधर की बातें इधर आने लगीं और इधर की सब बातें उधर जाने लगीं। दोनों मुनीमों को लालच का चस्का लग गया। कुछ ही दिनों में दोनों के भाव-ताव, खरीददार, व्यापारी आदि टकराने लगे और यह भेद खुलने लगा कि अपनी बात उधर जाती है। आखिर परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे दोनों व्यापारियों की गुप्त बातें सब बाहर आने लगीं और व्यापार दबने लग गया। जब सारा भंडा फूटा तो दोनों ही मुनीमों को वहाँ से निकाल दिया गया।

अतः जिस शस्त्र का प्रयोग आप दूसरों के लिए करना चाहते हैं, वह कभी-कभी अपने ऊपर भी चल जाता है और तब आपको पता चलता है कि यह वृत्ति कितनी क्रूर और कितनी निकृष्ट है।

असत्य:हिंसा से भी भयानक

मृषानुबंधी रौद्र ध्यान के परिणामों की बात चल रही थी और उसी के अन्तर्गत असत्य का वर्णन किया गया

है कि इस प्रकार के दुश्चिन्तन एवं दुर्ध्यान के कारण परिणामों में रौद्रता आती है। दूसरों को छलना, धोखा देना, असत्य का जाल ग्रथना आदि वृत्तियों के कारण मृषानुबंधी रौद्र ध्यान होता है।

असत्य सिर्फ असत्य तक ही सीमित नहीं रहता। वह धीरे-धीरे हिंसा, चोरी आदि के रूप भी धारण करने लग जाता है। जैसे फोड़ा प्रारम्भ में छोटा सा होता है और थोड़ा-थोड़ा दर्द करता है, किन्तु जैसे-जैसे उसका विष फैलता है वैसे-वैसे दर्द बढ़ने लगता है। शरीर में वह बेचैनी, बुखार आदि अनेक बीमारियों को जन्म देता जाता है। वैसे ही यह असत्य का फोड़ा भी है। अपने असत्य को छुपाने, अपनी ठगाई को सफल करने के लिए मनुष्य हिंसा का मार्ग पकड़ता है। वह हत्याएँ, तोड़-फोड़, लूट-खसोट करता है, आतंक फैलाता है, चोरी करता है। इस प्रकार असत्य का फोड़ा अनेक प्रकार के रौद्र रूप धारण कर लेता है। **असत्य की अनर्थ परम्परा बड़ी लम्बी होती है।** शास्त्रों में हिंसा की अपेक्षा असत्य के परिणाम अधिक भयानक बताये हैं। हिंसा से मनुष्य स्वयं को या दस-बीस पचास प्राणियों को कष्ट पहुँचाता है, अधिक हो तो दस-पाँच लाख या असंख्य अनन्त प्राणियों को भी सिर्फ वर्तमान में पीड़ा पहुँचा सकता है। किन्तु असत्यवादी तो असंख्य-अनन्त जीवों की हिंसा, पीड़ा और विनाश का द्वार खोल देता है। हिंसा का उपदेश करके, हिंसा में धर्म की स्थापना करके वह सुदीर्घ काल तक अनन्त-अनन्त प्राणियों की हिंसा का प्रवाह चालू कर देता है। इसलिए बाहर में हिंसा की रौद्रता भले ही अधिक प्रतीत होती हो, किन्तु अन्तरंग दृष्टि से हिंसा से भी अधिक रौद्र और क्रूर कर्म है- असत्य। जैन ग्रंथों में वसु राजा की कहानी प्रसिद्ध है जिसने असत्य और माया-मृषा का प्रयोग करके जीव हिंसा का द्वार खोला। इस घटना ने आगे चलकर अत्यन्त रौद्र रूप धारण कर लिया था।

बहुत प्राचीन समय की बात है। एक क्षीरकदम्ब नामक आचार्य थे। आचार्य के पास तीन शिष्य अध्ययन करते थे। एक था उस नगर का राजकुमार वसु, दूसरा था ब्राह्मण का पुत्र नारद और तीसरा विद्यार्थी था स्वयं आचार्य का पुत्र- पर्वत। आचार्य के गुरुकुल में ये तीनों विद्यार्थी साथ-साथ पढ़ते थे। आचार्य अपने विद्यार्थियों के जीवन विकास की ओर निरन्तर ध्यान देते थे। विद्यार्थियों को अध्ययन कराना और उनमें संस्कारों का निर्माण करना- यही आचार्य का ध्येय रहता था। वे विद्यार्थी को अंकुर रूप में लेते थे, और योग्य वृक्ष बनाकर माता-पिता को सौंप देते थे।

एक बार आचार्य विश्राम कर रहे थे। तभी अचानक उन्हें आकाशवाणी सुनाई दी कि- ''आचार्य के इन शिष्यों में से एक राजा होगा, एक नरकगामी होगा और एक स्वर्गगामी।'' आकाशवाणी सुनते ही आचार्य चौंक कर उठ बैठे, चिंतित हो उठे। उनका आराम हराम हो गया। 'यह क्या? जिन शिष्यों के लिए मैं इतना प्रयत्न कर रहा हूँ, सद्विचार एवं सद् संस्कारों से जिनके जीवन-घट का निर्माण करने हेतु कुम्हार की तरह रात-दिन चेष्टा कर रहा हूँ, इनमें से भी एक नरकगामी होगा? मेरा किया-कराया सब धूल में मिल जायेगा'' आचार्य कुछ देर सोचते रहे, फिर एक निर्णय लिया- ''वसु राजकुमार है, वह तो राजा होगा ही। अब पहले यह पता लगाऊँ, इन दोनों में नरकगामी कौन है? किसके संस्कार कैसे हैं?''

आचार्य के मन में जिस प्रकार की चिंता हुई, शायद ही आज किसी शिक्षक के मन में ऐसी चिंता हो। बच्चों के संस्कार कैसे बन रहे हैं, उनकी मनोवृत्तियाँ किधर दौड़ रही हैं- इसका परिचय रखना शिक्षकों के लिए भी जरूरी है, और अभिभावकों के लिए भी। पुराने जमाने में शिक्षा की परीक्षा के साथ-साथ संस्कारों की भी परीक्षा ली जाती थी। यदि उनके संस्कार बिगड़ रहे हों, उनकी मनःस्थितियाँ बुरे मार्ग की ओर जा रही हों तो उन्हें सुधारने का प्रयत्न किया जाता था। हर संभव प्रयत्न से उनको सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा की जाती थी।

उन आचार्य को अपने शिष्यों की इतनी फिकर थी कि जब से यह सुना कि इनमें एक नरक गामी है, तो

उनका मन भीतर-ही-भीतर बेचैन हो उठा। कौन नरकगामी है, यह प्रश्न उनके मन को झकझोरने लगा। वे सोचने लगे- ''नरक जाने वाला प्रायः रौद्रध्यानी होता है। उसके परिणामों में क्रूरता, कठोरता और नृशंसता रहती है। वह पाप करते समय डरता नहीं, पाप करके उसके मन में किसी प्रकार का पश्चात्ताप नहीं होता। ये परिणाम रौद्र ध्यान के हैं। इन्हीं परिणामों के परिपाक से नरक योग्य कर्म का बंध होता है। आर्त्तध्यान वाले के मन में इतनी क्रूरता नहीं आती और धर्मध्यान में क्रूरता का सवाल ही नहीं। उसका हृदय तो मक्खन सा कोमल, करुणाशील और पाप-भीरू होता है। अतः इन तीनों शिष्यों के अन्तर्मानस की परीक्षा करनी चाहिए कि कौन आर्त्तध्यानी है, कौन रौद्रध्यानी है और कौन धर्मध्यानी है।'' गम्भीर होकर आचार्य शिष्यों की परीक्षा विधि सोचने लगे।

आचार्य ने परीक्षा की तरकीब सोची, तैयारी की और फिर शिष्यों को बुलाया। आचार्य का शब्द सुनते ही शिष्य झट से आकर उपस्थित हुए। हाथ जोड़कर बोले- ''गुरुदेव! क्या आज्ञा है? चरणों में सेवक उपस्थित है।''

शिष्यों की तत्परता और नम्रता देखकर गुरु का मन प्रसन्न हो गया। यह एक प्रकार का विनय है कि गुरु जब शिष्य को बुलाए तो वह झट से अपने आसन से उठकर हाथ जोड़कर उनसे पूछे- ''महाराज! मुझे किसलिए याद किया है, मेरे लिए क्या आदेश है?'' यह नहीं कि गुरुजी पुकार रहे हों, और शिष्य आसन पर बैठा, पाँव पसार कर आराम करता हुआ ही बोले-''क्या कहते हो? क्या हो गया?'' यह उत्तर अविनय एवं उद्दंडता का परिचायक है। शास्त्र में बताया है- गुरु के बुलाने पर-**'चइऊणमासणं धीरो, जओ जुत्तं पडिस्सुणे'** (उत्तराध्ययन 1.21) शिष्य अपना आसन छोड़कर खड़ा हो जाये और विनयपूर्वक उनसे पूछे- ''गुरुदेव! क्या आज्ञा है?''

आचार्य क्षीरकदंब के बुलाने पर तीनों शिष्य हाथ जोड़कर उपस्थित हुए और गुरु के आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। आचार्य ने वसु को तो कहा- ''तुम जाओ! अपना अध्ययन करो।'' वसु चला गया, अब अपने पुत्र पर्वत को निकट बुलाकर पहले से बनाया हुआ आटे का एक मुर्गा दिया और कहा- ''जहाँ कोई नहीं देखता हो, वहाँ जाकर इसकी गर्दन मरोड़ डालना।''

आचार्य की आज्ञा पाकर पर्वत आश्रम कक्ष से बाहर आया। हाथ में मुर्गा है और सोचता है-''यह क्या कोई बड़ा काम है? गुरुजी ने कहा है- ''जहाँ कोई नहीं देखता हो वहाँ इसकी गर्दन मरोड़ डालना। यहाँ तो चारों ओर जंगल ही जंगल है, कौन देखता है यहाँ?'' उसने एक झाड़ी की ओट ली, वहाँ छिपकर पिष्टमय मुर्गे की गर्दन तोड़ डाली।

नारद भी गुरुजी की आज्ञा शिरोधार्य करके चला। वह आश्रम से दूर, बस्ती से काफी आगे चला गया। एक घने जंगल में पहुँचा, जहाँ किसी आदमी का मुख भी नहीं दिखाई देता था, वहाँ रुका, सोचा- यह जगह एकान्त है, यहाँ कोई नहीं देखता। थोड़ा इधर-उधर देखा तो आकाश में पक्षी उड़ते हुए नज़र आये। विचार किया- ये पक्षी तो मुझे देख रहे हैं, फिर एकान्त कैसा? वह और आगे चला और एक पर्वत की गुफा में पहुँचा। वहाँ देखा तो पक्षी भी नहीं दिखाई दिए। वह गुरुजी की बात पर गंभीरता से सोचने लगा-''गुरुजी ने कहा है जहाँ कोई न देखे वहाँ पर मुर्गे का वध करना, यहाँ पर और तो कोई नहीं देख रहा है, पर मैं तो स्वयं देख रहा हूँ। मैं अपनी आँखों पर पट्टी बाँध लूँ तो गुरुजी की आज्ञा का अक्षरशः पालन हो जायेगा। ज्योंही उसने पट्टी बाँधने का विचार किया, त्योंही उसके विवेक नेत्र खुल गये। सोचने लगा- ''मैं अपनी आँख पर तो पट्टी बाँध लूँगा, लेकिन भगवान की आँख पर नहीं, वे तो सर्वदर्शी सर्वज्ञ हैं। वे अपने ज्ञान नेत्रों से समस्त चराचर जगत के भावों को जान रहे हैं, देख रहे हैं उनसे कैसे छुपा सकता हूँ।''

नारद विचारों में जैसे ही गहरा उतरा, उसके हृदय में एक नया आलोक चमक उठा। उसे निश्चय हो गया कि

संसार में ऐसा कोई भी स्थान नहीं हो सकता जहाँ कोई भी न देखता हो, चूंकि भगवान सर्वत्र देखते हैं। फिर गुरुजी ने जो आदेश दिया है कि 'जहाँ कोई भी न देखे वहाँ इसका वध करना'– इसका क्या तात्पर्य है? इसका अर्थ यही है कि वध नहीं किया जाय।' गुरुजी जैसे महान् व्यक्ति कभी किसी के वध की आज्ञा दे भी कैसे सकतें हैं– नारद विचारों की गहराई में डूब गया। परिणाम यह हुआ कि मुर्गे को ज्यों का त्यों लेकर नारद वापस चला आया।

दोनों शिष्यों को आया देखकर गुरुजी ने पूछा–"क्यों, अपना काम कर आये?"

पर्वत ने तपाक से उत्तर दिया–'जी हाँ! सब ठीक–ठाक कर आये। जैसा आपने आदेश दिया था, उसी के अनुसार मैंने अपना कार्य पूरा कर लिया। यहाँ से दूर जंगल में गया, वहाँ कोई नहीं देख रहा था, फिर वहीं पर एक झाड़ी की ओट में छिपकर मैंने इस मुर्गे का वध कर डाला। वहाँ किसी की भी नज़र नहीं पड़ी।'

पर्वत का उत्तर सुनते ही गुरुजी का हृदय बैठ गया। सोचा– "यह तो घर में ही घाटा है। बस यही नरकगामी होगा।" फिर भी भावों को छिपाते हुए गुरुजी ने ऊपर से चेहरे पर कोई अंतर नहीं आने दिया। उसी जिज्ञासा भरी दृष्टि से नारद की ओर देखा– 'नारद! तुमने क्या किया।'

नारद ने चुपचाप मुर्गे को गुरुजी के सामने रख दिया। पर्वत मन–ही–मन प्रसन्न हो रहा था कि– मैंने गुरुजी की आज्ञा का ठीक पालन किया है, मुझे शाबासी मिलेगी, नारद मूर्ख है, इसे कहीं मुर्गे की गर्दन मरोड़ने की जगह भी नहीं मिली, गुरुजी इसे फटकार लगायेंगे।

गुरुजी ने कृत्रिम रोष दिखाते हुए कहा– 'यह क्या? तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया?'

नारद ने विनम्र और गंभीर स्वर में कहा– 'गुरुदेव! आपने आज्ञा दी कि जहाँ कोई न देखे वहाँ पर इसका वध करना। पर मैं जंगल, पर्वत और गुफा आदि सब स्थानों पर घूम आया, मुझे तो कहीं भी ऐसा स्थान नहीं मिला जहाँ कोई न देखता हो। जंगल में पशु–पक्षी देखते थे, गुफा में गया तो वहाँ मैं स्वयं देख रहा था। अपनी आँखे बन्द कर मारना चाहा तो स्मरण आया कि सर्वज्ञ प्रभु तो सर्वत्र देख रहे हैं। अतएव मैं मुर्गे का वध नहीं कर पाया और ज्यों का त्यों लेकर आ गया।"

नारद का उत्तर सुनकर गुरुजी प्रसन्न हुए। उन्होंने नारद को धन्यवाद दिया। पर्वत मन–ही–मन खिन्न हो उठा। गुरुजी ने कहा– 'मेरा सच्चा शिष्य नारद है, इसी में मेरे संस्कार प्रतिबिम्बित हुए हैं।' इसको हृदय में परमात्मा का डर है, अतः यह स्वर्गगामी होगा। जिसे भगवान का भय नहीं, वही वस्तुतः नरकगामी है।

अपनी परीक्षा भी लीजिए

आचार्य क्षीरकदम्ब ने अपने शिष्यों की परीक्षा ले ली। क्या आप भी अपनी परीक्षा लेंगे? क्या आपके मन में यह दृढ़ विश्वास है कि आपके प्रत्येक कार्य को परमात्मा देख रहा है? सर्वज्ञ और सर्वदर्शी प्रभु से आपका कोई भी कार्य, कोई भी मानसिक विचार, संकल्प छिपा नहीं रह सकता। यदि सचमुच में आप ऐसा अनुभव करते हैं, और इस बात पर सोचकर पापों से डरते हैं तो फिर मानना चाहिए कि आप दुर्गति से बच सकते हैं। जिसे पाप का डर है, वह कहीं भी रहे, चाहे वन में रहे, या भवन में रहे, गुफा में रहे या गृह में रहे, उपाश्रय में रहे या दुकान पर बैठे वह प्रत्येक स्थान पर अपना कल्याण साध सकता है। शास्त्र में इसीलिए कहा है– 'से गामे वा, नगरे वा, एगओ वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा।" साधक चाहे छोटे गाँव में है या नगर में है, अकेला बैठा है या हजारों आदमियों की परिषद् के बीच बैठा है, सोया है अथवा जागता है, रात्रि के गहन अंधकार में बैठा है या सूर्य के उज्ज्वल प्रकाश में, वह सर्वत्र अपनी आत्मा को पाप से बचाता रहता है। उसका दृढ़विश्वास होता है कि जो कार्य सबके सामने नहीं किया जा सकता उसे एकांत में भी नहीं करना चाहिए। चूंकि वास्तव में सर्वज्ञ प्रभु सब जगह देखते

हैं, इसलिए एकांत कहीं है ही नहीं।

मैं सोचता हूँ यदि आपके और हमारे जीवन में भी यही भाव साकार हो जाये तो फिर कल्याण व सुधार होने में देरी नहीं लगेगी। आज जीवन में जो दुरंगापन आ रहा है, कथनी-करनी में अंतर आ रहा है। ऊपर कुछ, भीतर कुछ, यह जो दुहरी चाल का नाटक चल रहा है, उसका क्या कारण है, यही कि मनुष्य दो तरह का व्यवहार करता है। दो तरह का रूप रखता है। एक रूप घर का, एक बाहर का। बाहर में बड़ा भला, सरल और शांत दिखता है, किंतु घर में आकर क्रोध में रौद्र रूप धारण कर लेता है। समाज में बैठकर बड़ी सच्ची बातें बताने लगता है, जैसे सत्यवादी हरिश्चन्द्र ही बनेगा। किन्तु छुपकर झूठ, फरेब और दगा के जाल गूंथकर लोगों को फंसाता रहता है। धर्मस्थान में बैठकर धर्मात्मा बनता है, भक्तराज का रूप धारण करता है, किंतु यहाँ से बाहर निकला तो रावण और दुर्योधन का चोला पहन लेता है। इस प्रकार जीवन के जो दो रूप चल रहे हैं, उसका कारण यही तो है कि आप जैसे हैं, उस रूप को छिपाना चाहते हैं और दूसरा सुन्दर रूप, नकली चेहरा बनाकर लोगों के सामने आते हैं। कभी-कभी एक कड़ी बच्चे गाते हैं-

नकली चेहरा सामने आया असली चेहरा छुपा रहा.....

आपके मन में क्या यह विश्वास है कि देखने वाले भगवान आपके असली और नकली दोनों चेहरों को देख रहे हैं। जो काली कोठरी में छुपकर पाप कर रहा है उसे भी वे देख रहे हैं। उनसे कुछ भी छुपा नहीं रह सकता। फिर भी यदि आप का जीवन दुरंगा है, आप बहुरूपिये सा आचरण करते हैं तो यही मानना चाहिए कि वह विश्वास आपके जीवन का सिद्धान्त नहीं बना है। विश्वास पर अमल होना चाहिए तभी जीवन में परिवर्तन आयेगा, सुधार होगा और 'जहावाई तहाकारी' जैसा बोले वैसा करे का आदर्श जीवन में झलकेगा।

आचार्य क्षीरकदंब की कहानी अभी चल रही थी। शिष्यों की परीक्षा करके उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि पर्वत जो कि मेरा ही पुत्र है, किन्तु वह बड़ा नृशंस व क्रूर है, उसके परिणाम रौद्रध्यानी के हैं, अतः वह मरकर नरक में ही जायेगा। क्योंकि रौद्रध्यान वाले की सद्गति नहीं हो सकती। नारद बड़ा सरल और भद्र परिणामी है, इसके मन में पाप का डर है, जिसे पाप का डर है उसकी दुर्गति नहीं हो सकती। अतएव यह स्वर्गगामी होगा। ■

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुनितकुमार जैन

'जिनवाणी' का फरवरी-2017 का 'जैन धर्म और विज्ञान' अंक पढ़कर लगा कि वर्तमान विश्व की सभी समस्याओं का समाधान जैनधर्म में निहित है। आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से जैन धर्म का पक्ष सदैव सबल रहा है। आज इस बात की महती आवश्यकता है कि हम पाश्चात्य संस्कृति का त्याग करके आदर्श जैन संस्कृति को अपनाएँ एवं जैन धर्म को विश्व धर्म बनाने में अपनी भागीदारी निभाएँ। नयी पीढ़ी में जैन धर्म के संस्कारों को सींचने की दृष्टि से 'बाल-जिनवाणी' के प्रकाशन के लिए सहृदय साधुवाद। सम्माननीय सम्पादक महोदय द्वारा लिखित 'जिनवाणी की हीरक यात्रा (2)' के तहत धार्मिक मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' की शुरुआत से लेकर अब तक के सफर से रुबरू होने का मौका मिला। जिनेश्वर प्रभु के शुभाशीर्वाद व गुरु कृपा से 'जिनवाणी' निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। 'जिनवाणी' पत्रिका को इंटरनेट पर उपलब्ध कराने हेतु हार्दिक धन्यवाद। 'जिनवाणी' की प्रतिपल उन्नति के लिए असीम शुभकामना।

-जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)

प्रवचन

दया सुखां री बेलड़ी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 02 सितम्बर 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर तथा संपादन श्री पुखराज मोहनोत, जोधपुर द्वारा किया गया है।**-सम्पादक**

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय अनुपम वाणी स्थानांगसूत्र के माध्यम से संग्रहनय की अपेक्षा से एक-एक तत्त्व का निरूपण कर रही है। एक सूत्र कहा जा रहा है-'प्राणातिपात-विरमण'। जिस तरह पाप के स्वरूप का कथन करते हुए हिंसा को 'प्राणातिपात' कहा गया है, ठीक इसी तरह धर्म का कथन करते हुए ''प्राणातिपात-विरमण'' कहा गया है। यह सूत्र बताता है कि जीव को हिंसा का त्याग करके अहिंसा धर्म अपनाना श्रेयस्कर है।

प्रश्नव्याकरण सूत्र में अहिंसा की महिमा का विवेचन करते हुए उल्लेख आता है-**''एसा सा भगवई अहिंसा, जा सा भीयाणं विव सरणं''** -कहा जा रहा है कि यह जो अहिंसा-भगवती है, वह संसार के समस्त प्राणियों के लिये शरणभूत है। यह अभयप्रदात्री है। वस्तुतः अहिंसा अत्यन्त गरिमामयी है। वह मातृस्वरूपा है। माता जिस प्रकार अपनी सन्तानों का संरक्षण करती है उसी प्रकार अहिंसा सभी का रक्षण-संरक्षण करती है। जो डरे हुए हैं, भयभीत हैं, उनके भय का हरण कर उन्हें निर्भय बनाने वाली अहिंसा ही है।

अनिष्ट की आशंका जीवन में हलचल मचा देती है, पर यदि पता लगे कि ऐसा कुछ नहीं होने वाला है तो भीतर में शांति और संतोष परिव्याप्त होना साधारण बात है। आपको ज्ञात हो कि पड़ौसी के महीने-दो महीने के भीतर ही मारकेश की दशा आने वाली है तो आपकी हालत भी पतली हो सकती है, मन में अशांति व्याप्त हो सकती है, खलबली-सी मच सकती है, पर फिर जब ध्यान में आता है कि मेरे साथ ऐसा कुछ भी तो नहीं है, बस यह विचार आते ही मन शांत बन जायेगा। कई बार पूर्व सूचना मिलती है कि बाढ़ आने वाली है, आग लग सकती है, आतंकवादियों या चोर-डाकुओं का उपद्रव हो सकता है तो क्या होगा? घबराहट होगी, चिन्ता से चेहरे पीले पड़ जायेंगे। ऐसे समय में यदि यह कहा जाता है कि-'अरे! चिन्ता कैसी? क्यों घबराते हो? मारने वाले से बचाने वाला अपना पुण्य बड़ा होता है। अनहोनी हो नहीं सकती और होनी को कोई टाल नहीं सकता। फिर भय कैसा?' सुनकर अशांत मन शांत बन जाता है, भय बहुत सीमा तक कम हो जाता है। मन में रह-रहकर यही चिन्तन चलता है-''जो होगा सो देखा जायेगा।''

आपको एक बात ध्यान में लेनी है। यह जो अन्तर में समायी अशांति है, भय का जो भूत भीतर बैठा है, उसे दूर करने के लिए स्वयं को अहिंसक एवं दयावान बनना होगा। ऐसी दया ही भयभीत होने वाले जागतिक प्राणियों के लिये शरणभूत है।

जब तेज प्यास लगी हो, होठ सूख रहे हों, जीभ बाहर आ रही हो, प्राण कंठ में आ रहे हों, पलकें झपकना भी बन्द हो रही हों और चारों तरफ कहीं भी पानी का कोई स्थान न हो, ऐसे समय में कोई व्यक्ति एक लोटा ठण्डा, मीठा, स्वादिष्ट पानी पिला दे तो क्या होगा? प्राणियों में प्राण आ जायेंगे, नया जीवन मिल जायेगा उस प्यासे व्यक्ति को। इसी तरह अहिंसा समस्त प्राणियों की प्राणरक्षिका है।

एक सेठ यात्रा पर गाड़ी लेकर निकल रहे थे। उन्होंने गाड़ीवान से कहा– 'देखो! मटकी का ध्यान रखना।' गाड़ीवान ने तुरन्त कहा– ' हाँ सेठ जी! मुझे आपने कह दिया था। मैंने ध्यान से मटकी रख दी है।' कुछ देर पश्चात् सेठजी फिर गाड़ीवान को मटकी का ध्यान रखने की बात कहते हैं। गाड़ीवान सुनकर उन्हें पुनः आश्वासन देकर कहता है–'आप निश्चिन्त रहें। मटकी संभाल कर रखी हुई है। पूरी सुरक्षित है।'

यात्रा प्रारम्भ हुई। समय बीतता गया। गर्मी के दिन थे। दोपहर बाद तपन तेज हो गई। सेठजी को प्यास लगी। सेठजी ने गाड़ीवान से कहा– 'प्यास लग रही है, मटकी से पानी पिलाना।'

गाड़ीवान गाड़ी चलाते हुए सेठ जी की बात सुनकर कहता है– 'सेठ साहब! मटकी तो है, पर खाली मटकी है। पानी तो उसमें नहीं है।'

सेठजी कहते हैं–'क्या कहा? खाली मटकी? पानी नहीं है? अरे तो मेरी प्यास का क्या होगा? बिना पानी के मटकी क्या करेगी?'

गाड़ीवान बोला–'सेठ साहब! आपने मटकी का ध्यान रखने के लिए कहा, तो मैंने मटकी का पूरा ध्यान रखा। नई, कोरी मटकी लाया। मेरे पास ही उसे उलटी करके रख दिया। देख लीजिए मटकी पूरी तरह सुरक्षित है। पानी के लिए तो आपने कुछ कहा ही नहीं।'

सेठ साहब की प्यास बढ़ती जा रही थी। गाड़ीवान का कथन सुनकर उस सेठ ने अपना सिर पीट लिया। अब प्यास कैसे बुझे? नई मटकी, कोरी मटकी पर पानी नहीं। गाड़ीवान की भी क्या गलती? उसकी जैसी अक्ल, वैसा उसने कर दिया। मटकी का ध्यान रखने की बात कही, मटकी का ध्यान रखा ही है।

हम भी तो वैसा ही कर रहे हैं। ध्यान किसका रखना चाहिए, पर ध्यान किसी और का रख रहे हैं। शरीर का ध्यान रखने में हम आत्मा को भूल बैठे हैं। मूल तो आत्मा है, पर शरीर को सजाने-संवारने में अधिक समय दिया जा रहा है। मानव की यह देह, यह खोली, यह शरीर दुर्लभ है, पर क्यों है दुर्लभ? दुर्लभ इस दृष्टि से कि इसी देह से मोक्ष मिलाया जा सकता है, जन्म-मरण मिटाया जा सकता है, कर्म-बंधन काटा जा सकता है। सजाना, संवारना है आत्मा को। तप और संयम आदि से ही आत्मोद्धार होता है, पर कहाँ है तप, कहाँ है संयम? हमने अपनी आत्मा का कितना विकास किया है, इसका सतत चिन्तन आवश्यक है। देह तो कोरी मटकी है, पानी तो आत्मा ही है।

सेठ साहब की प्यास बढ़ने लगी। मारे प्यास के उनका जीव घबराने लगा। उनकी तो जान पर आ बनी। ऐसा लगा कि कुछ और समय निकल गया, पर पानी नहीं मिला तो श्वासें रुक जायेंगी। ठिकाना नहीं इन श्वासों का। चलते-चलते जाने कब रुक जायें? लगा कि जैसे प्राण-पखेरू उड़ना चाहते हैं तभी कोई व्यक्ति आकर कहता है– ''मेरे पास पानी है। मैं तुम्हें पानी पिला सकता हूँ, पर बदले में तुम्हें अपनी सारी सम्पत्ति मुझे देनी होगी।'' करना क्या चाहिए सेठ को? सम्पत्ति अधिक मूल्यवान या पानी? इस समय तो पानी ही अधिक मूल्यवान है। पानी है तो प्राण हैं। प्राण रहे तो कितनी ही सम्पत्ति और अर्जित करना संभव है। अतः सेठ अपने प्राणों की रक्षा के लिए अपनी सारी सम्पत्ति देने के लिए तैयार हो जायेगा। बात सेठ की चल रही है, पर सेठ की जगह यदि कोई राजा हो तो ऐसी दशा आने पर पानी के लिए अपना समस्त राज्य भी उसे दे देगा। यहाँ सवाल है प्राणों की रक्षा का, अपना जीवन बचाने का। जब सवाल जीवन का हो, प्राण-रक्षा का हो तो एक लोटे पानी में भी पूरे जीवन की खुशियों का समावेश हो जाता है। ऐसे समय में तो पीने को पानी चाहिए, बदले में राज-पाट या सम्पत्ति कुछ भी जाये तो भले ही जाये।

पानी जहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाता है, वहाँ पानी की कीमत कौन आँकता है। जब तक जान पर बनी नहीं है, तब तक भोजन, पानी, वायु या अन्य कुछ भी हो, उनकी कीमत प्राणी नहीं समझ पाता। जब जान पर बन

आती है तो एक लोटे पानी में खुशियों का सागर नज़र आने लगता है। प्यासे को कह दे कोई कि पानी तो नहीं है यहाँ पर। मेरे पास तो कीमती हीरे हैं, मूल्यवान माणक-मोती हैं। तुम चाहो तो मैं तुम्हें ये सब दे सकता हूँ। जितना तुम चाहो ले लो। जितना तुम ले जा सकते हो, ले जाओ। पर प्यास से जिसके प्राण निकले जा रहे हैं, उसे उस समय पानी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं सुहायेगा। प्यासे के लिए पानी में खुशी है, भूखे के लिए भोजन में खुशी है। उसके आगे आपसे कहूँ-'जो भवसागर में डूब रहे हैं उनके लिए अहिंसा- दया जहाज के तुल्य है, नौका के समान है।'

अहिंसा और दया, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। जहाँ दया है, वहाँ अहिंसा अवश्यमेव है और जहाँ दया नहीं वहाँ अहिंसा भी नहीं हो सकती। दया का महत्त्व आध्यात्मिक क्षेत्र में अहिंसा से कम नहीं आंका जाना चाहिये। आप कहते भी हैं-

दया सुखां री बेलड़ी, दया सुखां री खान।
अनन्त जीव मुगते गया, दया तणो फल जान।।

अनंत-सुखों का मूल दया है, दया ही सुखों की खान है। दया के परिणामस्वरूप ही अब तक अनन्त-अनन्त जीव अपने सर्व कर्मबंधन काटकर, जन्म-मरण के अनन्त चक्र को सदैव के लिए नष्ट कर मोक्ष की प्राप्ति कर चुके हैं। हिंसा नरक का कारण है। **'अनन्त जीव नरके गया हिंसा तणो फल जान'।** जबकि दया मुक्ति का कारण है-**'अनन्त जीव मुगते गया दया तणो फल जान।'** इस कथन से स्पष्ट है कि दया ही अहिंसा है और अहिंसा ही दया है। दया सम्यग्दर्शन की दात्री है, दया महाव्रती-जीवन में प्रवेश दिलाने वाली है, दया कर्म-बंधनों को तोड़ने वाली है। जीव ने जितना सत्य गुण, ब्रह्मचर्य गुण, अपरिग्रह गुण या अन्य किसी भी गुण द्वारा धर्म ग्रहण कर जीवन का विकास किया है तो उसमें कहीं न कहीं दया का हाथ अवश्य है। दया के आधार से जीव आध्यात्मिक विकास करता हुआ भवसागर से तिर जाता है। अतः दया को धर्म का मूल बताया है। आध्यात्मिक विकास की पहली सीढ़ी दया ही है। यह दया माता ही तो भगवती अहिंसा है, जो यदि घट में विराजमान है तो एक धर्मशील सर्वप्रकारेण धर्म कर सकता है। संत कवि माधवमुनि ने कहा है-

दया पालो बुधजन प्राणी, स्वर्ग अपवर्ग सौख्यदानी,
चाहो जो भवदधि से तरना तो, प्रतिदिन दया धर्म करना।
यही दया मुनि माधव की शिक्षा, करो सब जीवन की रक्षा।।

आप लोग यहाँ, हम संतों के पास आते हैं। हम संतों के पास आप सभी को देने के लिए एक सन्देश है- "दया पालो।" आप यहाँ आते हैं तब भी हमारे मुँह से यहीं सुनेंगे-'दया पालो।' आप जाते हैं यहाँ से तब भी हम संत यही कहेंगे-'दया पालो।' ये दो शब्द ही हैं, जो आपके लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। दया से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संभव हो जाती है, एक दया से महाव्रतों में प्रवेश मिल जाता है और वही दया कर्म-बंधनों का नाश कराने की क्षमता प्रदान करती है। दया के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है-

दयामूलो भवेद्धर्मो, दया प्राण्यनुकम्पनम्।
दयायाः परिरक्षार्थं गुणा शेषाः प्रकीर्तिता।।

अर्थात् धर्म का मूल दया है। दया का अर्थ है प्राणियों पर अनुकम्पा का भाव रखना। सत्य, क्षमा आदि जितने भी सद्धर्म संबंधी गुण हैं, वे दया की रक्षा के लिये हैं।

जिनके अन्तर में करुणा, अनुकम्पा, दया की भावना का विस्तार है, वे अहिंसा की दिशा में कर्तव्य भावना से कुछ न कुछ कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति ऐसे मिल जायेंगे जो कैसी भी परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी अपनी ओर से

हिंसा नहीं करते। दशवैकालिक-सूत्र के छठे अध्ययन की नौवीं गाथा में कहा है- ''अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो।'' अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति स्वयं को संयत रखना, यही अहिंसा का पूर्ण दर्शन है।

जिनेश्वर का धर्म संयम एवं मर्यादा का धर्म है। यही कारण है कि व्यक्ति ज्यों-ज्यों धर्म-मार्ग में आगे बढ़ता है, वह सांसारिक कर्म से अपने आपको मर्यादित करता हुआ हिंसा से बचने के लिए पूर्ण प्रयत्नशील बनने की दिशा में बढ़ता रहता है। शास्त्र कहते हैं कि-''नहीं मारना'' -यह निषेधात्मक रूप है अहिंसा का और 'मरते हुए को बचाना' यह सकारात्मक रूप है। इससे ही कहा गया- 'अहिंसा परमो धर्मः' तथा 'दया धर्म का मूल।'

वर्तमान समय में दया की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। न जाने कितने-कितने और कैसे-कैसे तरीकों से आज हिंसाएँ की जा रही हैं। थोड़े-से ऐन्द्रियक विषय-वासना सम्बन्धी सुख की प्राप्ति के लिए आज का आम आदमी न जाने क्यों विश्व के वन्य एवं अन्य प्राणियों को मारते हुए जरा भी नहीं हिचकिचाता, एक क्षण के लिए भी हिंसा के विषय में नहीं सोचता। चिकित्सा-सम्बन्धी शिक्षा के क्षेत्र में, दवाओं के निर्माण के क्षेत्र में, प्रसाधन-सामग्री में, फैशन व प्रदर्शन के लिए, जिह्वा के स्वाद के लिए तथा और भी जाने किन-किन कारणों से आज का मानव प्रतिदिन लाखों पशु-पक्षियों की हत्या कर निर्दयतापूर्वक उनके खून से अपने हाथ रंग रहा है। एक पत्रिका है-'हिंसा-विरोध'। उसमें पढ़ा था कि मात्र परीक्षणों के लिए प्रतिमाह लाखों निरीह-मूक पशुओं का वध कर दिया जाता है।

वस्तुओं के प्रति आसक्ति ने कितनी ही बार धरती को मानव के खून से रंगा है। हार और हाथी की आसक्ति के कारण हुए युद्ध में एक करोड़ अस्सी लाख सैनिक मारे गये थे और हाथ क्या लगा? दो विशाल राज्यों की सेनाओं को युद्ध करना पड़ा, पर पाया क्या? कुछ भी तो नहीं। मारवाड़ में कहावत है- 'हाथ भी जले और होले भी न सिके।' होली तक गेहूं की फसल कट जाती है। अनेक परिवार होली के जलने पर उसकी आग में गेंहू की बालियाँ सेकते हैं, जिन्हें होले कहा जाता है। प्रथा है यह। पर कई बार होले तो सिकते नहीं, हाथ आग में जल जाते हैं। इस युद्ध में भी यही हुआ। हाथी तो आग में कूदकर जल गया और हार को देवता ले गए।

मगधाधिपति राजा श्रेणिक और महारानी चेलना का पुत्र कूणिक जब बड़ा हुआ तो उसने षड्यंत्र कर अपने पिता श्रेणिक को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया। वह स्वयं मगध का अधिपति बन गया। यह कार्य उसने अपने अन्य दस भाइयों के सहयोग से किया। राजा श्रेणिक ने बंदी होने से पूर्व अपने पुत्र हल्ल एवं विहल्ल को सेचनक हाथी और देवनामी (देवप्रदत्त) हार दिया था। कूणिक के राजा बन जाने पर उसकी रानी पद्मावती ने उस हार और हाथी को हथियाना चाहा। इसके लिए उसने कूणिक से हठ किया। पहले तो कूणिक ने मना कर दिया, पर त्रियाहठ के सामने वह टिक न सका। रानी की मांग पर उसने हल्ल-विहल्ल कुमार के पास कहलवाया कि वे हार और हाथी सुपुर्द कर दें। हल्ल-विहल्ल ने कहला दिया कि हार और हाथी चाहते हैं तो अपना आधा राज्य दे दें।

कूणिक के हाथ में सत्ता थी, सेना थी। वह आधा राज्य क्यों देता। उसने जबरदस्ती हार व हाथी छीनने का विचार कर लिया। इधर हल्ल-विहल्ल ने सोचा कि अब यहाँ रहना ठीक नहीं होगा। अपने ऊपर कूणिक द्वारा बल प्रयोग की आशंका को भांपते हुए अपने परिवार सहित नाना चेटक की शरण में वे वैशाली आ गये।

मगध नरेश कूणिक को जब यह पता लगा तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने अपने नाना राजा चेटक के दरबार में राजदूत भेजकर कहलवाया कि हल्ल और विहल्ल उसके राज्य के भगोड़े हैं, अतः उन्हें और हार व हाथी के साथ तुरन्त मगध के सुपुर्द करें।

राजा चेटक न्यायप्रिय था। उसने कहलवाया कि हल्ल और विहल्ल ने यहाँ शरण ली है। वैशाली की परम्परा के अनुसार शरणागत की रक्षा यहाँ का कर्त्तव्य है। मगध चाहे तो आधा राज्य उन्हें देकर उनसे संधि कर

सकता है।

चेटक के इस कथन ने कूणिक के क्रोध को और बढ़ा दिया। उसने अपने दस ही भाइयों व उनकी सेना तथा मगध की विशाल सेना को लेकर वैशाली की ओर कूच कर दिया। चेटक राजा ने सुना तो वे भी नौ मल्ली तथा नौ लिच्छवी राजाओं की सेनाओं के साथ कूणिक की सेना के सामने आ डटे। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। दस दिन तक युद्ध चला। कूणिक के एक-एक कर दस ही भाई मौत के मुँह में चले गये। युद्ध में एक करोड़ अस्सी लाख सैनिकों का रक्त बहा। भयंकर हिंसा! कारण क्या? हार और हाथी में आसक्ति! चीजें छोटी पर आसक्ति के इस रूप को क्या कहें? अनन्त काल से आसक्ति ने युद्धों को जन्म दिया है और हिंसा का भयंकर खेल रचा है। युद्ध के तीन ही कारण रहे हैं और आज भी हैं- धन, सुन्दर नारी और जमीन। दूसरे शब्दों में कहें तो 'जर, जोरू और जमीं'। किसी भी जाति, समाज या राज्य का इतिहास उठाकर देख लें, सर्वत्र इन्हीं तीन कारणों से भयंकर युद्धों का, महाभयानक हिंसा का विवरण मिलता है। आसक्ति, अहंकार और सत्ता के लिए कितने-कितने भयंकर युद्ध हुए हैं? ऐसा भी नहीं कि राज्य व सत्ता के लिए युद्ध करने वालों के पास सत्ता की कोई कमी हो अथवा रानियों या सुन्दर राजकुमारियों के लिए युद्ध में लाखों सैनिकों के प्राण होम कर देने वाले हिंसक राजाओं के राजमहलों में रानियाँ नहीं थी। हजारों रानियाँ और विशाल राज्य के राज्याधीशों ने भी 'अभी और चाहिए' की कामना में हिंसा का ताण्डव किया है। यह आसक्ति ही हिंसा की, युद्धों की जड़ है।

आज मांसाहारियों के लिए अपेक्षित मांस की उपलब्धता बनाये रखने हेतु करोड़ों पशुओं का कत्ल किया जा रहा है। विश्व के अनेक राष्ट्रों में, भारतवर्ष में भी वैज्ञानिक ढंग से मशीनों से त्वरित गति से पशुओं का कत्ल करने वाले आधुनिक कत्लखाने दिन-ब-दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। जो इन कत्लखानों को चला रहे हैं, वे कैसे वहाँ तक पशुओं को ले जाते हैं, कैसे उन्हें वहाँ रखा जाता है और फिर उनको कैसे वहाँ कत्ल किया जाता है? यह सब इतना दर्दनाक होता है कि देख, सुनकर रोंगटे खड़े हो जाना सहज बात है।

श्रावक जीवन की आराधना के लिए आवश्यकता है कि अनर्थ के पाप कार्यों से बचा जाए। जीवन की आवश्यकतापूर्ति में एक-एक कदम सोच-विचारकर, विवेक के साथ, फूंक-फूंक कर रखे जाने की आवश्यकता है। एक कैमरा होता है। कैमरे का काम है, सामने जैसा आए उसे हूबहू वैसा ही अपने में कैद कर ले, चित्रित कर ले। जिस क्षण का फोटो लिया जाता है, उस क्षण के हावभाव उसमें वैसे ही आ जाते हैं। जिन क्षणों में आप जैसा सोच रहे हैं, वैसा ही लेखा-जोखा आपका भी हो रहा है। आगे-पीछे आपको उसे भोगना ही पड़ेगा। इसीलिए शास्त्र कहता है कि यदि तुमने सम्यग्दर्शन को जाना है, आत्मा और परमात्मा का स्वरूप समझा है तो निरर्थक हिंसाओं का त्याग कर दो।

धर्म के नाम पर कितनी-कितनी हिंसाएँ हो रही हैं, कितना मिथ्यात्व पनप रहा है, कितनी बलियाँ चढ़ाई जा रही हैं। किन-किन जगहों पर कैसे-कैसे रिवाज, कैसी-कैसी परम्पराएँ, कैसी-कैसी कुप्रथाएँ हैं। इन्हें कभी बंद करने की बात कही जाए तो लोग कहते हैं कि यह सब परिवार, समाज, संसार का व्यवहार है। कुछ लोग कहते हैं कि हम तो करते नहीं, मात्र देखने जाते हैं। बिचारा निरीह पशु मारा जा रहा है, मारकर बलि चढ़ाई जा रही है और आप लोग देख रहे हैं। क्या है यह? तमाशा है क्या आपके लिए? इस तरह हिंसा में रस लेना और समर्थन करना भी भयंकर पाप है। दया यदि दिल में है तो इस तरह की हिंसा देखी नहीं जा सकती। आचारांग-सूत्र में प्रभु फरमाते हैं-

जेवऽन्ने एएहि काएहिं दंडं समारंभंति।
तेंसि पि.... वयं ....लल्जामो।।

-आचारांगसूत्र, 1.8.1

अर्थात् यदि कोई अन्य व्यक्ति भी धर्म के नाम पर जीवों की हिंसा करते हैं तो हम इससे भी लज्जानुभूति करते हैं।

'झूठ नहीं बोलना' धर्म है तो क्या सच बोलना धर्म नहीं है? झूठ नहीं बोलने में धर्म है तो सत्य बोलना उससे बड़ा धर्म है। इसी प्रकार नहीं मारना धर्म है, अहिंसा है तो जो मरते हुए को बचाना भी धर्म है। साधु तीन करण तीन योग से हिंसा के त्यागी होते हैं, अतः साधु के लिए कुछ मर्यादाएँ होती हैं। पर श्रावकों को जीवरक्षा की विशेष छूट है। कुछ लोग जब जीवों को बचाने का अवसर आता है तो वहाँ से खिसक जाते हैं। क्या यह मानवता है? क्या इससे मानवीय गुणों का ह्रास नहीं हो रहा? वस्तुतः यह मानवता और सहृदयता का ह्रास है। शास्त्र कह रहे हैं कि-''मानव! इन प्राणों की बहुत बड़ी कीमत है। अतः प्राणियों को मारना नहीं चाहिए और साथ ही मरते हुओं को बचाना भी चाहिए। श्रावक-धर्म के पालन करने वाले कम से कम अनर्थ हिंसा से तो अपना बचाव करें ही, साथ ही जीव-रक्षा का भी विवेक रखें, क्योंकि जीवों की रक्षा करना भी धर्म है। यह दया धर्म है जो भवसागर से पार उतारने वाला है। यदि ऐसा नहीं होता तो भगवान महावीर इसे पाप कह देते। परन्तु भगवान ने तो अन्न देना, पानी देना आदि को पुण्य बताया है। मैं मूल दृष्टि को लेकर कह रहा हूँ कि प्राणों की बहुत बड़ी कीमत है। अहिंसा बहुत बड़ा धर्म है। इसके सहारे अन्य सब धर्म टिके हुए हैं। अतः कहा गया कि इस अहिंसा धर्म की रक्षा करो। कहा गया है-

सव्वओ वि नईओ कमेण जह सायरम्मि निवडंति।
तह भगवइ-अहिंसाए सव्वेधम्मा सम्मिलंति।।

तात्पर्य यह है कि जैसे सभी नदियाँ क्रमशः समुद्र में विलीन हो जाती हैं, वैसे ही सारे ही धर्म अहिंसा में समा जाते हैं। दशवैकालिक सूत्र में भगवान ने फरमाया है-''**सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं, न मरिज्जिउं।**'' समस्त प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। आचारांग में भी कहा गया है-''**सव्वेसिं जीवियं पियं, नाइवाएज्ज कंचणं।**'' कुछ भी हो, सबको जीवन प्रिय है, अतः किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो।

जैसे आपको अपने प्राण प्रिय हैं, उसी प्रकार सभी जीवों को जीवन सुहाता है, प्राण अच्छे लगते हैं, जीना प्रियकर लगता है। मरना कोई पसन्द नहीं करता। सुख सभी जीव चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। ''**सुहसाया दुक्खपडिकूला।**'' इसलिए प्रयत्न यह किया जाना चाहिए कि आपके द्वारा किसी को दुःख नहीं मिले, पीड़ा की प्राप्ति न हो, अपितु आप सभी को सुख दें, आपसे सभी को सुख की प्राप्ति हो। पीड़ित की पीड़ा को दूर करें। रोगी की सेवा-शुश्रूषा, औषधदान आदि से उसे स्वस्थ एवं प्रसन्न बनाएं। कोई भूखा है तो उसकी भूख मिटाने के लिए भोजनादि से उसकी वेदना समाप्त करें। पर यदि इन अवस्थाओं में कोई यह कहता है कि हम क्या करें? उनके भाग्य में ऐसा ही लिखा है, क्या किया जा सकता है? संसार में कई दुःख पाते हैं और कई मरते हैं, किस-किस की पीड़ा मिटाएँ, किस-किस की रक्षा करें? यह सूत्र भगवान महावीर का नहीं है। मरते हुए प्राणी को बचाने, पीड़ित की पीड़ा मिटाने, दुःखी को सुखी बनाने का प्रयास करना ही चाहिए।

आज पारिवारिक जीवन में आपस में प्रेम की कमी से भी अहिंसा का सही स्वरूप हमारे सामने नहीं आ रहा है। परिवार और समाज में प्राणी-रक्षा की भावना जागृत की जानी चाहिए। परिवार के सदस्यों में श्रद्धा का जागरण करके, उन्हें विपरीत आचरण से हटाकर व्रत व मर्यादा के रास्ते पर लगाकर और जीवों का रक्षण करते हुए चलेंगे तो दया की आराधना होगी। यह आराधना ही एक दिन कर्म-बंधनों को काटकर जीव को सिद्ध, बुद्ध व मुक्त बनाएगी। ■

जैनी की पहचान

महासती श्री मुदितप्रभा जी

सामान्य तौर पर हम यह मानते हैं कि जो जैन कुल में पैदा होता है वह जैनी है, परन्तु डॉक्टर के घर में जन्म लेने वाला डॉक्टर नहीं, वकील के घर में जन्म लेने वाला वकील नहीं तो जैनी के घर में जन्म लेने वाला जैनी कैसे? जैनी वह होता है जिसके पास ज्ञान एवं क्रिया रूपी दो आँखें होती हैं। जो सम्यक् दृष्टि होता है, जिन भगवान् का उपासक होता है, सुदेव, सुगुरु, सुदेव पर दृढ़ आस्था रखता है, सदाचारी होता है, सबके प्रति हितैषी होता है, शुद्ध शाकाहारी होता है। सिद्धान्त एवं व्यवहार से जैन बनने के लिये कुछ बातें आवश्यक हैं- 1. सप्तव्यसन का त्यागी हो, 2. सदाचारी एवं संस्कारी हो, 3. प्रत्येक प्रवृत्ति में करुणा भाव हो, 4. कथनी और करनी एक समान हो।

1. सप्त कुव्यसन से दूरी बनाकर चले- जैनी को जुआ, हिंसा (शिकार), चोरी, परस्त्रीगमन, वेश्यागमन, मांस-मद्यपान का त्यागी, शुद्ध शाकाहारी होना चाहिए।
2. सदाचारी एवं संस्कारी हो- जैनी के जीवन में एक भी क्रिया ऐसी नहीं होनी चाहिये जो धर्म के विपरीत हो। जैसे- क्रोध आने पर विवेक खोकर मार देना, लोभ इतना कि अपने स्वार्थ के लिए किसी के जीवन की परवाह न करना, दूसरों को तुच्छ समझना आदि। उसकी गतिविधियों से ऐसा लगना चाहिये कि वह सच्चा जैनी है। प्रामाणिक जीवन जीने के लिये कार्य-व्यवहार, चाल-चलन में संस्कारों की महक दिखायी देनी चाहिए।

   आज जैन धर्म के सिद्धान्तों को भले ही ज्यादा रुचि से नहीं पढ़ा जा रहा है, परन्तु जैन सिद्धान्त पर लिखी पुस्तकों की हजारों प्रतियाँ विदेशों में बिक रही हैं। विदेशी लोगों का 'आगम' के प्रति रुझान बढ़ा है। वे जिज्ञासा कर रहे हैं, कि जो बातें आगम में हजारों वर्ष पूर्व लिखी जा चुकी हैं, वे आज फलीभूत हो रही हैं, लेकिन हमें अपने आगम की बात पर विश्वास नहीं है।
3. जैनी की प्रत्येक प्रवृत्ति में करुणा की झलक मिलती है। बचपन से ही ऐसे संस्कार मिलते हैं, जिनमें चीटीं जैसे सूक्ष्म जीव के प्रति भी दया भाव रहता है। हम भाग्यशाली हैं कि 'करुणा' का गुण हमें विरासत में ही मिला हुआ है।
4. कथनी-करनी में एकरूपता जैनी की पहचान है। धार्मिक सभाओं में त्याग-वैराग्य की बात करें, न्यायनीति से जीवनयापन करने की बात करें, पर यहाँ से जाने के बाद अपने व्यवहार में, व्यवसाय में, माया-कपट-झूठ का, भ्रष्टाचार का सहारा लेकर धन कमाएं, वासना में अंधे हो जाएं, यह जैन धर्म को कलंकित करने वाला है, इसलिए जैनी वही है जो अपनी कथनी एवं करनी में एकरूपता रखे।

शील की सुरक्षा करने वाले सदाचारी को बहुत महत्त्व दिया गया है, पर जो जवानी का गुलाम होकर अपना जीवन ही बर्बाद कर दे वह किसी भी दृष्टि से जैनी नहीं हो सकता। मर्यादित जीवन जीने वाला जैनी है। जैनी में-

"सदाचार एवं संस्कारों की महक हो
निर्व्यसनता एवं परोपकार की चमक हो
आध्यात्मिकता की जीवन में दमक हो।।"

आप सच्चे जैनी बनें। सीखे हुए ज्ञान का अर्थ समझ कर श्रावकाचार का पालन करने के लिये तैयार रहें।

(1 अगस्त 2011 को सवाईमाधोपुर चातुर्मास में फरमाए गए प्रवचन से मंत्री श्री पारसचन्द जी जैन द्वारा संकलित विचार)

मैला पानी : एक समस्या

संकलन : पी. शिखरमल सुराणा

1. शासन के हर स्तर पर ज्यादातर पैसा और साधन पानी की आपूर्ति में खर्च होता है, मैले पानी को साफ करने में नहीं। जितनी पानी की आपूर्ति बढ़ती है उतना ही मैला पानी भी बढ़ता है, क्योंकि जितना भी पानी किसी शहर में इस्तेमाल होता है उसका 80 फीसदी सीवर की नाली में पहुँचता है।
2. अनुभवी कहते हैं कि पानी मुहैय्या कराने में मुनाफा भी है और व्यापार के अवसर भी। हमारे घरों में पानी साफ करने की मशीनों और बोतलबंद पानी की बिक्री बेतहाशा बढ़ी है। बोतलबंद पानी के बाजार का मूल्य 10,000 करोड़ रुपये से ज्यादा आंका जा रहा है। पीने का पानी साफ करने वाली महंगी मशीनें बेचने वाली एक कंपनी ने इस बाजार का मूल्य सन् 2013 में 3,200 करोड़ रुपये बताया था। ये बाजार दो साल में दोगुना हो जाता है और पूरी तरह अनियमित है।
3. पानी साफ करने की मशीनों के लिए कोई मानक तय नहीं हैं। हर कंपनी मनमानी करने के लिए आजाद है। जितना ज्यादा पानी इस्तेमाल होता है, उतना ही ज्यादा मैला पानी सीवर की नालियों में बहता है।
4. मैला पानी साफ करने के लिए ऐसी कोई होड़ नहीं है, जैसी पीने का पानी साफ करने में या बेचने में है। जब तक पानी और मैला पानी एक ही तराजू में तुलेंगे, शुचिता का पलड़ा हल्का रहेगा। इससे सेहत, पर्यावरण और जेब को जो नुकसान होता है, वह अदृश्य रहता है।
5. इस आधुनिक युग में हमने बहुत ऊँची इमारतें बना ली हैं, बड़ी-बड़ी नदियों को बाँध लिया है और अंतरिक्ष से ले कर सागर तक की गहराई नाप ली है। परिणामों की चिंता करना जीवन का स्वभाव नहीं है। प्राणी केवल अपने लिए अवसर तलाशते हैं।
6. घनी आबादी वाले शहरों में मनुष्य के सिवा दूसरे प्राणियों के रहने की जगह नहीं बचती। इसलिए घनी बस्ती से निकले मल-मूत्र का प्राकृतिक संस्कार नहीं हो पाता है। मैले पानी को नदियों और तालाबों में डाल दिया जाता है।
7. आधुनिक शहर जल स्रोतों से पानी निकालते हैं और मैला पानी उनमें वापस डाल देते हैं। यह तभी होता है, जब सभी शौचालय सीवर की नालियों से जुड़े हों।
8. दुनिया के एक हिस्से में लश कमोड का मैला पानी किसी पक्के या कच्चे गड्ढे में डाल दिया जाता है। जमीन के नीचे किसी अंधे कुएँ में जाकर उसकी उर्वरता तो बेकार हो ही जाती है, भूजल भी दूषित होता है। यह प्रदूषण दिखता नहीं है। जो अदृश्य हो, उसकी चिन्ता भी कम ही होती है।
9. सीवर के मैले पानी से होने वाला जल प्रदूषण आमतौर पर आँखों से दूर रहता है। जो दिखाई देता है वह है सड़कों और खुले इलाकों के आसपास पड़ा मल, यहाँ-वहाँ खुले में मलत्याग करने बैठे लोग।
10. पिछले कुछ सालों से केंद्र सरकार भरसक कोशिश कर रही है कि पूरे देश में खुले में मलत्याग बंद हो। हमारी सरकारों का ध्यान खुले में मलत्याग रोकने के लिए शौचालय बनाने में ज्यादा है, उन शौचालयों से होने वाले जल प्रदूषण की ओर एकदम नहीं है। **(सोपान जोशी कृत 'जल,थल,मल' पुस्तक से साभार)**

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

अपरिग्रही जैन जीवन शैली*

डॉ. सुषमा सिंघवी

जैन जीवन शैली से सामाजिक कल्याण और पर्यावरण-पारिस्थितिकी कल्याण भी होता है, साथ ही आध्यात्मिक उन्नति होती है। जैन जीवन शैली प्राकृतिक जीवन शैली है। प्रकृति हर वस्तु से निस्पृह है, न किसी पर घृणा, न किसी से मोह। वृक्ष सबको फल देता है चाहे कोई पत्थर मारे, चाहे उसको जल पिलाए। वैसे ही पानी सब पर बरसता है, हवा सबको छूती है। वैसे ही जैनी प्रकृति सम राग और द्वेष से निर्लिप्त, निस्पृह होता है। भीतर की तृप्ति, निष्कामता और पूर्णकामता के भाव से बाह्य निस्पृहता फलित होती है, और पदार्थों के प्रति आसक्ति नहीं होने से उनके संग्रह का प्रयत्न भी नहीं होता।

अपरिग्रही जैन जीवन शैली गरीबी और शोषण के निवारण में समाज की मदद करती है। अनासक्ति औपचारिक रूप से भी लाभदायक है, क्योंकि इससे हमारे भीतरी शत्रु क्रोध-मान-माया-लोभ से जुड़ाव छूटता है। सीमित सम्पत्ति रखने से लोगों के साथ रिश्ते भी सुदृढ़ होते हैं। अत्यधिक इच्छाएँ और दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों से जुड़ी मांगें बढ़ने से संग्रह का लगाव बढ़ता है तथा पदार्थों और व्यक्तियों पर स्वामित्व और शासन की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे जीवनी-शक्ति का दुरुपयोग होता है और सामाजिक वातावरण दूषित होता है।

प्रकृति में परिवर्तनचक्र सार्वभौम है- 'उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्' (तत्त्वार्थ सूत्र, 5.29)। एक क्षण के लिये भी कोई वस्तु बिना परिवर्तन के नहीं रहती। हम द्रव्य रूप से सदा स्व अस्तित्व में नित्य रहते हैं, भले ही सदा परिणमनशील हैं, कभी भी अपरिणामी नहीं रहते, इसलिये बाह्य पर्याय रूप से नष्ट होते रहते हैं या बदलते रहते हैं। इसलिये किसी वस्तु को पकड़े रखना या उसका स्वामित्व होना या संग्रह-परिग्रह करना ये सभी विचार हमारे मानसिक स्तर पर उपजे भ्रम, मेरापन का अहंकार हैं। वास्तविक रूप से व्यक्ति न तो वस्तु का स्वामी हो सकता है न किसी का शासक हो सकता है। इसलिये अन्तःपरिग्रह और बाह्य परिग्रह क्षेत्रों के सीमाकरण की यह अपरिग्रही जैन जीवन शैली सामाजिक कल्याण का आधार है।

जैन जीवन शैली के अनुसार 'इच्छाविहीनता के सिद्धान्त' की पुष्टि होती है। गृहस्थ के द्वादश अणुव्रतों में 'परिग्रह परिमाण व्रत' तथा 'उपभोगपरिभोग परिमाण' या इच्छा परिमाणता का तात्पर्य इस सिद्धान्त में परिनिष्ठित है कि वास्तविक सुख इच्छाओं की अधिकता में नहीं वरन् उनके अल्पीकरण में है, क्योंकि इच्छाओं की पूर्ति संभव नहीं है। प्रोफेसर जे.के. मेहता ने अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए लिखा कि अर्थशास्त्र उन मानवीय व्यवहारों का अध्ययन करता है जो आवश्यकता अथवा इच्छाविहीनता की स्थिति को प्राप्त करने के लिए किए जाते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य उस समय अधिकतम संतुष्टि अथवा सुख प्राप्त कर सकता है जब एक ओर तो वह संसाधनों का उपयोग सीमान्त उपयोगिता के आधार पर करे तथा दूसरी ओर वह आवश्यकताविहीनता अथवा इच्छाविहीनता की स्थिति में पहुँचने का प्रयास करे। उनके अनुसार मानवीय व्यवहारों का उद्देश्य साम्यावस्था को प्राप्त करना है। मनुष्य को यह अनुभव हो कि इच्छाविहीनता वह लक्ष्य है जिसे सभी को प्राप्त करना है, तो यही जैन जीवन शैली है। इच्छाविहीनता न खाने, न पीने, न कमाने में नहीं है, अपितु अपनी भोगवृत्ति के त्याग में है। न्यूनतम आवश्यकताओं

*आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 6-7 अक्टूबर 2012 को जयपुर में आयोजित 'जैन जीवन-शैली' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

से ही अधिकतम सन्तुष्टि संभव है और जब इच्छा शेष ही नहीं रहे तब सुख की प्राप्ति होती है।(जे.के. मेहताः अ फिलोसोफिकल इण्टरप्रिटेशन ऑफ इकॉनॉमिक्स, लंदन, 1962, पृष्ठ-28) यह अपरिग्रही जैन जीवन शैली पाश्चात्त्य अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्त के विरोध स्वरूप अपरिग्रह सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है।

संसार में सुख प्राप्ति का एक तरीका संसाधनों के प्रयोग के सम्बन्ध में व्याख्या करता है। मानवीय मस्तिष्क शरीर के माध्यम से प्रतिक्रिया करता है। जब मस्तिष्क, इच्छाओं की पूर्ति हेतु चयन के असमंजस के कारण, असाम्यावस्था में होता है तब शरीर में कुछ परिवर्तन होते हैं और परिवर्तन संसाधनों के प्रयोग में परिवर्तित हो जाते हैं। सुख प्राप्ति का दूसरा तरीका व्यक्ति के स्वयं के परिवर्तन से सम्बन्धित है, जिसमें मस्तिष्क किसी भी स्थिति में परिस्थिति या पयार्वरण से अप्रभावित रहता है और बाहरी शक्तियों के प्रति किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं करता, पूर्ण साम्यावस्था में रहता है। पाश्चात्त्य धारणा से प्रभावित अर्थशास्त्री सामान्यतः प्रथम उपाय को ही एक नियम के रूप में स्वीकारते हैं, किन्तु प्रो. जे.के.मेहता संसाधनों से अल्पकालीन साम्यावस्था होने को भी नहीं स्वीकारते, क्योंकि कोई भी प्रयत्न जो वर्तमान आवश्यकता की सन्तुष्टि के लिए किया जाता है वह किसी नयी आवश्यकता को जन्म देता है, जैसे- भूख शान्त करने के लिये कुछ कार्य किया जाता है तो इससे विश्राम करने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। अतः बाह्य दशाओं को परिवर्तित करके सुख की प्राप्ति नहीं की जा सकती। इसके लिये मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पड़ती है।

अपरिग्रही जीवन शैली के प्रशिक्षण हेतु सर्वप्रथम उन आवश्यकताओं को त्याग देना चाहिये जिनकी सम्पूर्ति करने में व्यक्ति असमर्थ है। तत्पश्चात् केवल वे ही आवश्यकताएँ शेष रह जाएँगी जिनकी सम्पूर्ति करने में व्यक्ति सक्षम है। दूसरा तरीका यह है कि आवश्यकताओं को संसाधनों की सीमा तक घटाया जाना चाहिये। जब यह प्रयास आवश्यकताविहीनता की स्थिति तक पहुँचने की दिशा में प्रथम कदम बन जाता है तब अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने के लिये मनुष्य को धीरे-धीरे प्रयास करना चाहिये। जैन जीवन शैली में आवश्यकताविहीनता के लिये ही संवर और निर्जरा तत्त्वों का निरूपण है, जिसे अहिंसा, संयम और तप अथवा अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त की त्रिवेणी से पूर्ण किया जा सकता है।

वर्तमान में हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये संघर्ष ही करते रहते हैं। इस संघर्ष में हम साम-दाम-दण्ड-भेद सभी नीतियों से इच्छापूर्ति करते हैं। इस लड़ाई से इच्छापूर्ति करने में और इच्छापूर्ति से तत्काल मिलने वाले सुख में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हम यह जान ही नहीं पाते कि इच्छाओं के साथ युद्ध करते-करते हम उस इच्छारूपी शत्रु पर विजय पाकर खुश तो हो रहे हैं, पर उससे वह इच्छा शत्रु दुगुने वेग से तैयारी और ताकत के साथ हम पर पुनः हमला करेगा। इस प्रकार हमारा जीवन इच्छाओं से लड़ते-लड़ते ही पूरा हो जाएगा और सुख का स्वाद कभी नहीं मिलेगा। सुख प्राप्त करने का केवल एक ही मार्ग है, और वह है दुःख-दर्द से छुटकारा। इच्छाओं की पूर्ति किसी हालत में स्थायी हल नहीं है, क्योंकि इच्छाएँ तो बार-बार पैदा होती हैं।

इच्छाओं की पूर्ति दुःख के मूल कारण को दूर नहीं करती। दुःख की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति के लिये हमें अपनी इच्छाओं को कम करना होगा, इच्छाओं को जीतना होगा, उन्हें बढ़ावा देना बन्द करना होगा। जब व्यक्ति इच्छाओं को अपना दास बना लेता है, इच्छाओं को जीत लेता है तब वह दुःखों से पूर्णतया मुक्त हो सकता है और तभी सुख प्राप्ति की कोई संभावना बनती है।

-पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर (राज.)

English-Section

The Jaina way of life

Sh. Dulichand Jain

Introduction

We are living in a scientifically and technically advanced world divided into "Developed", "Developing" and the "Under-developed" regions. A keen competition is going on everywhere. Only a few are thriving and prospering whilst a majority of people lead a life of scarcity, want and impoverishment. There is tension, worry and unhappiness in the life of every one. Mr. F.L. Lucas, an English Critic said, "Many a times, after pondering, I am amazed that someday the human civilization would come to an end by man's own intellect and deterioration of self-control in the midst of the tension of the highly artificial civilization."

Role of religion

Under these circumstances we have to examine, how jain religion can play a positive role in mitigating the sufferings of the common people. Jainism is one of the oldest religious traditions of the world. A long generation of *Tīrthankaras, Aacharyas*, saints and scholars belonged to this tradition. Lord Mahaveera was the twenty- fourth *Tīrthankara* of the present era. Mahaveera, born with no supernatural powers, rose by dint of his determination, self-discipline, compassion, forbearance and other qualities of heart to the highest position among men and acquired the status of a *Tirthankara* or omniscient.

Mahaveera and his Teachings

Lord Mahaveera observed rigorous austerities spread over the twelve and a half years till he achieved *Kevala - Jñāna* (Omniscience) which was his aim behind initiation in the ascetic order. He faced many adversities and calamities brought upon by natural and supernatural forces during this period. In the thirteenth year of his ascetic order, he attained infinite knowledge, infinite intuition and infinite bliss. Only after obtaining omniscience, he began to preach and give discourses. He stressed the importance of right faith, right knowledge and right conduct. He stated that a man can rise high only by humility, noble conduct and discipline. He established Chaturvidha sangha (the four-fold congregation) of monks, nuns, laymen and laywomen so as to provide proper guidance to the monks and nuns and to inspire and stimulate the laymen and laywomen in their religious practices. In the *sangha* established by Lord Mahaveera there was no difference between men and women. Both were regarded as equal. The women were also initiated as nuns, which was a great revolutionary step at that time.

Now we have to examine how the teachings of Lord Mahaveera can improve the life of ordinary people and bring peace and prosperity to them. Some critics say that the principles of Jainism are so difficult that they cannot be practiced by ordinary people. This is a fallacy. Teachings of Lord Mahaveera are grouped into two parts. 1. Teachings to *Sramanas* (mendicants) and teachings to householders (Sravakas). *Sramanas* have no doubt to follow very rigorous and extensive restrains because they proceed on the path of *"Sarva-virati"* or total renunciation. Once they take *"pravrajya"* (renunciation), they have to observe the *panch*

mahavratas or the five great vows of total abstinence from violence, untruth, stealing, sexual indulgence and possessions. They proceed on the path of liberation which is the state of infinite counciousness, absolute freedom and external bliss. They devote their whole life to scriptural study, service to the *Guru* and dedicate themselves to preaching. But so far as the householders are concerned, the teachings of Lord Mahaveera are much simpler.

Thirty five Rules of Conduct

Jain Acharyas have described the duties and responsibilities of the laity elaborately. These are called 35 virtues of a *Marganusari* (one who follows the path shown by Jinas). These rules prevent a laity deviating from the spiritual path and prompt him to rise higher. It is the means by which he gets the right attitude of living. Due to these virtues he begins to stop the *Karmic* influx. From the sincere practice of these rules, his soul gets purified. Aacharya Sri Bhuvanbhansoorishwariji has nicely classified these rules into following four groups in his book "A Handbook of Jainology".

I The eleven obligatory duties

II The eight derogations that aught to be discarded

III The eight virtues to be cultivated and

IV The eight endeavours to be carried out with diligence

(I) The eleven obligatory duties :

1. Whatever trade, business or profession a householder follows, he should have lawful earnings. However, his business should not harm any men or animals. So he should not have business of a bucher, selling of wines or gunmaker or anything which involves destruction of life.
2. His expenses should be within the limits of his income.
3. He should dress according to his income but the dress should be decent and not gaudy.
4. The laymen should not marry a person from the same lineage. He should marry a person of different *Gotra* but with similar character, taste, culture and language etc. This will result in harmonious relationship.
5. He should have residence in a good neighbourhood and not in undesirable places where prostitutes and thieves live.
6. He should eat food at the proper time in conformity with his constitution. Excessive eating should be avoided.
7. He should take Satvik food which does not cause passions.
8. He should respect his parents and teachers.
9. He should maintain his dependents and make them work for the well being of the family.
10. He should serve the ascetics who come for *Bhiksa* (food) as well as guests with due respect.
11. He should help the needy and destitudes and fulfill their requirements.

(II) The eight derogations that ought to be discarded:

1. Discarding the habit of humiliating others;
2. Betraying the trust, deceiving and cheating;
3. Discarding the six internal foes viz, anger, pride, greed, attachment and aversion;
4. Gambling, meat-eating and intoxicants;
5. Discarding prejudice;
6. Pursuing the three *Purusharthas* in such a way that they do not harm one another;

7. He should live in a house which is not accessible to thieves and rogues and cannot be entered by undesirable people;
8. Discarding a place where calamities occur.

(III) The eight virtues that should be accepted and practiced

1. He should be always fearless;
2. He should be ashamed of committing an ignoble act;
3. He should always keep his temperament cool, his voice and appearance gentle;
4. He should attain popularity and acquire noble virtues;
5. He should be a far-sighted person;
6. Before endeavouring in any task, he should think about his strength and weaknesses;
7. He must always think what is proper and improper action and act with discrimination;
8. He should adopt good virtues always.

(IV) The eight endeavours:

1. He should express gratitude to all those who help him in his life;
2. He should always help others without any selfish interest;
3. He should always keep company of the noble and admire their virtues;
4. He should develop habit of listening spiritual discourses;
5. He should admire the virtues of noble people so that he can gain material prosperity and spiritual advancement;
6. He should have right attitude in practical life without excitement;
7. He should follow customes and traditions which do not harm Dharma;
8. He should adore the virtuous always.

Practise for higher advancement:

Those who want to rise higher in spiritual life, must follow five *Anuvratas* (primary vows prescribed for a householder which consists of partial observance of non-violence, truthfulness, non-stealing, chastity (to refrain from all illicit sexual relationship) and non-possession. A householder should devote part of his time in *Dāna* (Charity), *Sheela* (Virtuous life), *Tapas* (austerity) and *Bhāvāna* (purification of thoughts).

Non-violence

Non-violence is the sense of equality of all living creatures. If you feel that every soul is independent and autonomous, you will never trample on its right to live. This leads you to compassion and kindness towards all living beings and results in harmony and peace in the world. The principle of non-violence in Jainism embraces not only human beings but also animals, birds, plants, vegetables and creatures of earth, air and water. It is the holy law of compassion extended to body, mind and speech of a living being. Lord Mahaveera Says, "All living beings desire to live. They detest sorrow and death and desire a long and happy life. Hence one should not inflict pain on any creature, nor have any feeling of antipathy or enmity. One should be friendly towards all creatures". (*Aacharanga Sūtra* 1.2.3.4)

The other vows

All the other vows preached in Jainism are only an extension of the vow of non-violence. Truthfulness is essential to keep order and harmony in society. There are moments in life when one has to take hardships to keep up one's convictions. In business and in our day-to-

day dealings our truthfulness is put to test. We have to practice it constantly to maintain our integrity. While observing the vow of non-stealing, one is required to earn his livelihood by honest means. We violate the vow of *Aprigraha* by accepting and holding what is not needed by us. What we possess in surplus has to go to those who need it badly. The principle of *continence* is significant in maintaining the morals in society.

Thus we see that these principles, preached by Lord Mahaveera, are universal in character and are applicable to every individual in any society. These simple rules can be practised without the least philosophical speculation, even by ordinary people.

Integral view of life

Jainism takes an integral view of life. Either faith or only knowledge by itself cannot take us to the path of salvation. We should have a combination of right faith, right knowledge and right conduct to tread the path of salvation. These constitute the three jewels of Jainism. Without right faith, there is no right knowledge and without right knowledge there is no virtuous conduct. Lord Mahaveera says, "By knowledge one understands the nature of substances; by faith one believes in them; by conduct one puts an end to the flow of karmas and by austerity one attains purity". (*Uttaradhayana Sutra, 28.35*)

Concept of Karma

The significant achievement of *Tirthankara* Mahaveera's revolution in spiritual field was the upholding of the concept of *karma* in place of God, the creator. He said that man is the architect of his own destiny and he can rise only by his own efforts and not by the grace of any external agency. God is devoid of attachment, hence there is no need for him to create this universe, which is beginningless and endless.

Every inexplicable event in the life of an individual occurs due to the *Karmas* accumulated in his previous birth. *Karma* is conceived as something essentially material which gets interlinked with soul which is councious. As particles of dust get attached to the body smeared with oil, so does *Karma* with the soul. Lord Mahaveera says, "Attachment and aversion are the root causes of Karma and *Karma* originates from infatuation. *Karma* is the root cause of birth and death and these (birth and death) are said to be the source of misery". (Utta. Su. 32.7) He further adds, "None can escape the effect of their own past *Karmas.*" (Utta. Su. 4.3)

Religion in Day to Day Activities

A householder should lead his life in such a way that he continues religious practices faithfully everyday. There are six essentials which a *Shravaka* (householder) is expected to practice everyday in his life. These are enumerated below:

1. **Sāmāyika :** It is defined as follows : *Sāmāyika* is to be devoid of attachment and aversion and to be indifferent to life and death, gain and loss, fortune and misfortune, friend and foe, joy and sorrowä (*Mūlācāra* 23). A householder should do at least one *sāmāyika* a day for 48 minutes. In this period, he should remain aloof from his domestic and business activities. He should devote his time in self-contemplation, meditation and scriptural study.
2. **Chaturvinshati stava :** Worship of twenty four *Tirthankaras* by reciting their *Stotras* and *Bhajans. Tirthankaras* are free from attachment and aversion and by their worship we try to adhere to atleast some of their virtues in our life.

3. **Vandanā :** A *Shrāvaka* should go everyday to the *Sadhus* (Mendicants) and *Sādhvis* (nuns) and offer his reverential salutation. Association with such holy people results in development of virtues in life.
4. **Pratikramaṇa :** In this, self-contemplation and introspection should be done in the morning and in the evening. He should check up whether he is developing good qualities. If he has committed any mistake he should repent for the same so that such mistakes do not recur.
5. **Kāyotsarga :** This literary means abandonment of body. It is done in a standing or sitting posture of meditation. This helps in keeping the mind under control. It is said, "Just as fire fanned by powerful winds destroys heaps of firewood in no time, so also, the fire of meditation destroys heaps of Karma in no time". *(Dhyāna-Śataka 101).*
6. **Pratyākhayāna :** A *Shrāvaka* should take some vows everyday to purify his life. The aim of life is to realize the distinction between body and soul. The soul is everlasting but the body is perishable. Through *Pratyākhayāna* we develop qualities of self and abandon the negative traits which hamper our spiritual progress.

Jaina Art of Living

Jainism is a living religion. There are numerous monks and nuns and nearly ten million laities continuing the tradition, following virtually the same path prescribed by Jinas. Though the path of monks and nuns is very difficult, the path prescribed for the householders is much simpler. Here the stress is laid on simplicity and nobility. They should lead a life full of virtues and should keep away from six vices. This practice has resulted in harmony and peace in individual and family life. Due to this, even in the modern age Jaina laity practice complete vegetarianism and do not take any intoxicants. They are also socially councious and run a large number of Charitable Institutions for the cause of education, medical benefits and for service to the downtrodden.

-'Sahity-Ratna', Secretary, Research Foundation for Jainology,
C/o. Jain Industrial Corporation, 70, Sembudoss Street, Chennai-600001 (T.N.)

बाल-स्तम्भ [जनवरी-2017] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2017 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'क्या होता है संथारा' के प्रश्नों के उत्तर 17 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	रजत जैन-जयपुर (राज.)	28.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)	27.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ट कोठारी-अजमेर(राज.)	27
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	26
	कुणाल गड़गतिया-जयपुर (राज.)	26
	मंगलम हींगड़-जयपुर (राज.)	25.5
	आयुषी जैन-जयपुर (राज.)	25
	अंशुल कचोलिया-बैंगलुरु (कर्नाटक)	25

सामाजिक विकृतियाँ और जैन जीवन पद्धति

प्रो. भागचन्द्र जैन

व्यक्ति और समाज परस्पर अनुस्यूत हैं। उन्हें पृथक्-पृथक् नहीं किया जा सकता। जैनधर्म की दृष्टि से व्यक्ति से समाज की रचना होती है, समाज उससे प्रभावित होता है। समाज से व्यक्ति भी प्रभावित होता है पर उतना नहीं। धर्म का अनुपालन व्यक्तिपरक होता है और समाज उसकी अभिव्यक्ति के लिए प्रांगण देता है।

जैन जीवन पद्धति जीवन को सही ढंग से जीने का एक अमोघ उपाय है। उसमें अहिंसा और परोपकार की भावना को अप्रतिम स्थान है। आत्मकल्याण के साथ प्राणिमात्र का कल्याण उसका मूल स्वरूप है। सामाजिक सम्बन्ध पारस्परिक उदारता, सद्भाव, सहयोग, संयम और सापेक्षता पर अवलम्बित है। इसलिए जैन जीवन पद्धति मानवता पर आधारित है। उसका मूल उद्देश्य पूर्ण अहिंसा की साधना करते हुए आत्मा को कर्म बन्धनों से मुक्त करना रहा है। यह साधना तपस्त्याग से आपूर रहती है और वह ईश्वर पर अवलम्बित नहीं रहती है। वीतराग और आप्त परमेष्ठी की निष्काम आराधना करता हुआ साधक कठोर जीवन पद्धति को अपनाता है जिसमें न कोई भ्रष्टाचार होता है, न शिथिलाचार और न किसी तरह की सांसारिक आकांक्षा होती है। यदि वह वीतराग प्रभु से कुछ पाने की प्रार्थना करता भी है तो वह अनुराग और भक्तिवश करता है यह जानते हुए भी कि वीतराग परमात्मा किसी को कुछ भी देने की स्थिति में नहीं है।

मोही और भक्त साधक के कारण समाज में कुछ विकृतियाँ आ जाती हैं जो व्यक्ति, समाज और धर्म के लिए घातक सिद्ध होती हैं। यहाँ हम ऐसी ही सामाजिक विकृतियों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं- सामाजिक और आध्यात्मिक या धार्मिक। वृत्ति, प्रवृत्ति, विकृति और संस्कृति के माध्यम से ये विकृतियाँ कालान्तर में संस्कृति का रूप ग्रहण कर लेती हैं। इन्हीं विकृतियों के आधार पर सम्प्रदाय बनते चले जाते हैं। इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि परम वीतरागी जैनधर्म में ही नहीं, विश्व के सभी धर्मों में उनके सम्प्रदायों की पृष्ठभूमि में इन्हीं विकृतियों का हाथ अधिक रहा है। इन विकृतियों को पनपने में सुविधावादी मनोविज्ञान और सांसारिकता का हाथ अधिक रहा है।

ये विकृतियाँ साधारण तौर पर व्यक्ति से समाज की ओर अग्रसर होती हैं। व्यक्ति प्रथमतः स्वार्थ की सीढ़ियों पर चढता है, अपनी आवश्यकता पर चिन्तन करता है और फिर अपनी प्रतिभा और शक्ति के बल पर उसका प्रयोग समाज पर करता है। सही आत्मचिन्तन करने वाला धार्मिक समुदाय बहुत कम होता है। अधिकांश मुखौटा लगाये जिन्दगी व्यतीत करते हैं। धार्मिकता और सामाजिकता की आड़ में अपनी रोटी सेककर चलने वाला व्यक्ति स्वयं को तो नैतिकता से पदच्युत करता ही है, साथ ही समाज में भी आग लगा देता है।

यहाँ हम संक्षेप में सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त कतिपय ऐसी विकृतियों का उल्लेख कर रहे हैं जिन्होंने व्यक्ति और समाज को जर्जर कर दिया है, स्नेहिलता, आत्मीयता और मानवता को ध्वस्त कर दिया है और उडेल दिया है ऐसी अन्यमनस्कता को जिसने चारों ओर अन्धकार का भीषण कुहासा फैला दिया है।

सामाजिक विकृतियाँ

समाज व्यक्ति-व्यक्ति का सामुदायिक रूप है। उसमें व्यक्ति स्वतः समाविष्ट है। अतः यहाँ हम जिन सामाजिक विकृतियों का उल्लेख कर रहे हैं उनकी पृष्ठभूमि में व्यक्ति की संकीर्ण मानसिकता जुड़ी हुई है। व्यक्ति उत्साह में आकर व्रत या प्रतिज्ञा ग्रहण कर लेता है और फिर उन पर चल नहीं पाता, स्खलित होने लगता है। ऐसी

विकृतियों में कतिपय विकृतियों का उल्लेख हम यहाँ कर रहे हैं-

1. **पंचव्रतों का अतिचारमय स्खलन-** टेक्स चोरी, जीव-हिंसा, वध-बन्धन, आरम्भी, उद्योगी, विरोधी और संकल्पी हिंसा, शृंगारात्मक कथा-वार्ता सुनना, स्त्री-पुरुष के मनोहर अंगों का निरीक्षण, टी.वी. के माध्यम से अपनी कामेच्छा की पूर्ति करना, असत्य बोलकर अपना काम निकालना, अपरिमित परिग्रह का संयोजन करना, हिंसा से परिपूर्ण औषधियों तथा प्रसाधनों का प्रयोग करना, गलत मापदण्डों का प्रयोग, अधिक ब्याजादि लेकर शोषण करना, मिलावट, सप्त व्यसनों का सेवन, अभक्ष्य भक्षण, रात्रिभोजन, विवाह कार्यों में भौंडापन, व्यावसायिक अशुचिता आदि।

2. **दहेज प्रथा-** इसने अहिंसक समाज में घरेलू हिंसा के माध्यम से बीभत्स रूप खड़ा कर दिया है। कन्या को कलंक और अभिशाप मानकर उसकी भ्रूण हत्या कर दी जाती है। जन्म लेने के पहले ही उसकी जिन्दगी समाप्त कर दी जाती है। कन्या का दान किया जाता है, जो अपने आप में नारी का घनघोर अपमान है। जैनधर्म में कहीं भी इस परम्परा का उल्लेख नहीं है। जिनसेन ने ''पुत्र्यश्च संविभागार्हाः समं पुत्रैः समांशकैः (आदिपुराण, 38/54) कहकर पुत्री और पुत्र में कोई भेद नहीं रखा पर हमारे समाज के अहंमन्य नेताओं ने पैसों के लालच में जिन्दगियों पर कठोराघात किया है जो अक्षम्य है।

3. **अन्तर्जातीय विवाह-** विवाह-परिणय समान कुल, शील, वय आदि में किया जाना चाहिए। अन्तर्जातीय विवाह से सांस्कृतिक गतिरोध पैदा होता है। परिवारों में पारस्परिक समझ नहीं हो पाती। प्रायः पुत्री को मन मारकर झुकना पड़ता है। वीतरागी देव को छोड़कर सरागी देव के पूजने का मन वह बना नहीं पाती। फिर भी उसे करना पड़ता है। इससे मानसिक विद्रोह पनपता है। ऐसे विवाह प्रायः टूटते दिखाई देते हैं। प्रारम्भ में भावावेश में आकर गठबंधन हो जाता है, पर बाद में पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं आता।

4. **विधवा विवाह और बाल विवाह-** वर्तमान में बालविवाह प्रथा तो लगभग समाप्त हो चुकी है पर विधवा विवाह का प्रचलन बढ़ रहा है। यद्यपि मानवता की दृष्टि से विधवा विवाह असंगत नहीं है, पर वह सार्थक तभी है जब दोनों व्यक्ति अपनी पूर्व स्मृतियाँ छोड़ दें। अन्यथा दोनों के बीच समरसता नहीं रह पाती। विकृतियाँ अधिक पैदा होती हैं। उनमें आध्यात्मिकता जाग्रत हो तो अधिक अच्छा है।

5. **चौका पद्धति की अशुद्धता-** पाश्चात्त्य संस्कृति ने हमारे चौके पर भी अतिक्रमण किया है। खान-पान अप्रतिबन्धित हो गए। भक्ष्य-अभक्ष्य पर कोई ध्यान नहीं रखा जाता। रात-दिन का भी भेद चला गया। ऐसी स्थिति में जैनत्व तिरोहित होता जा रहा है। परिस्थितियों की दुहाई देकर परिवार संस्कार विहीन होते जा रहे हैं। परम्परावादी, रूढ़िवादी जैसे शब्दों का प्रयोग कर शुद्ध चौका पद्धति को उपहास का विषय बना दिया जाता है। जल-गालन पद्धति तो लगभग समाप्त होती दिखाई दे रही है। होटल संस्कृति और डिब्बा संस्कृति ने ईंधन में घी का काम किया है।

6. **जीर्णोद्धार के नाम पर प्राचीन कला का विनाश-** प्राचीन पुरातत्त्व हमारी विरासत है। जैनेतर समुदाय ने उसका बहुभाग नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। अवशिष्ट भाग में से कुछ मन्दिर जीर्णोद्धार के लिए प्रतीक्षारत हैं। हमारे समाज के कतिपय यशोकांक्षी लोग, विशेष रूप से साधु सम्प्रदाय उन प्राचीन मन्दिरों को जीर्णोद्धार के नाम पर धराशायी कर देते हैं। इतना ही नहीं, अज्ञानतावश शिलालेखों में परिवर्तन करने का प्रयत्न करते हैं और अपठित शिलालेखों तथा खण्डित मूर्तियों को नदी में फेंक देते है। यह बहुत बड़ा अपराध है, दुष्कृत्य है। उससे जेल के सींकचों के पीछे भी जाना पड़ सकता है।

7. **जातिवादी व्यवस्था एवं साम्प्रदायिकता–** प्राचीन परम्परावादी पण्डित और साधु सम्प्रदाय दिगम्बर-श्वेताम्बर जैसी साम्प्रदायिकता को खड़ी कर धर्मशालाओं और संस्थाओं में अपने से बाह्य सम्प्रदायी को प्रवेश नहीं देते। यदि किसी संस्थान ने खुले मन से प्रवेश दे दिया या नियुक्त कर दिया तो उसे घनघोर संघर्षों को झेलना पड़ता है। इससे संस्थान प्रतिभा के उपयोग से वंचित हो जाता है।

8. **तीर्थों पर अतिक्रमण–** आज एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के तीर्थों पर अतिक्रमण करने लगा है। फलतः अहिंसक समाज कहीं हिंसक होता दिखाई देता है। कोर्ट की सीढ़ियाँ चढ़ने में भी उसे संकोच नहीं होता है। इससे सामाजिक समरसता पर कलंक लगने लगा है और साथ ही जैनेतर समाज के कटु आक्षेप भी झेलने पड़ते हैं।

2. धार्मिक विकृतियाँ–

उपर्युक्त सामाजिक विकृतियों की पृष्ठभूमि में एक यह भी तथ्य है कि वर्तमान परिस्थितियों में माता-पिता और उनकी सन्तान के बीच संवाद की स्थिति बिगड़ती चली जा रही है। सन्तान को पारिवारिक सुसंस्कार अधिक नहीं मिल पाते और माता-पिता अलग-थलग पड़ जाते हैं। यह संवादहीनता धार्मिक विकृतियों को उपस्थापित करने में सहयोग देती है।

यहाँ हम ऐसी कतिपय धार्मिक विकृतियों का उल्लेख करेंगे, जिन्होंने धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में इतने गतिरोध पैदा कर दिये हैं कि यह क्षेत्र बदनाम और कलंकित सा हो गया है। व्यक्ति में अभी भी श्रद्धा शेष है, पर आगमिक ज्ञान की कमी है। इसलिए वह यह निर्णय नहीं कर पाता कि साधु सम्प्रदाय अपने आचरण में कहाँ तक सही है। साधु जो भी करता है उसे वह सही मानने लगता है और तदनुसार पैसा लुटाता रहता है। इस विवेकहीनता ने साधु सम्प्रदाय को खुली छूट दे दी। यह तथ्य ध्यातव्य है कि समूचा साधु सम्प्रदाय एक सा नहीं है। उनकी आलोचना करना या उनमें कमियां दिखाना मेरा उद्देश्य भी नहीं है। मेरा उद्देश्य तो यह है कि जो प्रामाणिक आचार का परिपालन नहीं करते और आध्यात्मिक जीवन में विसंगतियाँ पैदा करते हैं, उनमें सुधार अपेक्षित है। यहाँ कतिपय विकृतियाँ प्रस्तुत हैं–

1. **शिथिलाचार–** आज शिथिलाचार सुरसा की भांति बढ़ता चला जा रहा है। श्रमणाचार की सारी परिसीमाएँ ध्वस्त होती चली जा रही हैं, साधना सिसकती हुई एक ओर बैठ गई है, फिर भी जानकार समाज ऐसे साधुओं की ओर अंगुलि भी नहीं उठा पाती, विवश होकर वह हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाता है। उसका साथ देने वाला कोई भी आगे नहीं आता। इससे शिथिलाचारी को चिंतन-मनन करने का अवसर नहीं मिलता और उसकी जिन्दगी वैसी ही पटरी से उतरी हुई बनी रहती है। इन बिन्दुओं को गिनाने की मुझे आवश्यकता नहीं। साधु सम्प्रदाय उसे स्वयं समझ सकते हैं।

2. **एकल विहारिता क्यों ?–** साधारण तौर पर साधु एकल विहारी नहीं होता। होना भी नहीं चाहिए। पर आज यह स्वच्छन्द प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इससे साधनापथ में भी स्वच्छन्दता का समावेश हो रहा है। उसे देखने वाला कोई दूसरा नहीं रहता। इसलिए उसके पैर फिसलते रहते हैं।

3. **आचार्य बनने की होड़–** आगम में आचार्य के जिन गुणों की चर्चा हुई है, उन पर ध्यान दिये बिना ही आचार्य बनने की होड़ में लग्न साधु साधना से विमुख होकर राजनीति की सीढ़ियाँ चढ़ने लगता है। इससे साधु सम्प्रदाय में वैमनस्य बढ़ जाता है।

4. **वर्षावास एक ही स्थान पर क्यों ?–** कतिपय साधु साधु नहीं मठाधीश होते जा रहे हैं। वे अपना मठ बना लेते हैं और वहीं वर्षावास करते रहते हैं। इससे उनकी आसक्ति का क्षेत्र बढ़ता चला जाता है और साधना छूटने लगती है।

5. **साधु संस्था और चमत्कार–** साधु चमत्कार प्रदर्शन के लिए साधु नहीं बनता। चमत्कार प्रदर्शन करने वाला साधु साधु की परिसीमा से बाहर हो जाता है। पर आज कुछ साधु सन्तान, सम्पत्ति, निरामयता आदि देने का वायदा करते दिखाई देते हैं। इनमें से अधिकांश पूर्ति संयोग से होती रहती है, पर उस पर मुहर साधु की लग जाती है। उसके आचरण में यह दीमक का काम करती है, विशुद्धि रो पड़ती है। मंत्र प्रयोग होता है, पर वह आत्मशुद्धि के लिए।

6. **वर्षावास व्यय साध्य है–** आज वर्षावास इतना व्यय साध्य है कि छोटा-मोटा समाज उसे नहीं ओढ़ सकता। करोड़ों का बजट रहता है जिसे श्रेष्ठिवर्ग ही पूरा कर पाता है। इससे साधारण समाज साधु से दूर होता जाता है और साधु श्रेष्ठिवर्ग के हाथ बिक जाता है।

7. **साधु भी गृहस्थ जैसा–** आज साधु के पास किस चीज की कमी? कुछ साधु तो मोबाइल, कम्प्यूटर, लेपटॉप, फ्लश लेटरिन आदि का उपयोग निःसंकोच करने लगे हैं। बड़े-बड़े बालों को कंघी से सुधारने में लगे हैं। साधु के आशातीत आहार-विहार में कोई संयम नहीं दिखाई देता है। मूलगुणों और महाव्रतों का पालन तो दूर, अणुव्रतों का भी पालन नहीं होता। मन्दिरों आदि का निर्माण भी धडल्ले से कराते हैं। फिर सभी की व्यवस्था भी उन्हीं को करनी पड़ती है। सामाजिकता बढ़ जाती है और आध्यात्मिकता पलायन करने लगती है।

8. **शासन-देवी-देवताओं की पूजन–** वर्तमान में वीतरागी तीर्थंकर के पूजन से भी अधिक उनकी शासन-देवी-देवताओं की पूजन प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है। यह कहाँ तक उचित है?

9. **उपासना पद्धति–** जैन सम्प्रदाय में तेरापंथ, बीसपंथ, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी आदि जैसे सम्प्रदायों के बीच अपने-अपने ढंग से भगवान की उपासना की जाती है। इधर कुछ साधु सम्प्रदाय इन पद्धतियों पर अंगुलि उठा रहे हैं और हठात् देवी-देवताओं को मन्दिरों में से हटाकर बाहर रखा देते हैं और श्रावकों को उपासना पद्धति बदलने का दुराग्रह करते हैं। वस्तु स्थिति को निश्छलतापूर्वक स्पष्ट करना तो ठीक है, पर समाज को जबरदस्ती किसी ऐसे कार्य की ओर ढकेलना जिससे सामाजिक समरसता भंग हो जाये, यह कहाँ तक उचित है।

10. **पञ्चकल्याणकों का भव्य आयोजन–** आज साधु सम्प्रदाय में नवीन वृहदाकार भव्य मन्दिरों के निर्माण कराने की होड़ लगी हुई है। नामपट्ट लगाने/लगवाने के भाव से पैसा सहज रूप से एकत्रित हो जाता है। फिर पञ्चकल्याणकों का भव्य आयोजन किया जाता है। इन सब आयोजनों में इतना पैसा खर्च होता है कि उससे एक विश्वविद्यालय खड़ा हो जाये या बड़ा भारी उद्योग लग जाये या सैकड़ों निर्धन परिवारों को सुखी बना दिया जाये। मैं मन्दिर निर्माण का विरोधी नहीं हूँ। पर उनकी सार्वत्रिक आवश्यकता पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर रहा हूँ। ज्ञानाराधना को फैलाने वाले विद्यालयों की महती आवश्यकता है। इसी तरह समाज में अभी भी ऐसे परिवारों की कमी नहीं है जिनमें योग्य बच्चों को अच्छे विद्यालय में प्रवेश नहीं मिलता। सामाजिक उत्कर्ष के लिए वस्तुतः अनेक क्षेत्र हैं, जिन पर अपेक्षाकृत अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

धार्मिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में इन विसंगतियों के कारण सामाजिक सौहार्द बिगड़ रहा है। व्यावसायिक शुचिता समाप्त होती जा रही है, यथार्थ धार्मिकता से हटकर मुखौटी धार्मिकता का पलड़ा भारी हो रहा है, नई पीढ़ी अनेक प्रश्नों को खड़ाकर विलग होती जा रही है। इन सारी बातों पर सम्यक् ऊहापोह होना चाहिए। यहाँ किसी की आलोचना करने का मेरा उद्देश्य नहीं है। मेरा उद्देश्य तो यह है कि समाज सुधारक और साधु सम्प्रदाय इन सारी विसंगतियों पर रचनात्मक और सकारात्मक सोच के साथ आगे आये और तथ्यात्मकता पर प्रकाश डाले ताकि वीतरागी जैनधर्म का भविष्य उज्ज्वल बन सके और संसारी जीवों का कल्याण हो सके। यही सही जैन जीवन पद्धति है।

-तुकाराम चाल, सदर, नागपुर-440001 (महा.)

वैज्ञानिक-आलेख

जैनों का आहार : कितना वैज्ञानिक

डॉ. नंदलाल बोरदिया (क्षयरोग विशेषज्ञ)

हम सभी को भोजन की आवश्यकता है, क्योंकि हमें जन्म से ही शारीरिक वृद्धि, हलन-चलन की क्रिया, शारीरिक तापमान, दैनिक क्रियाओं तथा घटनाओं में हो रही शारीरिक क्षति की पूर्ति के लिये विभिन्न तत्त्वों की आवश्यकता होती है। शरीर की इन आवश्यकताओं के लिये मुख्य स्रोत भोजन ही है। भोजन, पानी, वायु के बिना हमारा शरीर चल नहीं सकता, टिका नहीं रह सकता और उनकी कोई क्रिया नहीं हो सकती है। हम भोजन इसलिये नहीं खाते हैं कि हमें भूख लगती है किन्तु भूख तथा प्यास प्रकृति के भोजन तथा पानी लेने के साधन है। हमें वही भोजन लेना चाहिये जो हमारे शरीर के लिये आवश्यक हो, जो हमें स्वस्थ और दीर्घायु बनावे साथ ही कोई शारीरिक और मानसिक विकारोत्पत्ति न करे।

भोजन के तत्त्व

जो-जो तत्त्व हमारे शरीर में है तथा जितनी आवश्यकता इनकी हमारे शरीर में होती है वे सभी तत्त्व हम भोजन तथा पानी द्वारा ही ग्रहण करते हैं। यदि हम उनके अतिरिक्त लें तो शरीर द्वारा उन्हें विसर्जित किया जायेगा जैसे मल, मूत्र या स्वेद द्वारा, यदि वे शरीर में रह गये तो वे शरीर में विकार उत्पन्न करेंगे। मनुष्य शरीर को अलग-अलग परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के तत्त्वों की आवश्यकता होती है जैसे बच्चों में शरीर वृद्धि तथा अस्थि वृद्धि के लिये विटामिन, केल्शियम, मांस पेशियों के लिये प्रोटीन तथा अन्य तत्त्व उनके शरीर तोल के मान से अधिक आवश्यक हैं। युवावस्था में शारीरिक तथा मानसिक श्रम अधिक होता है, इसलिए शर्करा पदार्थ तथा वसा (फैट) की आवश्यकता अधिक रहती है। शारीरिक वृद्धि परिपूर्ण हो जाने पर केल्शियम की उतनी आवश्यकता नहीं रहती जितनी कि बच्चों में रहती है। वृद्धावस्था में न तो शरीर वृद्धि होती है न अधिक शारीरिक तथा मानसिक क्रियाएं। शरीर की अग्नि भी शनैःशनैः मंद जलती है यानी शरीर का चयापचय धीमा पड़ जाता है, इसलिये सभी प्रकार के भोजन की मुख्यतः वसा तथा शर्करा पदार्थ की आवश्यकता कम हो जाती है। शारीरिक श्रम करने वाले मजदूर को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता है, इसलिये उन्हें अधिक भोजन लेना पड़ता है। स्त्रियों में चय-अपचय पुरुषों से धीमा है, इसलिये उनका कम आहार से भी काम चल जाता है। प्रसवास्था में लोहा, केल्शियम, प्रोटीन इत्यादि पदार्थों की स्त्रियों को अधिक आवश्यकता होती है, उस समय उन्हें अधिक खाना उचित है।

भोजन के तत्त्वों में प्रोटीन (पौष्टिक पदार्थ) शर्करा पदार्थ, वसा (घी, तेल, चरबी), क्षार पदार्थ जैसे लोहा, केल्शियम, फास्फोरस इत्यादि हैं। इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है- एक तत्त्व जो विटामिन के नाम से प्रचलित है और बहुधा कई हीनता जन्य रोगों से बचाव करता है तथा उनसे शरीर की विभिन्न क्रियाएं सुचारु रूप से कार्य करती हैं। ये पदार्थ प्रकृति ने प्राकृतिक रूप से उत्पन्न खाद्य पदार्थों में बहुलता से उपजाये हैं।

मनुष्य जीवन के उद्देश्य

मनुष्य जीवन दुर्लभ है। देवता भी मानव का जीवन जीने की कामना करते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें बुद्धि का विकास सबसे अधिक हुआ है, उसकी जीवन प्रणाली इतनी उच्च तथा आध्यात्मिक रूप से विकसित है कि उसने अपने आपको सामान्य परम्परा से भिन्न कर, उच्च विकसित दर्शन को जीवन में स्थान दिया, इसमें खुद

जीने तथा पृथ्वी के अन्य प्राणियों को भी उसी प्रकार जीने देने का महत्त्व है। जैन परम्परा में अहिंसा का महत्त्व है। भोजन प्रणाली का विकास इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। जैन-धर्म की इस आहार प्रणाली को विश्व के सभी वैज्ञानिकों व धर्म शास्त्रियों ने किसी-न-किसी प्रकार से श्रेष्ठ माना है। यह इतनी सरल तथा व्यापक है कि यदि हमारा निर्वाह किसी चलते-फिरते प्राणी की हत्या के बिना सम्भव हो तो, हम अपने इस जीवन को सार्थक समझेंगे। यदि हमें जीवित रहना है तो एकेन्द्रिय पदार्थों का हनन तो अनिवार्य होगा, पर हमारा उद्देश्य नहीं होगा जिसमें हमारा कषाय भाव हो। हम अपने जीवित मात्र रहने के लिये अन्य प्राणियों की हत्या न करें यद्यपि हम जीवित रहने के लिये अन्न, हवा, पानी का प्रयोग तो करें पर इसके साथ न दिखने वाले प्राणियों के प्रति भी सद्भाव रखें और उनकी अनजाने में भी हत्या न हो।

मनुष्य मूलतः शाकाहारी :

संसार में प्रायः दो प्रकार के प्राणी पाये जाते हैं-(1) शाकाहारी और (2) मांसाहारी। मनुष्य, बन्दर, घोड़ा, बैल, हिरण, बकरी आदि वर्ग शाकाहारी श्रेणी में हैं। इसके विपरीत सिंह, कुत्ता, बिल्ली, लोमड़ी आदि मांसाहारी जीव हैं। इन दोनों श्रेणियों के सभी प्राणियों में माता के उदर से उत्पत्ति के साथ स्तनपेशियों में दूध की उत्पत्ति की व्यवस्था है ताकि जब तक जन्म लेने वाला प्राणी स्वयं प्रयास कर उदर पूर्ति के काबिल नहीं हो जाता, उसे माता के स्तनपान पर ही निर्भर रहना पड़ता है। धीरे-धीरे वह आत्म-निर्भर हो जाता है। स्तनपायी जीव बलिष्ठ तथा स्वस्थ होते हैं। मनुष्य बन्दर, शिम्पाइनजी और गुरिल्ला के सबसे नजदीक है, ये सभी पूर्ण शाकाहारी जीव हैं तथा ये बलवान तथा स्वस्थ जीवी हैं। हमारे शरीर की रचना भी इस ढंग की है कि हम विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों से अपने लाभदायक तत्त्व ग्रहण कर लेते हैं और दूसरे तत्त्वों को फेंक देते हैं। मनुष्य यदि घी, तेल या अन्य प्रकार की वसा पदार्थ न भी ले तो शर्करा पदार्थ शरीर में जाकर घी या चरबी में परिवर्तित हो जाता है। जानवर घास खाकर भी उसमें से चरबी उत्पन्न कर लेते हैं और वे किसी प्रकार का अन्य भोजन प्राप्त किये बिना भी बलवान और पुष्ट रहते हैं।

सभी भोजन जिस प्राकृतिक स्थिति में उपजते हैं, उन्हें उसी रूप में खाना स्वास्थ्यप्रद है। उपवास के दूसरे दिन उबला (साबुत) मूंग (बिना तला) लेने की जो प्रथा है तथा राजस्थान में केर लिये जाते हैं, वे भी पुष्टिकारक तथा स्वास्थ्यप्रद है। मनुष्य जिस प्रकार के भोजन का आदी हो जाता है वहीं उसे शरीर के रक्षार्थ आवश्यक तत्त्व मिल जाते हैं, बशर्ते कि उस भोजन में शरीर के उत्तकों के बनने के लिये आवश्यक मूलतत्त्व हों। भारत में ही उत्तर के लोगों का भोजन दक्षिण प्रांत के निवासियों से भिन्न हैं, फिर भी दक्षिण के लोग स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होते हैं। राजस्थान के रेगिस्तान में बहुत थोडे खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं पर सेना के लिये जवानों की भर्ती वहाँ बहुत अधिक होती है। हमारे शरीर में अपार सामंजस्य की शक्ति है और वह सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों से जीवन शक्तिदायक तत्त्वों को प्राप्त करने की शक्ति रखता है। प्राकृतिक खाद्यों में रुचिकर स्वाद होता है और वे बहुत अधिक अग्राही स्वाद वाले नहीं होते। हमारे देश में जो भी खाद्य पदार्थ पैदा होते हैं, भोजन प्रणाली भी उन्हीं पर आधारित होती है और वे ही सारे पौष्टिकारक तत्त्वों को लिये होते हैं। जैसे चापड़ सहित गेंहू का आटा, हाथ कुटा चावल, मामूली जौ, जवार, मक्का आदि मोटे अनाज तथा छिलके वाली दाल जैसे मूंग, उड़द, चना, मटर, हरी ताजी सब्जियाँ जैसे कोथमीर, पोदीना, हरी मिर्ची, नींबू व सलाद की पत्ती जो बिना उबाले ही लिये जाते हैं। ताजे प्रकृति के पके फल, थोड़ी मात्रा में दूध, ये सभी भोजन के आवश्यक अंग हैं और भोजन को संतुलित बनाते हैं, पर हमने अपने मात्र स्वाद के लिये भोजन की पौष्टिक शक्ति तथा रोग अवरोधक क्षमता को समाप्त कर लिया है और उसे रुचिकर बनाने की धुन में उसे जहरीला बना लिया है।

उसका एक उदाहरण प्रस्तुत है। यदि स्वस्थ कबूतरों को देहरादून का बढ़िया मशीन का साफ किया बासमती

चावल एक माह खिलाया जाय तो उन्हें एक माह में ही लकवा हो जायेगा। वे फिर चलते-चलते गिरने लगते हैं और उनका उड़ना बंद हो जाता है। वे ही कबूतर उस चावल को तब अभक्ष्य पदार्थ मानकर चुगना बंद कर देंगे। अब यदि उन्हें पूरे मूंग छिलके सहित देंगे तो वे पुनः चुगना शुरू कर देंगे और 5 या 7 दिन में पुनः स्वस्थ हो जायेंगे। भोजन में खिचड़ी का महत्त्व इससे स्पष्ट हो जाता है। सफेद चावल एवं डबल रोटी (मैदा) खाने में कुदरती मोटे आटे से अधिक स्वादिष्ट हैं, लेकिन वे बेरी-बेरी रोग पैदा करते हैं। पूर्ण रोग न भी हो तो भी उस स्वास्थ्यप्रद पदार्थ की शरीर में कमी पड़ने लगती है और पैरों में दर्द, हाथों व हथेलियों व तलवों में जलन सामान्य रोग स्थिति है। बैठकर फिर उठना भी कठिन हो जाता है और पैर दर्द करते हैं व शक्तिहीन हो जाते हैं। चापड़ सहित आटा, छिलके वाली दाल तथा नारियल की मात्रा अधिक रखने से भोजन पुष्टिकारक होता है। नारियल तथा खारक की भेंट भी एक उत्तम परम्परा है और इसके पीछे इसी सिद्धान्त को अपनाया गया है। जैन भोजन में 'शोध का भोजन' ही लेने का आग्रह है यानी छिलके वाला हाथ से साफ किया भोजन लिया जाता है-हाथ का कुटा चावल, हाथ का पिसा आटा। उसमें त्रस जीवों की हिंसा न होने के अलावा आवश्यक स्वास्थ्यप्रद भोजन तत्त्व जल नहीं जाता या निकल नहीं जाता। मशीन का साफ किया चावल-भोजन ही नहीं रहता। शोध का भोजन अधिक स्वास्थ्यप्रद है। आत्म-विजय के लिये इन्द्रियदमन का जो महत्त्व है, उसमें स्त्री, पैसा और स्वाद के मोह को कम करने को ही राजमार्ग की ओर प्रवृत्त माना गया है। ये सीधे-साधे सिद्धान्त जैन आहार प्रणाली के आधार स्तम्भ हैं और इनकी सारी व्यावहारिकता के मूल में एक वैज्ञानिक दृष्टि है।

शरीर की क्रियाएँ:

हमारे शरीर में कई अवयव हैं और उनकी क्रियाएँ अविरल चलती रहती हैं, पर उन्हें भी विश्राम की आवश्यकता होती है क्योंकि ये भी चलते-रहने से थकते रहते हैं। विश्राम मिलने से उनमें नई स्फूर्ति आती है। यदि हम विश्राम करते हैं या रात को 6-8 घंटे सोते हैं तो सुबह हम अपने को तरोताजा महसूस करते हैं। हृदय तथा श्वास की गति कभी रुकती नहीं हैं पर वह सोते समय धीमी हो जाती है। हृदय को कम भार पड़ता है और वह अगले दिन के लियें पुनः तैयार हो जाता है। इसी प्रकार पाचन क्रिया भी हर समय चलती रहती है। भोजन करने के तुरंत बाद सो जाने पर तो वह और भी तीव्र गति से काम करती है, किन्तु उसे भी विश्राम चाहिये। एक बार भोजन करना पाचन क्रिया को विश्राम देगा। कभी-कभी पूर्ण उपवास भी उसे विश्राम देगा और शरीर को कम से कम शाम को 6 बजे से सुबह 7 बजे तक न खाने से उसे विश्राम मिलेगा। इस प्रकार यह क्रिया पाचन के भविष्य को सुधारेगी। यदि शरीर की सभी क्रियाएँ सदैव पूर्ण रूप से कार्य करती रहें तो वे शीघ्र थक जायेंगी। तीव्रगति का जीवन (Fast Life) जीने वाले कभी लम्बी उम्र तक जीवित नहीं रहते। उसी प्रकार अधिक भोजन करने वाले लम्बी आयुष्य वाले नहीं होते। लम्बी उम्र तथा स्वस्थ रहने का सबसे बड़ा साधन है अल्प भोजन, शान्त जीवन, काम के साथ विश्राम भी।

शरीर में यदि सभी क्रियाएं तीव्र गति से चलती रहें तो वे शरीर को जल्दी ही भस्मीभूत कर देंगी। दिन भर दौड़-धूप, मानसिक तनाव, दिन भर खाना और शारीरिक श्रम की कमी मनुष्य को निश्चय ही हृदयरोग की ओर ले जाने वाली है। मनुष्य की बहुत सी क्रियाएं प्रतिवर्ती (Reflex) होती हैं। भोजन लेने की आदतें भी प्रतिवर्ती होती हैं और वे भी अधिक सोपाधि प्रतिवर्ती होने से मनुष्य वातावरण का आदी हो जाता है। जैसे सुबह उठते ही चाय पीने की आदत हो जाती है। उसके बिना उसे कमजोरी महसूस होती है। इसलिये जो दिन में बार-बार खाने तथा विशेष प्रकार के भोजन पेय पदार्थ लेने के आदी हो जाते हैं, वे अपनी इन्द्रियों के वशीभूत होकर स्वास्थ्य खो देते हैं। इस प्रकार रोगोत्पत्ति का एक मूल कारण मनुष्य की अपनी आहार प्रणाली तथा उसकी दिनचर्या ही है। मानसिक तनाव, खून के दबाव का न्यून और अधिक ब्लडप्रेशर होना, लकवा, हृदयरोग तथा अन्य दुर्घटनाएं उसकी अपनी आदतों के कारण हैं। मनुष्य ने स्वाद के नाम पर अपनी आदतें इस कदर बिगाड़ ली हैं कि शनैःशनैः उनमें पौष्टिकता की कमी होती गई

और रोगोत्पत्ति के कारणों का प्रभाव बढ़ता गया। सभ्यता की ऊंचाई अब इस कदर बढ़ गई है कि भोजन का जो स्वरूप पहले अमृत था, अब ज़हर बन चुका है और भोजन बनाने की प्रणाली का विकास स्वाद के नाम पर इतना बिगड़ता जा रहा है कि उसकी सारी रोग अवरोधक क्षमता समाप्त होती जा रही है।

सदियों पूर्व जहाँ पहले तेज स्वाद वाले पदार्थ और मसालों का अभाव था, आज नमक, शक्कर, मिर्च, मसालापूर्ण विविध तले व्यंजन हमारे भोजन के मुख्य अंग बनते जा रहे हैं। इनके जो भयंकर दुष्परिणाम सामने आते जा रहे हैं उन्होंने मनुष्य में कई नये रोगों को जन्म दिया। मोटापा बढ़ना, पाचन क्रिया खराब होना, केवल जिह्वा को संतुष्ट करने में हमने विभिन्न प्रकार के गंभीर रोगों को निमन्त्रण दिया है। मनुष्य यदि प्राकृतिक भोजन या बिना तेज स्वाद बनाया भोजन ले तो अधिक खा नहीं सकता। अधिक खाता क्यों है क्योंकि उसमें अति स्वाद होता है। इन्द्रिय दमन के लिये अधिक तेज स्वाद वाला भोजन नहीं लिया जा सकता है जैसे अधिक मीठा, स्वादिष्ट, विभिन्न व्यंजन, नमकीन, महकते भोजन, अधिक खट्टे भोजन, पापड़ ये सब इन्द्रिय दमन में बाधक हैं। उसके लेने से मनुष्य अधिक खाता है-खाने से शरीर बेडोल होता है और अधिक खाने के सभी दुष्परिणाम शोध का भोजन नहीं लेने से होते हैं। शोध का भोजन लेने से कब्जी नहीं रहती, पेट साफ रहता है लिवर में रक्त रुकावट नहीं होती व मस्से नहीं होते।

अभी भी जैन आहार प्रणाली इतनी अधिक परिष्कृत और वैज्ञानिक है कि यदि हम उसके केवल मोटे-मोटे सिद्धान्त पर ही चलें तो भी हम अनेक दुष्ट बीमारियों के चंगुल में फंसने से बच सकते हैं। हमारे यहां मद्यपान, मांस, मधु तो वर्जित है ही, पर अधिक बीज वाले वनस्पति और सब्जियों का भी निषेध है। बैंगन, टमाटर, गूलर, अंजीर, बड़, पीपल बहुबीजी फल हैं और इनकी पौष्टिकजन्य क्षमता न्यून है और कचरा अधिक हैं। इनकी उपयोगिता बाहरी रूप से पेट भरने तक ही है और इनका प्रयोग मोटापा कम करने तथा मधुमेह के रोगियों में ही होता है। उसी प्रकार जमीन में पाये जाने वाले कन्द मूल जैसे आलू, प्याज, अरबी, शक्करकंद और मूली का निषेध है। इनमें पौष्टिक पदार्थ और वसा का अभाव है तथा निम्न श्रेणी की शर्करा है। इनमें विटामिन भी नहीं हैं। गाजर में विटामिन 'ए' तत्त्व का बहुत अधिक गुणगान किया जाता है। पर इतना विटामिन तो हरी कोथमीर, पोदीना से सरलता से मिल जाता है। इसके विपरीत गाजर तथा सभी जमीन के अन्दर उगने वाले पदार्थ गैसोत्पादक हैं तथा पेट खराब करते हैं। उनके जमीन से निकालने में अनेक प्राणियों की हत्या होती है। उम्र बढ़ने के साथ मनुष्य को जमीकंद हानिकारक होते जाते हैं, खासकर मोटापे तथा गैसोत्पत्ति के कारण वे उपयोगिता के बदले रोगजनक हैं।

मूँगफली यद्यपि जमीन में उगती है पर वह बहुबीजी नहीं होने के कारण जमीकंद की परिभाषा में नहीं ली जाती। इसके विपरीत एक बीज वाले खाद्य पदार्थ बहुत गुण वाले होते हैं। आम जो फलों का राजा माना जाता है उसमें सभी विटामिन, शर्करा पदार्थ आदि पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं। उसी प्रकार खारक, खजूर भी शर्करा पदार्थ तथा लोहे से परिपूर्ण हैं। खजूर तो अरब देशों में भोजन का मूल आधार है। नारियल, बादाम, अखरोट, मूंगफली भी इसी श्रेणी में हैं तथा आम से भी अधिक पौष्टिक पदार्थ इनमें हैं। इनसे ही मिलते-जुलते तत्त्व वाले पदार्थों में दालें, हरा मूंग, उड़द, चना, मटर, मोठ, तुवर इत्यादि हैं। इनमें पौष्टिक पदार्थ 23 प्रतिशत है जो मांसाहार के बराबरी का है। फर्क केवल इतना है कि हम अपने तुच्छ से भोजन के लिये एक ओर सजीव प्राणियों की हत्या करते हैं, दूसरी ओर हमें ये ही भोजन शुद्ध वनस्पतियों से प्राप्त होते हैं। दालों का महत्त्व 'गरीबों के मांस' के रूप में पश्चिम के वैज्ञानिकों ने निरूपित किया है। छिलके सहित दाल लेने से विटामिन बी-काम्प्लेक्स तथा अन्य पौष्टिक पदार्थों की पूर्ति होती है।

आहार में तप का महत्त्व:

जैन-धर्म में कम आहार लेने पर बड़ा बल दिया गया है। भूखे रहने के विभिन्न तप प्रचलित हैं। हर पखवाडे में एक उपवास और बढ़ती उम्र में एक माह में चार उपवास कई श्रावक-श्राविकाएं सामान्यतः करते हैं। साधु-साध्वी

तो कई प्रकार की लम्बी तपस्या करते हैं। जिनमें इतनी हिम्मत नहीं होती वे आयंबिल करते हैं। कई लोग अष्टमी,चतुर्दशी को एक बार ही भोजन दोपहर में करते हैं। ये क्रियाएँ पेट को साफ रखती हैं। इन्द्रियदमन का अभ्यास होता है। जीवन शान्त बनता है। आँतों को विश्रान्ति मिलती है। हृदय गति सुधरती है, बशर्ते कि दूसरे दिन अधिक भोजन न लिया जाय। धर्म में तो कम खाने को इतना महत्त्व दिया गया है कि कम खाया जाय जिसे ऊनोदरी तप कहते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हम आवश्यकता के अनुसार बहुत खाते हैं जबकि गरीब मजदूर को खाने को ही नहीं मिलता। आपका बचाया हुआ भोजन उसे भेंट कर दिया जाय तो अहिंसा एक कदम आगे बढ़ जायेगी। कम खाने की तथा उपवास की आदत कम उम्र से ही अभ्यास करने से बढ़ाई जा सकती है। धीरे-धीरे शरीर की स्थिति के अनुसार तपस्या की जानी चाहिये। लम्बे समय के उपवास अभ्यास से ही बढ़ाये जाते हैं।

तपस्या या उपवास का उद्देश्य कायाक्लेश नहीं है। यह भूखे रहने की क्षमता का मानवीय प्रदर्शन भी नहीं है। यह तो शरीर में शान्त भाव उत्पन्न कर इन्द्रियों को वशीभूत करके चित्त को आत्मलीन करने का साधन है। यदि साधक तपस्वी उस लक्ष्य को पहुंचने का प्रयत्न न करके केवल कायाक्लेश करता है तो वह तप त्याज्य है। उसी प्रकार तपस्या प्रदर्शन के लिये तथा नाम करने के लिये या मान पाने के लिये करना पापार्जन का कारण बनेगा। अपनी शारीरिक शक्ति से अधिक तीव्र तपस्या जिद्द से तथा प्रतियोगिता की होड़ में पड़कर करना पाप माना जायेगा और वह शरीर को तथा आत्मा को हानिकारक होगा। अभ्यास से भूखा रहना आत्म-साधन के लिये महत्त्वपूर्ण साधन है। धीरे-धीरे अभ्यास करने से शरीर में कोई नुकसान नहीं होता तथा लम्बी उम्र पाने में सहायक है, क्योंकि उससे रक्त धमनियों में वसा इकट्ठा नहीं हो पाती, हृदय गति अच्छी बनी रहती है बशर्ते कि व्यक्ति पानी पी सके। तप करने वालों को रक्तचाप नहीं बढ़ता। मोटापा तो बढ़ ही नहीं सकता बशर्ते कि तप के बाद भोजन संतुलित रहे और अधिक घी, तेल, तले भोजन न लिये जायें। तपस्वी को मधुमेह भी नहीं होना चाहिये। एक बार बम्बई के ही नहीं विश्व के प्रसिद्ध डॉ. रुस्तम लाल वकील ने दिल्ली के मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में हृदय रोग से बचने के विषय की भूमिका में एक महत्त्वपूर्ण बात कही थी। भूखे मरिये और श्रम कीजिए-बचपन से ही, हृदयरोग नहीं होगा। किसी विद्वान ने भी कहा है कि लोग जितने भूख से नहीं मरते उतने अधिक लोग अधिक भोजन लेने से मरते हैं। अधिक भोजन से उपजे रोग ही आधुनिक युग के अभिशाप हैं और इनके दमन के लिये एक मात्र इलाज ही विभिन्न प्रकार के तप तथा उपवास हैं।

रात्रि भोजन निषेध

जैन-धर्म में रात्रि भोजन निषेध पर बहुत बल दिया है। यह आदत बड़ी लाभप्रद है। भोजन लेने से पेट भर जाने के तुरन्त बाद सोने से हृदय पर बोझ पड़ता है। भरा पेट हृदय का दुश्मन है। शाम को सूर्यास्त के पहले भोजन लेने से सोते समय पेट हल्का रहता है। पानी भी यदि सूर्यास्त बाद न लिया जाय तो बढ़ती उम्र में रात में बार-बार पेशाब करने की आवश्यकता नहीं होती। बढ़ती उम्र में प्रोस्टेट की बीमारियां सामान्यतः पायी जाती हैं। इस रोग से पेशाब रात में धीरे-धीरे उतरता है और पुरुष रोगी को बार-बार उठना पड़ता है। यदि रात में न भोजन लिया जावे न पानी पिया जाये तो व्यक्ति रात में निर्विघ्न सो सकता है और प्रोस्टेट रोग तकलीफ नहीं देता।

रात्रि भोजन से जीव हत्या

रात्रि में कई जीव-जन्तु बाहर निकलते हैं, वे सूर्य के प्रकाश में नहीं आते। इसलिये यदि बहुत अच्छी बिजली की रोशनी भी हो तो वे आसानी से नजर नहीं आते हैं। वे रोशनी से आकर्षित होते हैं इसलिये यह सोचना कि अब अच्छी रोशनी है, इसलिये रात्रि भोजन में आपत्ति नहीं होनी चाहिये, यह गलत धारणा है। बहुधा ऑपरेशन से बचा जा सकता है। बारह घंटे पेट में कुछ नहीं जाने से पाचन शक्ति अच्छी रहती है। अमेरिका में देश भर में शाम के 6

बजे भोजन लेने का रिवाज है।

विगयः

जैन आहार प्रणाली में कुछ दिनों तक घी, तेल तथा वसायुक्त भोजन न लेने का नियम है। इन पदार्थों को विगय कहते हैं। ये वे पदार्थ हैं जिनसे रक्त में चरबी बढ़ती है, जिसे कोलेस्टटोल कहा जाता है। चरबी के रक्त में बढ़ने से वह रक्त धमनियों की अन्दर की दीवार पर जमती जाती हैं। धमनियां संकड़ी होती जाती हैं, जिसे 'एथरोमा' कहते हैं। यह वह दशा है जिससे हृदयाघात, पक्षाघात आदि का भय रहता है। विगय खाद्य पदार्थों के न लेने से एथरोमा होने का भय कम हो जाता है, क्योंकि रक्त में कोलेस्ट्रोल वसा नहीं बढ़ पाता है।

मांसाहार तथा गरिष्ठ भोजनः

जिस धर्म में अहिंसा को सबसे बड़ा महत्त्व दिया गया है, उसमें किसी भी प्राणी की हत्या कर उसके किसी भी अंग का भक्षण एक महापाप ही माना जायेगा। मनुष्य की प्रकृति मांसाहारी नहीं है, किन्तु उसने विभिन्न प्रकार के प्राणियों को मारकर खाने की आदत डाल ली है, यही नहीं संसार में आज इतने अणु बम तैयार हैं कि इस सृष्टि का 20000 बार सम्पूर्ण विध्वंस किया जा सकता है। सबसे भयानक परिणाम मांसाहार के हैं कि जितना मनुष्य धनी होता है वह उतने ही महंगे भोजन पसंद करता है, चाहे वे शरीर के लिये कितने ही हानिकारक क्यों न हों। मांस में चरबी तथा यूरिक एसिड की बहुतायत है जिससे गुर्दों में क्षार की जमावट से पथरी तथा गुर्दे के रोग और धमनियों का संकड़ा हो जाना सामान्य रोग है। मांस की चरबी से कोलेस्ट्रोल बढ़ जाता है जो हृदय रोग, लकवा इत्यादि उत्पन्न कर सकता है। मांस पर कोई मनुष्य कभी जीवित नहीं रहता। वह तो साथ में सामान्य भोजन लेता ही है। शाकाहार तो आवश्यक है। यदि मांसाहारी भी हो तब भी केवल मांसाहार पर वह जीवित नहीं रह सकता। धनिक लोगों में मांसाहार प्रचलित है। उनमें श्रम का अभाव है। तले व मसालेदार भोजन लेने से धीरे-धीरे रक्तचाप बढ़ता है और हृदयरोग होता है। यही कारण है कि हृदयाघात से अचानक देहान्त होने की घटनाएं प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही हैं। विभिन्न प्रकार के लकवे का होना सामान्य बात हो गई है। मांसाहार से गुर्दे के रोग, लिवर की खराबियाँ एवं मोटापा होते हैं।

मांसाहारी और आदतन अंडे खाने तथा मक्खन लेने वाले कई अमेरिकन सैनिक जब गत लड़ाई में मारे गये तो उनकी रक्त धमनियों में एथरोमा पाया गया। इससे यह स्पष्ट है कि अधिक वसायुक्त मांसाहार हृदयाघात का कारण है। इसी कारण एवं अत्यधिक गरिष्ठ भोजन से हृदय रोग कम आयु में होने लग गया है। आप कई बार 32-35 वर्ष में ही हार्ट एटेक से मौत के समाचार अब प्रायः सुनते हैं।

शरीर में यूरिक एसिड से गठिया रोग हो जाता है, जिसका आधार मांसाहार है। शाकाहारी पर यदि शल्य क्रिया की जाय तो मांसाहारी के अनुपात में रक्त स्राव कम होगा। मांसाहारी पर शल्यक्रिया करने से अधिक खून बहेगा।

आयुर्वेद में शहद की बड़ी महिमा गाई है। जैन-धर्म में शहद को अखाद्य पदार्थ माना गया है। शहद खाना वर्जित है, क्योंकि उसमें मधुमक्खी की हिंसा होती है। पाश्चात्त्य वैज्ञानिकों ने शहद की कोई विशेष उपयोगिता नहीं बताई है। अपने 50 वर्ष के आयुर्विज्ञान अध्ययन में मैंने एक भी अनुभव ऐसा नहीं सुना, जहां शहद की अनिवार्यता पाई गई हो। हम चिकित्सक लोग शहद को किसी काम में नहीं लेते।

आर्द्रा नक्षत्र लगने के बाद आम खाना बन्द करना भी वैज्ञानिक है। बारिश की हवा में आम में गुठली के ऊपर सड़ान आरम्भ हो जाती है। तब आम खाने से पेट खराब हो जाता है। उल्टी-दस्त (Diarhorea) जैसे सामान्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिये उसका निषेध उचित है।(अक्टूबर-1978 से)

-20, यशवन्त कॉलोनी, इन्दौर-452003(मध्यप्रदेश)

ब्रह्मचर्य की बहुआयामी महिमा

डॉ. दिलीप धींग

वर्तमान परिवेश में सामाजिक मान-मर्यादाओं की नई भाषाएँ और परिभाषाएँ गढ़ी जा रही हैं। उनमें कुछ अच्छी, कुछ बुरी और कुछ भ्रामक हैं। दुःखद यह है कि जो ठीक नहीं है, उसे भी ठीक कह-समझकर विभ्रम की स्थिति पैदा की जा रही है। कोई कुछ भी कहे, मानव जीवन की शान्ति और शक्ति अनुशासन और मर्यादाओं में सन्निहित हैं। जब बात स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध और मानव की सामाजिकता की हो तो संयम और आत्म-संयम का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। संयम की रक्षार्थ ही मर्यादा की बाड़ होती है और मर्यादा की बाड़ से ही परिवार और समाज सुखी व सुरक्षित रह पाते हैं। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने विवाह परम्परा का सूत्रपात करके परिवार व्यवस्था की स्थापना की।[1] इससे एक ओर व्यक्ति भीतर-बाहर से स्वस्थ-समर्थ बना, दूसरी ओर समाज को आत्मसंयम और आत्मानुशासन का सुदृढ़ आधार मिला।

विवाह का मूल्य

सामाजिक सांसारिक जीवन में विवाह को मंगलकारी अनुष्ठान माना गया है। विवाह के मंगल या पवित्र होने का कारण यह है कि विवाह के माध्यम से स्त्री-पुरुष अपनी अनिर्दिष्ट और अपरिमित भोगेच्छाओं को केवल एक व्यक्ति के साथ संयोजित और सीमित कर लेते हैं। वस्तुत: यह बहुत बड़ा और उपयोगी संकल्प है। इस संकल्प के साथ अनेक सांसारिक दायित्व, आध्यात्मिक साधनाएँ, त्याग, अनुशासन और जीवन की व्यवस्थाएँ जुड़ी होती हैं। जैन श्रावकाचार के चतुर्थ ब्रह्मचर्य अणुव्रत में इन्हीं दायित्वों, साधनाओं और व्यवस्थाओं का स्पष्ट या गर्भित निरूपण हुआ है। अब दुनियाभर में भारतीय विवाह परम्परा और परिवार-संस्था के गुणगान होने लगे हैं।

ब्रह्मचर्य अणुव्रत के अन्तर्गत सद्गृहस्थ या सद्गृहिणी के द्वारा अपनी जीवनसंगिनी या जीवनसाथी के प्रति पूर्ण निष्ठा व्यक्त की जाती है तथा अन्य समस्त स्त्रियों (पुरुषों के लिए) और पुरुषों (स्त्रियों के लिए) के प्रति विकार-मुक्त सम्बन्ध का सत्संकल्प किया जाता है। जैन ग्रंथों में अपने जीवनसाथी के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाली सन्नारियों को सती/महासती का दर्जा प्रदान किया गया है।[2] इसी प्रकार अपनी जीवनसंगिनी के प्रति निष्ठावान सत्पुरुषों के प्रतिष्ठापूर्ण व्यक्तित्व के बखान किये गये हैं।[3] यह व्रत सदाचार और सामाजिकता की नींव है। मानव के चरित्र को पवित्र व प्रभावी बनाने तथा व्यक्तित्व को मैत्रीपूर्ण व रचनात्मक बनाने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत बुनियादी भूमिका निभाता है। व्यक्ति के चरित्र से ही समाज और देश का चरित्र निर्धारित होता है और जिस समाज और राष्ट्र का चरित्र उज्ज्वल होता है; वह यशस्वी, अजेय और सम्पन्न होता है।

सद्गुणों का आधार

भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य व्रत पर बहुत बल दिया। तेबीसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के समय में चातुर्यामी व्रत व्यवस्था थी। उस व्यवस्था में अपरिग्रह के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य का समावेश मान लिया जाता था। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने व्रतों की व्यवस्था में ब्रह्मचर्य को स्वतन्त्र स्थान दिया।[4] इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी भी कारण या बहाने से ब्रह्मचर्य व्रत के अनुपालन में ढील या उपेक्षा नहीं होनी चाहिये।

जैन श्रावकाचार में ब्रह्मचर्य व्रत के आंशिक या पूर्ण अनुपालन को शीलव्रत की आराधना माना जाता है।

'शील' शब्द का प्रयोग शालीनता, सद्गुण एवं सदाचरण के अर्थ में भी किया जाता है। बौद्ध दर्शन में कहीं सम्यक् चारित्र को शील कहा गया है तो कहीं व्रतों को शील कहा गया है। पंचशील का आशय भी पाँच व्रतों या पाँच श्रेष्ठ नियमों से है। वैदिक साहित्य में भी शील को सदाचार और शिष्टाचार से जोड़ा गया है।[5] इस प्रकार शीलव्रत-आराधन का तात्पर्य सद्गुणों का आराधन, मर्यादा का अनुपालन और आत्मानुशासन है।

अतिचार पर विचार

उपासकदशांग में आनन्द श्रावक भगवान महावीर के समक्ष संकल्प करते हैं - 'मैं स्वपत्नी सन्तोषव्रत ग्रहण करता हूँ।'[6] आवश्यक सूत्र के चौथे व्रत के अनुसार श्रावक देव-देवी सम्बन्धी ब्रह्मचर्य-पालन दो करण तीन योग से तथा मनुष्य और तिर्यंच सम्बन्धी शीलव्रत का आराधन एक करण एक योग से करता है। सांसारिक जीवन की जिम्मेदारियों और व्यावहारिक कठिनाइयों को ध्यान में रखकर इस व्रत को एक करण एक योग से पालने का विधान किया गया है। इस व्रत में वचन और मनोयोग को जोड़ देने से काया योग की निर्मलता और निराकुलता बढ़ती जाती है। इस व्रत के पाँच अतिचार (दोष) बताये गये हैं- **इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनंगकीडा, परविवाहकरणे, काम-भोगतिव्वाभिलासे।**[7]

1. **इत्वरपरिगृहीतागमन :** वाग्दत्ता, अल्पवयस्क या अवयस्क तथा रखैल के साथ मर्यादा के विपरीत आचरण इस अतिचार के अन्तर्गत आता है। यदि विपरीत आचरण स्त्री-पुरुष के समागम में परिणत होता है तो अनाचार हो जाता है। वर्तमान सन्दर्भो में इस प्रकार के सम्बन्धों को शारीरिक, सामाजिक और कानूनी दृष्टियों से वर्जनीय तथा हेय माना जाता है।
2. **अपरिगृहीतागमन :** इस अतिचार का अर्थ किसी भी प्रकार की पराई स्त्री या पर पुरुष के साथ समागम करने की ओर बढ़ना है। जिसका व्रत के द्वारा निषेध है।
3. **अनंगक्रीड़ा :** स्वाभाविक रूप से कामसेवन की बजाय अप्राकृतिक तरीकों और कृत्रिम साधनों से कामक्रीड़ा करना अनंगक्रीड़ा अतिचार है। इस अतिचार के माध्यम से समलैंगिक कामक्रीड़ाओं से कोसों दूर रहने की पावन प्रेरणा भी मिलती है।
4. **परविवाहकरण :** सद्गृहस्थ को चाहिये कि वह एक विवाह के पश्चात् दूसरा (पर) विवाह न करें। वर्तमान में इसका अर्थ अपने परिवार के सदस्यों के विवाह के अतिरिक्त अन्य जनों के विवाह करवाने में आसक्तिपूर्ण दिलचस्पी लेना किया जा रहा है। लेकिन निरपेक्ष भाव और सहयोग भाव से इस सम्बन्ध में किसी की मदद करने का सामाजिक मूल्य है। वर्तमान समय में जहाँ सम्बन्ध जुड़ना कठिनतर हो रहा है; विलम्बित विवाह और अविवाह की स्थितियाँ समाज में पैदा हो रही हैं, वहाँ इस सहयोग का मूल्य और बढ़ जाता है। सामूहिक विवाह की परम्परा का एक कारण यह भी है। ब्रह्मचर्य व्रत का मुख्य लक्ष्य भोगासक्ति घटाना और समाज में सदाचार की स्थापना करना है। विवाह इन्हीं उच्चतर लक्ष्यों से जुड़ा है।
5. **कामभोग की तीव्र इच्छा :** व्रती को कामोत्तेजना को बढ़ाने वाली औषधियों व मादक चीजों का सेवन नहीं करना चाहिये। तीव्र भोगेच्छा से बचने वाला अपनी जीवन-शक्ति, दीर्घजीविता, रचनात्मकता और आध्यात्मिकता को बढ़ाता है।

व्यसनमुक्ति और ब्रह्मचर्य

गृहस्थ जीवन में ब्रह्मचर्य की साधना को समाज-धर्म और मानव-धर्म बनाने के लिए जैनाचार्यों ने मानव-

मात्र को व्यसनमुक्त रहने की प्रेरणा दी है। उन्होंने सप्त कुव्यसन[8] बताये, उनमें से दो व्यसनों के परित्याग से वैवाहिक-मर्यादा और परिवार-संस्था का संरक्षण होता है। ये दो व्यसन हैं - (1) परस्त्री गमन या परपुरुष गमन, तथा (2) वेश्यागमन। एड्स जैसी महामारी के कारण अब चिकित्सक और शरीर-विज्ञानी भी वैवाहिक सीमा पार नहीं करने की हिदायतें देते हैं। पर-स्त्री गमन (पुरुषों के लिए) या पर-पुरुष गमन (स्त्रियों के लिए) अत्यन्त निम्न स्तर का कार्य है। इससे एक या दो व्यक्ति ही नहीं, वरन् दो या दो से अधिक परिवार तहस-नहस हो जाते हैं। परिवार और समाज के गौरव पर इसका विपरीत असर होता है तथा जीवन का स्थायी सुख, सच्ची शान्ति और समृद्धि नष्ट हो जाती है।

गृहस्थ के शीलव्रत के अन्तर्गत वेश्यागमन भी पूर्ण निषिद्ध है। आज दुर्भाग्य यह है कि वेश्यागमन को व्यवसाय और पर्यटन की आड़ में बढ़ावा दिया जा रहा है। गिरावट का नमूना यह है कि 'सैक्स वर्कर' के रूप में पुरुष भी इस कुधन्धे में लगे हुए हैं। जिस समाज व राष्ट्र का युवा निर्वीर्य हो जाता है, सदाचारी नहीं होता है; वह समाज व राष्ट्र विकास के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता है। देह-व्यापार का सह-अस्तित्व, वाणिज्यिक आचार संहिता और सामाजिकता से कोई रिश्ता नहीं है। इसलिए व्यक्ति और देश की आर्थिक प्रगति में उसका कोई योगदान नहीं है। पिछली सदी के पूर्वार्द्ध में जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी ने वेश्याओं को प्रतिबोधित करके उन्हें सदाचारिणी और ब्रह्मचारिणी बनाकर समाज को फिर से यह सन्देश दिया कि घृणा पाप से हो, पापी से नहीं।[9]

सात कुव्यसनों के अन्तर्गत मांसाहार, मदिरापान और शिकार को भी परिगणित किया गया है। ये व्यसन सदाचार और शीलव्रत को खण्डित करने में सहायक बनते हैं। सामिष भोजन और नशाखोरी से व्यक्ति उत्तेजित, उन्मत्त और तामसिकता से ग्रस्त हो जाता है। यही वजह है कि दुराचार की अधिकांश घटनाओं के साथ शराब और कबाब भी जुड़े होते हैं। राजस्थान के राजपूत समुदाय की विधवा महिलाओं के लिए मांसाहार-निषेध का नियम यह सिद्ध करता है कि मांसाहार विकारवर्द्धक होता है। रसना और वासना का गहरा सम्बन्ध है। शील और सदाचार की रक्षार्थ विकारवर्द्धक और तामसिक आहार का निषेध होना चाहिये।

समानता के सन्दर्भ

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रावक के चौथे व्रत के अन्तर्गत सुन्दर समाज व्यवस्था, समर्थ सन्तति, आरोग्य और चरित्रवान नागरिक निर्माण के सारे नियम मौजूद हैं। समाज की शान्ति और समृद्धि इस व्रत पर निर्भर करती है। लड़के का विवाह इक्कीस वर्ष की उम्र से पूर्व और लड़की का विवाह अठारह वर्ष की उम्र से पूर्व करना वर्तमान कानून की दृष्टि से निषिद्ध है। इस व्रत की दृष्टि से भी इसे निषिद्ध माना जाना चाहिये। बाल-विवाह, बेमेल-विवाह, वृद्ध-विवाह का निषेध भी इस व्रत के अन्तर्गत हो जाता है। विधवा-विवाह और विधुर-विवाह को भी प्रचलित सामाजिक परम्परा तथा व्यक्ति विशेष की परिस्थितियों के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिये। जीवन की व्यवस्थाओं के लिए पुनर्विवाह बुरा नहीं है; बुरा है, भोगग्रस्त जीवन। इसी प्रकार व्रत का विधान स्त्री और पुरुष दोनों के लिए हैं। इसलिए प्रत्येक नियम-उपनियम को समानता के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिये।

प्रेम की कसौटी

शीलव्रत के अन्तर्गत न तो स्त्री के लिए पुरुष हेय है और न ही पुरुष के लिए स्त्री हेय है। दोनों ही के लिए वासनात्मक नज़र और नजरिया हेय है। शीलव्रत एक ऐसी साधना है, जिसमें शयन-कक्ष ही साधना-कक्ष बन जाता है। उस कक्ष में साधना करने वालों की रात्रियाँ व्यर्थ नहीं जाती हैं। उनकी निद्रा अलसाई हुई और थकाऊ नहीं होती है; अपितु निद्रा भी योगनिद्रा हो जाती है, जागृति से भर जाती है। भगवान महावीर ने कहा कि जो-जो रात्रियाँ

व्यतीत हो जाती हैं, वे पुनः लौटकर नहीं आती है। धर्म करने वालों की रात्रियाँ सफल और अधर्म करने वालों की रात्रियाँ निष्फल हो जाती हैं।[10] निष्फल रात्रियाँ दिन को भी निष्फल और व्यर्थ बना देती हैं। जिनके रात और दिन व्यर्थ हो जाते हैं, उनके जीवन को सफल व सार्थक बनाना बहुत कठिन हो जाता है। शीलव्रती के जीवन का हर पल महान उद्देश्यों के लिए समर्पित हो जाता है।

शीलव्रत के अन्तर्गत पति-पत्नी का प्रेम शारीरिक प्रेम से ऊपर उठकर उच्चतर और अनुत्तर बनता है। वह हृदय के प्रेम तथा आत्मा के प्रेम में परिणत हो जाता है। जैन इतिहास, कथा और काव्य साहित्य में बाईसवें तीर्थंकर नेमीनाथ और उनकी वाग्दत्ता राजुल के सच्चे प्रेम की वैसी ही उत्कृष्ट परिणति दर्शाई गई है।[11] वस्तुतः शीलव्रत पति-पत्नी के प्रेम की कसौटी है। नश्वर देह के आसरे टिका हुआ प्रेम टिकाऊ तथा शक्तिशाली नहीं होता है। कई बार पढ़ते-सुनते हैं कि एक-दूसरे के लिए मर-मिटने वाले प्रेमी-प्रेमिका या पति-पत्नी एक-दूसरे को मारने-मिटाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस नकारात्मक पराकाष्ठा का एक कारण महज शारीरिक आसक्ति या आकर्षण होना है।

शीलव्रत यानी अखंड सौभाग्य

एक उम्र और दायित्वों की सम्पूर्ति के बाद सद्गृहस्थ को शीलव्रत की आराधना में निष्ठा और संकल्पपूर्वक आगे बढ़ना चाहिये। शीलव्रत मनुष्य को अधिक मनस्वी और तेजस्वी बनाकर उसकी रचनात्मकता को बढ़ाता है। शीलव्रत सेवा और साधना का आधार है तथा सभी साधनाओं का सार भी। जो दम्पती अपने जीवन में आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर लेते हैं, उनका सौभाग्य अखण्ड हो जाता है, क्योंकि उनका प्रेम, शारीरिक प्रेम से ऊपर उठ चुका होता है। अपने जीवनसाथी के चिरवियोग पर शीलव्रती महिला को उसके सामाजिक सौभाग्यसूचक चिह्नों को कायम रखने तथा सभी मांगलिक कार्यो में सहभागिता का सामाजिक नियम बनना चाहिये।

वैसे भी ब्रह्मचर्यमय वैधव्य और वैधुर्य त्यागमय होने के कारण मंगलकारी होता है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने वैधव्यकाल में देश की प्रधानमंत्री रहते हुए देश की बड़ी-बड़ी योजनाओं और परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इसी प्रकार हमारे सामाजिक और धार्मिक कार्यों में माताओं और बहिनों की भेदभावरहित भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिये।

जैन समाज में अनेक दम्पती सभा समारोह में, प्रकट रूप में आजीवन शीलव्रत अंगीकार करते हैं।[12] उनका इन तरह से नियमबद्ध होना समाज के लिए एक बहुत ही शुभ सन्देश होता है। इसलिए शीलव्रत अंगीकार करने वाले श्रावक-श्राविका का समाज की ओर शॉल, साफा (पगड़ी), चुन्दरी, माला आदि से सम्मान किया जाता है। इस सम्मान के साथ समाज की ओर से एक सन्तुलित और श्रेष्ठ भाषा में लिखा हुआ प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किया जाना चाहिये। प्रशस्ति-पत्र से शीलव्रत की महिमा से समाज और सम्बन्धित परिवार की पीढ़ियाँ परिचित और प्रेरित होंगी। इससे नारी-सम्मान अभिवर्द्धन और कुछ सामाजिक रूढ़ियों के उन्मूलन में भी मदद मिलेगी।

वैवाहिक ब्रह्मचर्य

जैन साहित्य में विजयकुमार-विजयाकुमारी दम्पती विवाह करने के उपरान्त भी अपने सत्संकल्प की रक्षार्थ सहर्ष निर्दोष शीलव्रत का पालन करते हैं।[13] जैन समाज में यह कथानक बहुत प्रसिद्ध है। ब्रह्मचर्य की महिमा के शास्त्रीय सन्दर्भो के साथ सन्त अपने प्रवचनों और विद्वान अपने व्याख्यानों में इस कथा को बहुत ही प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करते रहे हैं। अनेक कवियों ने इस कहानी पर स्वतंत्र मनोहर काव्य रचकर शीलव्रत की महिमा को जन-जन के मन-मस्तिष्क में स्थापित किया है। इस कथानक से प्रेरणा पाकर अनेक दम्पती यौवनावस्था में ही शीलव्रत के पालन में अग्रसर हुए और आज भी होते हैं।

श्रीमद् राजचन्द्र से अनुप्रेरित होकर महात्मा गांधी और उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी ने अपने गृहस्थ जीवन में लगभग 38 वर्ष की उम्र में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत (शीलव्रत) ग्रहण कर लिया था।[14] जैन परम्परा में सदियों से चली आ रही वैवाहिक ब्रह्मचर्य की अवधारण और आराधना को गांधीजी ने अपने जीवन में भी अपनाया और दूसरों को भी प्रेरणा दी। इस सम्बन्ध में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का उदाहरण बेहद प्रेरक है। जयप्रकाश की सगाई प्रभावती के साथ हुई। सगाई के उपरान्त वे दोनों महात्मा गांधी से आशीर्वाद लेने पहुँचे। उन्होंने देशसेवा की बात कही। गांधीजी उनका राष्ट्रसेवा का जज्बा देखकर प्रसन्न हुए और उन्हें वैवाहिक ब्रह्मचर्य की प्रेरणा दी। बापू स्वयं ब्रह्मचर्य के आराधक थे। उनके वचनों का प्रभाव जयप्रकाश और प्रभावती पर पड़ा। भारत-रत्न जयप्रकाश नारायण और प्रभावती ने विवाह पूर्व ही ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प कर लिया और देश की सेवार्थ वैवाहिक ब्रह्मचर्य व्रत को आजीवन निष्ठा से निभाया।[15] राजनीतिक क्षेत्र के नारायण दम्पती का यह उदाहरण सभी जनों के लिए आज भी प्रेरणा का प्रकाशस्तंभ बना हुआ है। जब देश की सेवा करते हुए सार्वजनिक जीवन में वैवाहिक ब्रह्मचर्य का उदाहरण पेश किया जा सकता है तो समाजसेवा और धर्म-साधना के साथ शीलव्रत की आराधना से जीवन को अभिनव ऊँचाइयाँ अवश्य दी जानी चाहिये।

ब्रह्मचर्य और आबादी

भगवान महावीर ने ब्रह्मचर्य को मानव और मानव-समाज की बुनियाद के रूप में कई उपयोगी आयामों के साथ स्थापित किया। उन्होंने ब्रह्मचर्य को सभी व्रतों में उत्तम तथा नियम, ज्ञान, श्रद्धा, चरित्र, सत्य, विनय आदि का मूल बताया।[16] अर्थशास्त्रीय दृष्टि से जिस जनसंख्या के सिद्धान्त को अर्थशास्त्री माल्थस ने अठारहवीं शताब्दी के अन्त (1798) में प्रतिपादित किया था, आगम ग्रन्थों में उसका निरूपण उससे तेबीस शताब्दियों पूर्व ही हो चुका था। जैन सूत्रों में ब्रह्मचर्य को नीरस और संन्यासियों का व्रत ही नहीं, अपितु उसे जीवन्त और प्रत्येक सदाचारी मानव के लिए आवश्यक व्रत बताया गया है। जैन साहित्य के अनुशीलन से यह सिद्ध होता है कि जैन गृहस्थों ने गृहस्थ जीवन में भी नियमपूर्वक ब्रह्मचर्य का अनुपालन करके परिवार और समाज में अनुकूल वातावरण का निर्माण किया। इस व्रत ने जनसंख्या-नियन्त्रण के अलावा समाज में सदाचार की स्थापना तथा योग्य, स्वस्थ व समर्थ नागरिकों के निर्माण में महान योगदान किया है। नारी-स्वतन्त्रता और स्त्री-पुरुष समानता जैसे मुद्दों के सम्बन्ध में ब्रह्मचर्य एक केन्द्रीय भूमिका निर्वहन करने वाला निरापद नियम है।

अर्थशास्त्री माल्थस ने अपने जनसंख्या के सिद्धान्त में बताया कि जनसंख्या ज्यामितीय गति (1, 2, 4, 8, 16, 32) से बढ़ती हैं, जबकि खाद्यान्न वृद्धि अंकगणितीय गति (1, 2, 3, 4, 5, 6) से होती है। फलस्वरूप जनसंख्या और खाद्य-पूर्ति में असन्तुलन पैदा हो जाता है। इस असन्तुलन के निवारण का उपाय है - लोग आत्मसंयम (ब्रह्मचर्य) को जीवन का अंग बनायें। यदि जनता आत्मसंयम की राह चुनती है तो प्राकृतिक आपदाओं पर भी नियन्त्रण होता है। माल्थस ने चेतावनी देते हुए कहा था - लोग अपने कामोन्माद को यथासम्भव नियन्त्रण में रखें। यदि वे कामोन्माद को इस ढंग से तुष्ट करते हैं कि जिससे अन्त में अनिवार्य रूप से वेदना होती है तो उपर्युक्त नियम की सुस्पष्ट अवज्ञा ही होगी।[17]

यह आश्चर्यजनक है कि माल्थस के बाद जनसंख्या वृद्धि दर में तो कमी आई, लेकिन जीवन की गुणवत्ता में भी कमी होने लगी। पर्यावरण और आर्थिक विकास का सम्बन्ध जनसंख्या में ही नहीं, संयम की संस्कृति में भी है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि मनुष्य भोगवादी संस्कृति में उलझा रहता है तो जनसंख्या-नियन्त्रण के सुपरिणाम प्राप्त नहीं होते हैं।[18]

अर्थजगत में मर्यादा

आत्मसंयम और मर्यादा की उपेक्षा के परिणामस्वरूप अर्थशास्त्र में नीतिशास्त्र की खुल्लमखुल्ला अवहेलना हो रही है। पर्यटन व्यवसाय में स्वच्छन्द यौनाचार, फिल्म-उद्योग में भद्दे तरीकों से देह-प्रदर्शन और कॉर्पोरेट जगत में विज्ञापनों में नारी-देह को वस्तु की तरह प्रदर्शित करने से मानवीयता और सामाजिकता के अनेक गौरवशाली प्रतिमान ताशपत्तों के महल की भाँति गिर रहे हैं। इससे परिवार टूट रहे हैं, समाज बिखर रहा है और अर्थशास्त्र अपने पुनीत लक्ष्यों से भटकता जा रहा है।

अर्थशास्त्री डॉ. मार्शल ने उत्पादक-श्रम की अपनी अवधारणा से वैश्यावृत्ति या देह-व्यापार को बाहर निकाल दिया था। प्रो. सैलिगमैन ने भी कहा था कि सच्ची आर्थिक-क्रिया परिणामत: सदाचारिक होनी चाहिये।[19]

शीलव्रत और स्वास्थ्य

ब्रह्मचर्य व्रत के खण्डन से अर्थात् वैवाहिक सीमा के उल्लंघन से सारा संसार एड्स नामक जानलेवा महामारी से जूझ रहा है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार संसार में प्रतिदिन करीब 6000 लोग एड्स से जान गँवा देते हैं और करीब 8200 लोग इस जानलेवा रोग से संक्रमित हो जाते हैं।[20] इसके अलावा कृत्रिम उपायों से आबादी-नियन्त्रण के अन्तर्गत मानव-स्वास्थ्य (विशेषत: स्त्री-स्वास्थ्य) तथा नारी-गरिमा के साथ खुल्लम-खुल्ला खिलवाड़ हो रहा है।[21] इन बीमारियों से बचने और बचाने के लिए अपार धन खर्च किया जा रहा है। एड्स और अन्य रोगों से बचने का सर्वाधिक निरापद उपाय आत्मसंयम है। महात्मा गांधी भी जनसंख्या-नियन्त्रण के लिए आत्म-संयम के अभ्यास और विकास की सलाह देते हैं। वस्तुत: आत्मसंयम से जनसंख्या पर ही नियन्त्रण नहीं होता, अपितु अनेक प्रकार की समस्याओं पर भी नियन्त्रण होता है। सच है - **'अणेगा गुणा अहीणा भवंति एक्कंमि बंभचेरे'** - एक ब्रह्मचर्य की साधना से अनेक गुणों का संचार होता है।[22] शासन और प्रशासन को चाहिये कि वह आबादी-नियंत्रण तथा अनाचार की रोकथाम के लिए कृत्रिम और कानूनी उपायों के साथ-साथ नागरिकों को आत्मसंयम की राह पर अग्रसर होने के लिए भी प्रेरित करे।

भगवान महावीर ने अहिंसा, संयम और तप को उत्कृष्ट धर्म बताया है।[23] संयम का एक अर्थ आत्मसंयम या ब्रह्मचर्य भी होता है। इस प्रकार एक संयम के पालन से अहिंसा और तप दोनों की आराधना सुगम, सुफलदायी और प्रभावशाली हो जाती है। फिर, ब्रह्मचर्य व्रत स्वयं ही अहिंसा की आराधना[24] तथा सर्वोत्तम तप है।[25] व्यक्ति, परिवार, समाज, देश, विश्व, पर्यावरण आदि सभी के लिए ब्रह्मचर्य व्रत अतीव हितकारी है।

सन्दर्भ

1. जैन, सागरमल (डॉ.), जैन धर्म-दर्शन और संस्कृति, भाग-3, पृष्ठ-8
2. सोलह सतियों के जीवन-चरित्र में से कुछ सतियों का वैवाहिक जीवन इस तथ्य का प्रमाण है।
3. मुनि चौथमलजी (जैन दिवाकर), जैन दिवाकर ज्योतिपुंज, भाग-14, सेठ सुदर्शन की लावणी, पृष्ठ-365 तथा हेमचन्द्राचार्य रचित कुमारपाल चरितम्, भगवतीमुनि 'निर्मल' द्वारा सम्पादित, पृ.-211
4. उत्तराध्ययन सूत्र 23.12
5. जैन, सागरमल (डॉ.), जैन धर्म-दर्शन और संस्कृति, भाग-3, पृष्ठ-8
6. उपासकदशांग सूत्र 1.16, मधुकर मुनि संपादित पृष्ठ-27
7. उपासकदशांग सूत्र 1.48, मधुकर मुनि संपादित पृष्ठ-43 तथा आवश्यक सूत्र चौथा अणुव्रत
8. देवेन्द्रमुनि (आचार्य), जैन आचार सिद्धान्त और स्वरूप, पृष्ठ 265
9. जैन दिवाकर स्मृति ग्रंथ में पृष्ठ 304 पर अगरचन्द नाहटा का लेख "सन्तों की पतितोद्धारक परम्परा और जैन दिवाकर

मुनि चौथमलजी''
10. उत्तराध्ययन सूत्र 14.24-25
11. आचार्य हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास, पृष्ठ-231 तथा जैन दिवाकर ज्योतिपुंज, भाग-14, पृष्ठ-277
12. देखें, आचार्य हस्ती का जीवन चरित 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पृष्ठ-166
13. सुखलालजी (पद्मभूषण), प्रज्ञा संचयन, पृष्ठ-124
14. देखें, महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' के तीसरे भाग के सातवें व आठवें अध्याय 'ब्रह्मचर्य-1' व ब्रह्मचर्य-2' तथा श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, अगास से प्रकाशित 'श्रीमद् राजचंद्र' ग्रंथ।
15. हिन्दुस्तान रविवारीय, नई दिल्ली, 8 सितम्बर 1996 के अंक में पृष्ठ 4 पर सुशील सिन्हा का लेख। देखें, जयप्रकाश नारायण की जीवनी।
16. 'बंभचेरं उत्तमतव-नियमणाण-दंसण-चरित्त-सम्मत्त, विणयमूलं' - प्रश्नव्याकरण सूत्र 2/4, युवाचार्य मधुकरमुनि संपादित पृष्ठ 213
17. धींग, दिलीप (डॉ.), जैन आगमों का अर्थशास्त्रीय मूल्यांकन, पृ. 297
18. धींग, दिलीप (डॉ.), जैन आगमों का अर्थशास्त्रीय मूल्यांकन, पृ. 298
19. महाप्रज्ञ (आचार्य), महावीर का अर्थशास्त्र, पृ. 110
20. 'नफा-नुकसान' (जयपुर) 9-10 फरवरी 2005 का अंक, पृष्ठ-8
21. वही, पृष्ठ 8
22. प्रश्नव्याकरण सूत्र 2/4, युवाचार्य मधुकरमुनि संपादित पृष्ठ 218
23. 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो' - दशवैकालिक सूत्र 1.1
24. 'अवि य वहो जीवाणं मेहुणं सेवाए होइ बहुगाणं' - भगवती आराधना 922
25. 'तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं' - सूत्रकृतांग 1.6.23

निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079

जिनवाणी पर अभिमत

श्री चन्द्रप्रकाश गाँधी

फरवरी-2017 के जिनवाणी अंक 'जैन धर्म का विज्ञान' में लेखक के विचारों को पढ़ने का मौका मिला एवं मैं स्वयं भी इस मत का समर्थन करता हूँ कि शिक्षा जगत् में विज्ञान का स्थान तो है, लेकिन जैन धर्म शिक्षण का महत्त्व सर्वोपरि है।

'जैन धर्म और विज्ञान' के कार्यों में महान् भेद है। विज्ञान जीवन-मूल्यों की बात नहीं करता, धर्म जीवन-मूल्यों को महत्त्व देता है। संयम, नैतिकता, ईमानदारी, प्रामाणिकता, सहनशीलता, स्वावलम्बन, स्वदोष-दर्शन, आत्म-परिष्कार, पारस्परिक सहयोग का भाव आदि मूल्य धर्माचरण से आगे बढ़ते हैं। मैं स्वयं प्रतिदिन दैनिक सामायिक अजमेर के स्वाध्याय भवन में जाकर करता हूँ तथा दिनभर के लिए यह एक सामायिक संजीवनी का काम करती है। जिससे मुझे 18 पापों के परिणामों की समझ हुई, क्रोध पर लगाम की ताकत मिली, दैनिक व्यवहार में सुधार हुआ।

अतः मैं सम्पादक महोदय प्रो. (डॉ.) श्री धर्मचन्दजी जैन एवं उनकी टीम को बहुत धन्यवाद-साधुवाद देता हूँ कि आपने इस विशेष अंक में 'जैन धर्म और विज्ञान' की जानकारी हम पाठकों को उपलब्ध कराई।

-37, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर-305001 (राज.)

।। श्री महावीराय नमः ।।

पूज्य कुशलगणी की जय ।। जय गुरु हस्ती ।। श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०७४

वीर सम्वत् २५४३-४४ (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् २०१७-२०१८

क्र. सं.	मास-पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
१	चैत्र सुदि	१४ सोम	१०.०४.२०१७	०६-५८	१	-	५ शनि	६ बुध
२	वैशाख वदि	१४ मंगल	२५.०४.२०१७	३७-२५	-	-	-	-
३	वैशाख सुदि	१५ बुध	१०.०५.२०१७	५३-०५	४	-	३ शनि	७ मंगल
४	ज्येष्ठ वदि	३० गुरु	२५.०५.२०१७	४८-२८	१४	२	-	-
५	ज्येष्ठ सुदि	१४ गुरु	०८.०६.२०१७	२६-०८	-	-	१ शुक्र	५ मंगल
६	आषाढ़ वदि	१४ शुक्र	२३.०६.२०१७	१४-५८	-	-	१४ शुक्र	-
७	आषाढ़ सुदि	द्वि. १४ शनि	०८.०७.२०१७	०४-००	१	१४	-	३ सोम
८	श्रावण वदि	३० रवि	२३.०७.२०१७	२३-०३	११	-	१२ गुरु	-
९	श्रावण सुदि	१५ सोम	०७.०८.२०१७	४३-४५	-	-	-	१ सोम
१०	भाद्रपद वदि	३० सोम	२१.०८.२०१७	४४-१५	१३	-	६ बुध	१४ रवि
११	भाद्रपद सुदि	१४ मंगल	०५.०९.२०१७	१५-४३	-	१०	-	-
१२	आश्विन वदि	३० बुध	२०.०९.२०१७	११-१५	५	-	८ बुध	११ शनि
१३	आश्विन सुदि	१५ गुरु	०५.१०.२०१७	४३-५५	-	-	-	-
१४	कार्तिक वदि	३० गुरु	१९.१०.२०१७	४४-५८	८	-	५ मंगल	१० शनि
१५	कार्तिक सुदि	१४ शुक्र	०३.११.२०१७	१७-१५	-	४	-	-
१६	मार्गशिर्ष वदि	३० शनि	१८.११.२०१७	२५-२०	२	-	३ सोम	७ शुक्र
१७	मार्गशिर्ष सुदि	१५ रवि	०३.१२.२०१७	३५-०५	१२	६	१५ रवि	-
१८	पौष वदि	द्वि.१४ रवि	१७.१२.२०१७	०५-१५	४	१४	-	५ गुरु
१९	पौष सुदि	१४ सोम	०१.०१.२०१८	१०-३८	-	-	१३ रवि	-
२०	माघ वदि	प्र.३० मंगल	१६.०१.२०१८	६०-००	१	३०	-	२ बुध
२१	माघ सुदि	१५ बुध	३१.०१.२०१८	२८-४३	१२	-	१० शनि	१५ बुध
२२	फाल्गुन वदि	३० गुरु	१५.०२.२०१८	४८-१०	-	-	-	-
२३	फाल्गुन सुदि	१४ गुरु	०१.०३.२०१८	०४-३८	१५	-	६ शनि	१२ मंगल
२४	चैत्र वदि	१४ शुक्र	१६.०३.२०१८	२८-३८	-	६	-	-

विशेष विवरण

-आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ७ सोमवार ०३.४.२०१७।
-भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ मंगलवार ९.४.२०१७।
-आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ मंगलवार ११.४.२०१७।
-अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा) वैशाख सुदि ३ शनिवार २९.४.२०१७।
-आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की २६ वीं पुण्य तिथि वैशाख सुदि ८ बुधवार ३.५.२०१७।
-भगवान महावीर केवल कल्याणक वैशाख सुदि १० शुक्रवार ५.५.२०१७।
-संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि ११ शनिवार ६.५.२०१७।
-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का २७ वां आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ मंगलवार १६.५.२०१७।
-परम्परा के मूल पुरुष पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २३४ वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ बुधवार १७.५.२०१७।
-क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरतन चन्द जी म. सा. की १७२ वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ गुरुवार ८.६.२०१७।
-२२१ वां क्रियोद्धारक दिवस आषाढ वदि २ रविवार ११.६.२०१७।
-आद्रा नक्षत्र प्रारम्भः आषाढ़ वदि १२, बुधवार २१.६.२०१७। इसके पश्चात् गाज-बीज होने पर सूत्र की असज्झाय नहीं रहेगी ।
-चातुर्मास प्रारम्भ (चातुर्मासी पक्खी) आषाढ सुदि द्वि. १४ शनिवार ८.७.२०१७।
-पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की ९१वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० रविवार २३.७.२०१७।
-पर्युषण महापर्व प्रारंभ भाद्रपद वदि १२, शनिवार १९.८.२०१७।
-संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि ५ शनिवार २६.८.२०१७।
-आयंबिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ७ बुधवार २७.९.२०१७।
-पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म. सा. की पुण्य तिथि आसोज सुदि १० शनिवार ३०.९.२०१७।
-आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि १५ गुरुवार ५.१०.२०१७।
-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि ३० गुरुवार १९.१०.२०१७।
-वीर संवत् २५४४ प्रारम्भ एवं गौतम प्रतिपदा कार्तिक सुदि १ शुक्रवार २०.१०.२०१७।
-स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ कार्तिक सुदि प्र. ४ सोमवार २३.१०.२०१७, इसके पश्चात गाजबीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।
-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ बुधवार २५.१०.२०१७।
-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ५५ वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि ६ गुरुवार २६.१०.२०१७।
-चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) एवं वीर लोकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि १४ शुक्रवार ३.११.२०१७।
- आचार्य पुज्य १००८ श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की १०२ वीं पुण्य तिथि मार्गशीर्ष वदि १२ बुधवार १५.११.२०१७।
- मौन एकादशी मार्गशीर्ष सुदी ११ गुरुवार ३०.११.२०१७।
- भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि १० मंगलवार १२.१२.२०१७।
- फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व (चातुर्मासी पक्खी) फाल्गुन सुदि १४/१५ गुरुवार १.०३.२०१८।
- भगवान आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का ८० वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ शुक्रवार ९.३.२०१८।

गुरु हस्ती के दो फरमान – सामायिक स्वाध्याय महान् | **गुरु हीरा का यह सन्देश – व्यसन मुक्त हो सारा देश**

प्रिय महानुभावो! शुद्ध चित्त से दोनों समय प्रतिक्रमण करने से निर्जरा होती है। उत्कृष्ट रसायन आने से तीर्थंकर गौत्र की उपार्जना होती है। अतः दोनो समय प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। यदि प्रमाद वश न हो सके तो पक्खी का तो अवश्य करना चाहिये। पांचवे आवश्यक के काउसग्ग में देवसी को ४, पक्खी को ८, चौमासी को १२, और सम्वत्सरी को २० लोगस्स का चिन्तन करना अजमेर सम्मेलन का नियम है। सामायिक स्वाध्याय का घर-घर प्रचार करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें व व्यसनों का त्याग करें।

भेंटकर्ता (प्राप्ति स्थान) :- श्री चंचलचन्द सिंघवी 507 ए 5-बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 फोन : 09460767029

श्रमयोगी श्रावक : पुनिया

श्री विजयमुनिजी 'साहित्य रत्न'

श्रम मानव जीवन का मूलमंत्र है। चित्त-शोधन और काय-पोषण श्रम के बिना नहीं हो सकता। श्रमण संस्कृति के मूल में श्रम प्रतिष्ठित रहा है। नैतिक और आध्यात्मिक उभय जीवन के लिए श्रम परम आवश्यक तत्त्व है। मनुष्य अपने तन का, अपने मन का, अपने परिजन का तथा अपने देश का जो छीजन करता है, उसकी पूर्ति बिना श्रम के नहीं हो सकती। आज के समाज और राष्ट्र को ज्ञान योग की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी श्रम योग की आवश्यकता है।

श्रमणों के वचनामृत का सातत्य रूप से पान करने वाला श्रावक पुनिया मगध में रहता था। सादगी, संजीदगी और समता की प्रतिमूर्ति था। उसका जीवन अपने स्वयं के श्रम पर आधारित था। चरखा चला कर, पुनियाँ कातकर वह दो आना रोज कमाता था। जिसमें वह स्वयं और उसकी धर्मपत्नी निर्वाह करते थे। पुनिया श्रावक धर्म साधना के साथ राष्ट्र साधना भी कर रहा था। वह एक ओर समता-योग की साधना कर रहा था, दूसरी ओर चरखा योग से राष्ट्र की सेवा भी कर रहा था। उसका विचार था कि चरखा देश के दारिद्र्य के प्रक्षालन के लिए पुण्य प्रयोग है। धर्ममय और नैतिक जीवन का पुण्य प्रतीक है। जीवन निर्वाह का शुद्ध साधन है। अहिंसा और सत्य के प्रचार का कल्याणमय साधन है।

पुनिया श्रावक आत्मशुद्धि के लिए सामायिक करता था। उसकी सामायिक-साधना धर्म क्षेत्र में एक आदर्श मानी जाती थी। जीवन संधारण के लिए उसने चरखा को पकड़ा था। प्रतिदिन चरखा चलाना उसके जीवन का अटूट नियम था। चरखा योग से वह अपने चित्त की संशुद्धि करता और जीवन निर्वाह के लिए शुद्ध उत्पादन भी। जो उत्पादक नहीं उसे उत्पाद्य वस्तु के उपभोग का अधिकार भी नहीं। श्रमण अपने शुद्ध और पवित्र विचारों से समाज और राष्ट्र की दुर्बलताओं से निरन्तर जीवन भर संघर्ष करता है। अपने समाज के और राष्ट्र के दोषों का परिमार्जन करना एक वैचारिक श्रम है। जिसके कि बिना श्रमण श्रमण ही नहीं रहता।

आज राष्ट्र को श्रम योगियों की आवश्यकता है। आज समाज को सुन्दर और समृद्ध बनाने के लिए सच्चे श्रमण और सच्चे श्रावकों की आवश्यकता है। श्रमण अपने विचार बल से समाज की बुराइयों से लड़े और श्रावक अपने शुद्ध उत्पादन से शुद्ध नैतिक जीवन से समाज की सेवा कर सकते हैं। आज के श्रमण और आज के श्रावक अपनी संस्कृति के मूल श्रम को भूल बैठे हैं। यही कारण है कि आज समाज में से सजीवता और सजगता विलुप्त हो गई है।

पुनिया श्रावक का जीवन एक आदर्श जीवन था। उसके जीवन की कतिपय विशेषताएँ ऐसी हैं जो आज के जीवन में होनी आवश्यक हैं।

1. धनोपार्जन का गृहस्थ जीवन में एक विशेष महत्त्व है, पर उसकी शुद्धि का भी ध्यान रखना होगा। नीतिपूर्वक धनोपार्जन यदि किया जाए तो उससे उस व्यक्ति का और समाज का दोनों का कल्याण है। यह शिक्षा पुनिया श्रावक के जीवन से मिलती है। आवश्यकता से अधिक संग्रह न रखना यह उसकी मर्यादा थी।
2. अतिथि सेवा पुनिया श्रावक के जीवन की दूसरी विशेषता है। पुनिया श्रावक और उसकी पत्नी- दोनों एकान्तर उपवास करते थे। जिसका उपवास होता वह अपने हिस्से का भोजन किसी अतिथि को देकर कृतार्थ होते थे।

इतनी अल्प पूंजी में भी वे अपने दानधर्म को, अतिथि सेवा को नहीं भूले थे।

3. बिना श्रम के अन्न नहीं खाना यह पुनिया श्रावक के जीवन की तीसरी विशेषता है। चरखा कात कर जो मिलता वही नहीं बल्कि अपनी मर्यादा से अधिक वह ग्रहण नहीं करता था। आवश्यकता से अतिरिक्त साधनों का संग्रह कर रखना वह चोरी और पाप समझता था।

आज के समाज और राष्ट्र को पुनिया श्रावक जैसे श्रमणोपासकों की आवश्यकता है। आध्यात्मिक समुन्नति के साथ-साथ अपने जीवन के निर्वाह के लिए शुद्ध साधनों का अवलम्ब लेने वाले श्रावक जिस समाज और देश में हों, वह क्यों न सुखी और समृद्ध होगा। *-जिनवाणी, जुलाई-1956 से गृहीत*

गुरु की उत्तम शिक्षा है, गुरु की उत्तम शिक्षा है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

करके दूर कषायों को तुम, जीवन सरल बनाओ,
क्रोधाग्नि भड़क उठे तो, क्षमा का नीर बहाओ,
गुरु की उत्तम शिक्षा है, गुरु की उत्तम शिक्षा है..।।टेर।।

क्रोधाग्नि की लपटों में, पहले खुद जलता है,
आँखें लाल हो जाती, रक्तचाप बढ़ता है।
क्रोध बड़ा शत्रु है जानो, इसको दूर हटाओ,
गुरु की उत्तम शिक्षा है.....।।1।।

मान, गुमान कभी मत करना, जीवन पतन कराता,
वाणी में कटुता आती है, दुर्गति में ले जाता।
अहंकार है विनाशकारी, मत अभिमान जलाओ,
गुरु की उत्तम शिक्षा है.....।।2।।

छल-कपट करने वाला तो, मायावी कहलाता,
विश्वास नहीं रहता है उस पर, मन में भय भर जाता।
मायावी आदत को छोड़ो, अपनी पैठ बनाओ,
गुरु की उत्तम शिक्षा है.....।।3।।

लोभ पाप का बाप है बंधु, तृष्णा खूब जगाता,
लोभी का है कभी न होता, न्याय नीति से नाता।
तृष्णा के ताण्डव को रोको, मन पर रोक लगाओ,
गुरु की उत्तम शिक्षा है.....।।4।।

'विनर' कहे तुम जागो रे भैया, बात गुरु की मानो,
शिक्षाओं पर ध्यान लगाओ, मत अपनी तुम तानो।
बनकर मुक्त कषायों से तुम, जीवन सफल बनाओ,
गुरु की उत्तम शिक्षा है.....।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

जैन संस्कृति में सेवा-भाव

संकलन : श्री रेणुमल जैन

- जैन समाज ने जन-समाज की सेवा की है। सुदूर इतिहास को अलग रखकर भी केवल गुजरात, मारवाड़, मेवाड़ या कर्नाटक आदि प्रांतों का एक बार भ्रमण करें, पहाड़ों की चट्टानों पर शिलालेख पढ़ें तो मालूम हो जायेगा कि जैन संस्कृति क्या है? उसके साथ जन-सेवा का कितना अधिक घनिष्ठ संबंध है?
- संस्कृति व्यक्ति की नहीं होती, समाज की होती है और समाज की संस्कृति का अर्थ है- समाज अधिक से अधिक सेवा की भावना से ओतप्रोत हो, उसमें द्वेष नहीं, प्रेम हो; द्वैत नहीं, अद्वैत हो; विभिन्नता में भी समानता हो। संस्कृति का यह विशाल आदर्श जैन संस्कृति में पूर्णतया घटित होता है। इसके लिए जैनधर्म का गौरवपूर्ण उज्ज्वल अतीत पूर्णरूपेण साक्षी है। हमें जन-सेवा को ही भगवान की सच्ची उपासना समझनी है।
- भगवान ने अपने प्रवचन में कहा- ''वैयावृत्त्य करने से, सेवा करने से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है।'' साधारण जन-समाज में सेवा का आकर्षण पैदा करने के लिए भगवान महावीर का यह उदात्त प्रवचन महनीय है।
- जैन सम्राट् सम्प्रति सेवा के क्षेत्र में प्रसिद्ध रहे हैं। जैन इतिहास बताता है कि सम्राट् के हृदय में जन-सेवा की भावना किस प्रकार कूट-कूट कर भरी हुई थी और किस प्रकार उन्होंने उसे कार्यरूप में परिणत कर जैन संस्कृति के गौरव को अक्षुण्ण बनाये रखा। महाराजा कलिंग चक्रवर्ती खारवेल और गुर्जर- नरेश कुमारपाल ने भी सेवा के क्षेत्र में जैन संस्कृति की मर्यादा को बराबर सुरक्षित रखा।
- यदि आप सेवा न करें और यह विचार करें कि इसने कभी मेरा काम तो किया ही नहीं। मैं ही इसका काम क्यों करूँ? कष्ट पाता है तो पाए अपनी बला से, मुझे क्या लेना-देना? यह सही सोच नहीं है।
- सेवा धर्म की महिमा में महर्षियों ने कहा है- ''सेवा धर्म अति गहन है। जिसकी महिमा का पार पाने में योगी भी असमर्थ हैं। जिस प्रकार योगी समदृष्टि होता है, शत्रु-मित्र के प्रति समभाव रखता है, सुख-दुःख, अपमान-सम्मान, निंदा-स्तुति, हानि-लाभ आदि की अनुकूलता, प्रतिकूलता में समता से रहता है। उसी प्रकार सेवक भी शत्रु-मित्र के प्रति समता-भाव रखता है तथा सबका हित ही करता है।''
- सेवा में सुख-सुविधा का विशेष त्याग करना पड़ता है। उदाहरणार्थ रोगियों की सेवा में। सेवक को रोगी के मलमूत्र, उल्टी-पीप आदि घृणित पदार्थ साफ करने होते हैं। उसे घृणा को जीतना होता है। रोगी की शुश्रूषा के लिए रात-भर जागना पड़ता है। क्षय, कोढ़, हैजा आदि संक्रामक रोग से ग्रस्त रोगियों के सम्पर्क में आना और स्वयं को रोगग्रस्त होने की संभावना का खतरा उठाकर सेवा करना कितना महान् कार्य है। इसका प्रत्यक्षीकरण विभिन्न सेवा-स्थलों में किया जा सकता है।
- वास्तविकता तो यह है कि भावात्मक सेवा असीम होती है और भावात्मक सेवा की अभिव्यक्ति क्रियात्मक सेवा में होती है।
- सेवा मानव-जीवन की विशेषता है। गृहस्थ ही नहीं साधु-वर्ग को भी सेवा-धर्म को बड़ी कठोरता से पालन करना होता है। भगवान महावीर ने कहा- यदि कोई साधु अपने बीमार या संकटापन्न साथी को छोड़कर तपश्चरण करने लग जाता है, शास्त्र-चिंतन में संलग्न हो जाता है तो वह अपराधी है, संघ में रहने योग्य नहीं है। उसे प्रायश्चित्त लेना पड़ेगा अन्यथा उसकी शुद्धि नहीं हो सकती।

-स्वास्तिक प्लाईवुड, एफ-2, अंजुमन कॉम्पलेक्स, सदर, नागपुर-440001 (महा.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

विज्ञान के आलोक में जीव-अजीव तत्त्व एवं द्रव्य - कन्हैयालाल लोढ़ा, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302002 (राज.), फोनः-0141-2575997, ***पृष्ठ***-280+18, ***मूल्य***- 50 रुपये मात्र, सन् 2016, द्वितीय संस्करण

प्रस्तुत पुस्तक 1994 में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एवं प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'विज्ञान के आलोक में जीव-अजीव तत्त्व' का द्वितीय संवर्द्धित संस्करण है। इसमें जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य विषयक पृथक् से अध्याय जोड़े गए हैं।

वैज्ञानिक जगत् में आत्म-अस्तित्व के विषय में प्रयोग निरन्तर जारी हैं, इसे देखकर वैज्ञानिक डॉक्टर चार्ल्स स्टाइन मेज विज्ञान-जगत् की आगामी उपलब्धियों पर अपना मत व्यक्त करते हुए लिखते हैं- ''महानतम आविष्कार आत्मा के क्षेत्र में होंगे। एक दिन मानव जाति को पुनः प्रतीत हो जाएगा कि भौतिक वस्तुएँ आनन्द नहीं देतीं। तब वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं को ईश्वर और प्रार्थना के अध्ययन की ओर उन्मुख करेंगे। जब वह दिन आयेगा तब मानव जाति एक पीढ़ी में वैज्ञानिक क्षेत्र में उतनी उन्नति कर सकेगी जितनी आज की चार पीढियाँ भी नहीं कर पायेंगी।''

विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों को लिपिबद्ध करते हुए प्रबुद्ध विद्वान् लेखक ने पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पति, धर्म, अधर्म, आकाश, काल द्रव्य, पुद्गल द्रव्य पर विज्ञान के आलोक में विचारपूर्ण लेखन किया है। वे कहते हैं-

1. आज ज्ञान (भौतिक विज्ञान) का विस्तार तो बहुत बढ़ रहा है, परन्तु जीवन में विकास नहीं हो रहा है। जीवन में जड़ता-पाशविकता बढ रही है, चिन्मयता, सात्त्विकता व दिव्यता घट रही है।
2. शक्ति की दृष्टि से देखा जाए तो आत्मा अनन्त विलक्षण शक्तियों का भण्डार है, मन असीम शक्ति का भण्डार है, तन की शक्ति ससीम व स्वल्प है तथा धन आदि भौतिक पदार्थों की शक्ति अत्यल्प है।
3. न्यूयार्क के वैज्ञानिक कल्यू वेक्स्टर ने सन् 1966 में शौध के दौरान पौधे को संवेदनशील तार से जोड़ दिया। उन्होंने देखा कि पौधे को पानी देने पर संवेदन मापक गेल्वेनोमीटर की गति प्रसन्नता को व्यक्त कर रही थी। जैसे ही पौधे को जलाने की बात मन में सोची तो यंत्र ने भय की अभिव्यक्ति दी। कुछ समय के पश्चात् पौधे को डराने के लिए तीली जलाकर वैज्ञानिक वेक्स्टर उसकी ओर बढ़े, परन्तु मन में जलाने का इरादा नहीं था तो यन्त्र में कोई गति नहीं थी। अर्थात् पौधा शान्त था।
4. आधुनिक वनस्पति विज्ञान के जन्मदाता कार्लवान लिनिअस का कहना है कि पौधे बोलने व कुछ सीमा तक गति करने को छोड़कर मानव से किसी भी बात में कम नहीं होते।

यह पुस्तक अनूठी सूचनाएँ देने के साथ मानव को उसके अचिन्त्य शक्तिधारी होने से रुबरु कराती है। जैन-अजैन सभी अध्येताओं के लिए यह पुस्तक पठनीय और मननीय है।

जिनवाणी मासिक पत्रिका वेबसाइट **http://ratnasangh.com** पर उपलब्ध है। वेबसाइट खोलने के पश्चात् **Book** को **Klick** कर के जिनवाणी के अंक देखे जा सकते हैं।

परिणाम

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की थोकड़ा परीक्षा का परिणाम घोषित

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा की परीक्षा) की 08 जनवरी 2017 को आयोजित कक्षा 1 से 8 तक का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया है। परीक्षा परिणाम सम्बन्धी सूचना सभी परीक्षार्थियों को SMS द्वारा भिजवाई जा चुकी है। सभी केन्द्राधीक्षकों को अपने-अपने केन्द्र के परीक्षा परिणाम की सूची भी भिजवाई जा चुकी है। जिन परीक्षार्थियों ने वरीयता सूची में स्थान प्राप्त किया है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित हैं-

अस्थायी वरीयता सूची

(प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
9412	आराधना मनीषजी गुलेच्छा	पाली-मारवाड़ (राज.)	99.50	प्रथम
9710	सपना संजयजी जैन	चालीसगांव (महा.)	99.00	द्वितीय
9235	निशा हार्दिक चोरड़िया	नागपुर (महा.)	98.75	तृतीय
9934	अरुणा अतिलजी काकलिया	यवतमाल (महा.)	98.50	चतुर्थ
9286	प्रीति सुरेशकुमारजी रांका	पल्लावरम (चेन्नई)	98.25	पंचम
9542	कोमल प्रकाशजी तातेड़	मेड़तासिटी (राज.)	98.00	षष्ठ
9487	राखी जम्बूकुमारजी सोलंकी	यादगिरि (कर्नाटक)	98.00	सप्तम
9298	नागेश्वरी ललितजी सांखला	गुमड़ीपुढ़ी (चेन्नई)	98.00	अष्टम
9845	कविता आनन्दजी दर्ड़ा	यवतमाल (महा.)	97.75	नवम
9234	ममता विवेकजी कोटेचा	नागपुर (महा.)	97.50	दशम

(द्वितीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
8515	मीना नरेन्द्रजी चौधरी	वैल्लूर (चेन्नई)	99.00	प्रथम
8739	कविता उमेशजी दाणी	डुंगला (राज.)	98.85	द्वितीय
4190	नरेन्द्रकुमार सुमेरमलजी डागा	बल्लारी (कर्नाटक)	98.80	तृतीय
7191	भाग्यश्री राजेशजी मेहता	मदनगंज (राज.)	98.75	चतुर्थ
9589	चेताली आदेशकुमारजी सोलंकी	आलन्दी-पूना (महा.)	98.75	पंचम
7291	नीलम रमेशजी तखेचा	नागदा जंक्शन (महा.)	98.50	षष्ठ
9322	पुष्पा कांतिलालजी कटारिया	इलकल (कर्नाटक)	98.50	सप्तम
8758	मंजू प्रफुल्लजी सुराणा	हांगकांग	98.50	अष्ठम
5170	दिपाली प्रवीणकुमारजी नाहटा	बोलठाण (महा.)	98.50	नवम
7558	किरण निर्मलजी नागोरी	डुंगला (राज.)	98.50	दशम

(तृतीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
3208	सरुचि रोहितजी जैन	दिल्ली	99.75	प्रथम
2446	अंशुमा संदीपजी चोरडिया	जलगांव (महा.)	99.50	द्वितीय
7388	शर्मिला संदीपजी खिंवसरा	वैशालीनगर-अजमेर (राज.)	99.25	तृतीय
7301	मोना पुरिन्दरजी जैन	शार्दुलगढ़	99.00	चतुर्थ
7984	वर्षा अमितजी छाजेड़	वैजापुर (महा.)	98.75	पंचम
6746	उज्ज्वला रमेशजी बैद	वर्धा (महा.)	98.50	षष्ठ
3612	गणपत मांगीलालजी बागमार	चिंतादरीपेठ (चेन्नई)	98.50	सप्तम
641	वंदना दीपकजी छाजेड़	बुलढ़ाणा (महा.)	98.00	अष्टम

7848	निधि कुलदीपजी खिंवसरा	पावटा-जोधपुर (राज.)	98.00	नवम
3737	चित्रा सतीशजी मुगदिया	वैजापुर (महा.)	98.00	दशम

(चतुर्थ कक्षा)

6246	अंजलि दीपकजी कोठारी	मदनगंज (राज.)	98.75	प्रथम
6318	सुनीता मंगेशजी लोढ़ा	शिरडी (महा.)	98.50	द्वितीय
5387	रिया कीर्तिकुमारजी सुराणा	हिंगणघाट (महा.)	98.00	तृतीय
2868	उषा अरविन्दजी कटारिया	विजयवाड़ा (कर्नाटक)	97.75	चतुर्थ
4325	विनीता अमितजी रांका	वडपलनी (चेन्नई)	97.75	पंचम
4204	रीना योगेशजी बारोला	कांचीपूरम (चेन्नई)	97.75	षष्ठ
5812	नीलम संजीवजी जैन	शादुलगंज (पंजाब)	97.75	सप्तम
4447	बबीता विमलजी गादिया	रेडहिल्स (चेन्नई)	97.75	अष्टम
5672	मलका रविन्दकुमारजी मुणोत	गंजवसोदा (मध्यप्रदेश)	97.50	नवम
334	बबीता महेन्द्रकुमारजी बाफना	जलगांव (महा.)	97.50	दशम

(पाँचवी कक्षा)

2223	पूजा रविन्द्रजी गिड़िया	पावटा-जोधपुर (राज.)	97.00	प्रथम
3594	उज्ज्वला कमलेशजी कासबा	हिंगणघाट (महा.)	96.50	द्वितीय
1277	आरती रवीन्द्रजी चोरडिया	जामनेर (महा.)	96.00	तृतीय
3590	शिल्पा गौतमजी रांका	हिंगणघाट (महा.)	95.00	चतुर्थ
3784	महावीरचन्दजी अल्पूचन्दजी खाबिया	वेलीचेरी (चेन्नई)	93.75	पंचम
3242	अंकिता गुंजनजी बटाकिया	नागपुर (महा.)	93.50	षष्ठ
245	कांता अरिवन्दजी मेहता	इन्दौर (मध्यप्रदेश)	93.00	सप्तम

(छठी कक्षा)

2678	अंतिमा मनोजजी गुलेच्छा	विलिपूरम् (चेन्नई)	98.50	प्रथम
2059	तिलोत्तमा सुरेशचन्दजी ओस्तवाल	भड़गांव (महा.)	98.00	द्वितीय
3086	दीपिका आशीषजी पगारिया	विरूगमबाकम (चेन्नई)	97.50	तृतीय
2998	शोभा मदनलालजी लुणावत	भड़गांव (महा.)	97.25	चतुर्थ
923	संगीता महेन्द्रजी बोहरा	स्वाध्याय भवन-चेन्नई	97.00	पंचम
425	रूपल प्रशान्तजी शाह	नागपुर (महा.)	97.00	षष्ठ
3096	प्रेमलता सुभाषजी कोठारी	विरूगमबाकम (चेन्नई)	96.50	सप्तम

(सातवीं कक्षा)

2240	अनुराधा अविनाशकुमारजी पींचा	चिंतादरीपेठ (चेन्नई)	99.55	प्रथम
428	अरूणा गौतमजी सिंगवी	नागपुर (महा.)	99.25	द्वितीय
437	हंसा विजयकुमारजी चोरडिया	नागपुर (महा.)	98.75	तृतीय
2002	मंजुला झूमरलालजी सोलंकी	पूना (महा.)	98.50	चतुर्थ
8000	दीपिका हरीशकुमारजी जैन	अलीगढ़ (राज.)	96.00	पंचम
868	साधना विजयजी बोरा	खामगांव (महा.)	95.50	षष्ठ
2243	सुनीता सुन्दरलालजी गोलेच्छा	कोंडीतोप (चेन्नई)	94.00	सप्तम

(अष्टमीं कक्षा)

4287	दर्शना धर्मेन्द्रजी तालेड़ा	मैसूर (कर्नाटक)	99.90	प्रथम
133	भारती शैलेन्द्रजी डोसी	ब्यावर (राज.)	99.75	द्वितीय
543	शर्मिला महावीरजी धोका	मैसूर (कर्नाटक)	99.65	तृतीय
1353	मीना गौतमचन्दजी ललवाणी	मालेगांव केम्प (महा.)	99.50	चतुर्थ
4288	लीना रिखबचन्दजी गना	मैसूर (कर्नाटक)	99.40	पंचम
412	शोभा नरेशजी चोरडिया	नरड़ाणा (महा.)	99.25	षष्ठ

954 ललिता पदमजी नाहर सैदापेठ (चेन्नई) 99.15 सप्तम

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा कक्षा 1 से 12 तक के लिए **16 जुलाई 2017** को आयोजित की जायेगी। परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर (राज.)- फोनः 0291-263490, फैक्सः 2636763, Website : jainratnaboard. com, E-mail:shikshanboardjodhpur@gmail.com, info@jainratnaboard. com

इस परीक्षा की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

कुल आवेदक	परीक्षा में भाग लेने वाले	उत्तीर्ण परीक्षार्थी	उत्तीर्ण का प्रतिशत	कुल परीक्षा केन्द्र
2768	**1823**	**1640**	**90**	**204**

अशोक चोरडिया — संयोजक — 9414129162

नवरतन गिड़िया — सचिव — 9414100759

धर्मचन्द जैन — रजिस्ट्रार — 9351589694

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से बने शीलव्रतधारियों के नाम गतांक से आगे (26 नवम्बर 2015 से 12 नवम्बर 2016 तक)

चेन्नई–श्रीमती एवं श्री उगमराजजी बाफणा, 2. श्रीमती एवं श्री सुरेशचन्दजी जैन(कजानीपुर), 3. श्रीमती एवं श्री शांतिलालजी खिंवसरा (तक्कोलम्), 4. श्रीमती एवं श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी (मनाली), 5. श्रीमती एवं श्री महावीरचन्दजी ओस्तवाल, **दुब्बी**– 1. श्रीमती एवं श्री कल्याणजी सहाय, 2. श्रीमती एवं श्री घासीलालजी सैन, **खेड़ली**– 1. श्रीमती एवं श्री महावीरप्रसादजी जैन, **कानोता**– 1. श्रीमती एवं श्री घनश्यामजी शर्मा, **पालड़ी मीणा**– 1. श्रीमती एवं श्री कैलाशजी शर्मा, **वृंदावन विहार (जयपुर)**– 1. श्रीमती एवं श्री भगवानसिंह राजपूत, **जवाहरनगर (जयपुर)**– 1. श्रीमती एवं श्री राजेन्द्रजी पटवा, **मानसरोवर (जयपुर)**–1. श्रीमती एवं श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, **शक्तिधाम (जयपुर)**– 1. श्रीमती एवं श्री कन्हैयालालजी जैन, **(जयपुर)**– 1. श्रीमती एवं श्री कैलाशचन्दजी बम्ब, **मॉडल (महा.)**–1. श्रीमती एवं श्री अशोककुमारजी खिंवसरा (वीरपिता), **नासिक**– 1. श्रीमती एवं श्री सुनीलकुमारजी खिंवसरा, 2. श्रीमती एवं श्री नेमीचन्दजी बागरेचा, **किशनगढ़**– 1. श्रीमती एवं श्री प्रेमचन्दजी मोदी, 2. श्रीमती एवं श्री राजेन्द्रसिंहजी मेहता, 3. श्रीमती एवं श्री श्रीचन्दजी हरकावत, 4. श्रीमती एवं श्री पन्नालालजी बाफणा, 5. श्रीमती एवं श्री भीकमचन्दजी लोढ़ा, **पाली**– 1. श्रीमती एवं श्री ऋषभचन्दजी सिंघवी, **भीलवाड़ा**– 1. श्रीमती एवं श्री सुरेन्द्रजी कटारिया, **भरतपुर**– 1. श्रीमती एवं श्री त्रिलोकचन्दजी जैन (पटवारी), **विजयनगर (अजमेर)**– 1. श्रीमती एवं श्री कैलाशचन्दजी बुरड़, **दूदू**– 1. श्रीमती एवं श्री पारसमलजी कोठारी, **टोड़ा भीम**– 1. श्रीमती एवं श्री अमरचन्दजी सोनी, **शिवाजीनगर (मदनगंज)**– 1. श्रीमती एवं श्री शान्तिलालजी कोचेटा, 2. श्रीमती एवं श्री प्रमोद्कुमारजी कोचेटा, **मदनगंज**– 1. श्रीमती एवं श्री राजेन्द्रजी डाँगी, 2. श्रीमती एवं श्री महेन्द्रजी डाँगी, **अरिहन्त कॉलोनी (अजमेर)**– 1. श्रीमती एवं श्री फतेहमलजी बोहरा, 2. श्रीमती एवं श्री चैनसुखजी चंगेरिया, 3. श्रीमती एवं श्री रामावतारजी जैन, 4. श्रीमती एवं श्री रामकिशनजी शर्मा, 5. श्रीमती एवं श्री धर्मचन्दजी रांका, **माखुपुरा**– 1. श्रीमती एवं श्री हस्तीमलजी खटोड़, **मेसियाँ**– 1. श्रीमती एवं श्री दलपतसिंहजी, 2. श्रीमती एवं श्री औंकारसिंहजी, 3. श्रीमती एवं श्री नरपतसिंहजी, **बैंगलोर**– 1. श्रीमती एवं श्री निर्मलकुमारजी बम्ब, **कानपुर**– 1. श्रीमती एवं श्री महावीरचन्दजी संकलेचा, **मैसूर**– 1. श्रीमती एवं श्री मोतीलालजी रांका, **कोप्पल (कर्नाटक)**– 1. श्रीमती एवं श्री रिखबचन्दजी मेहता। **(कुल आजीवन शीलव्रती युगल = 322)**

रत्नसंघ में पाँच मुमुक्षुओं ने अपनाया प्रव्रज्या पथ

संवत् 2073 का माघ माह जिनशासन के रत्नसंघ में विशेष खुशियाँ लेकर आया। माघ शुक्ला दशमी 06 फरवरी, 2017 को जलगाँव में **मुमुक्षु सुश्री हिमांशीजी कांकरिया** सुपुत्री श्री भँवरलालजी-विमलादेवीजी कांकरिया ने अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की अनुज्ञा से 20 वर्ष की युवावय में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के मुखारविन्द से प्रव्रज्या पथ अंगीकार किया। इसके पश्चात् पीपाड़ में स्वयं पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन मुखारविन्द से **मुमुक्षु डॉ. अशोकजी कवाड़** सुपुत्र श्री दलीचन्दजी-अमरावबाईजी कवाड़-चेन्नई ने 52 वर्ष की वय में, **मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़** सुपुत्र डॉ. अशोकजी-उषाजी कवाड़-चेन्नई ने 28 वर्ष की युवावय में, **मुमुक्षु श्रीमती उजासबाईजी** धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलालजी डाकलिया-जोधपुर ने 57 वर्ष की वय में तथा **मुमुक्षु सुश्री मधुबालाजी कवाड़** सुपुत्री श्री प्रेमचन्दजी-ललिताबाईजी कवाड़-चेन्नई ने 26 वर्ष की वय में पीपाड़ की पुण्यधरा पर पावन प्रव्रज्या स्वीकार की। जलगांव एवं पीपाड़ दोनों नगरों में उत्साह एवं उमंग का वातावरण रहा। शोभायात्रा हो या अभिनन्दन समारोह, अभिनिष्क्रमण यात्रा हो या दीक्षा-विधि सभी कार्यक्रमों में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं की भारी उपस्थिति रही। पीपाड़ में लगभग 7-8 हजार श्रद्धालु उपस्थित थे। सार्वजनिक स्थलों के साथ घरों में भी ठहरने की व्यवस्था की गई। सबके मन में दीक्षा के प्रति उल्लास देखा गया। जलगांव में संघ के साथ शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना की महत्त्वपूर्ण भमिका रही, तो पीपाड़ में संघ के साथ कवाड़ परिवार ने दीक्षा आयोजन का विशेष लाभ लिया। पूर्व श्रावक श्रीमान् पृथ्वीराजजी कवाड़ एवं सुश्राविका श्रीमती सुन्दरबाईजी कवाड़ की उदारता, संघनिष्ठा एवं समर्पण भावना कवाड़ परिवार के इस दीक्षा-आयोजन में प्रतिबिम्बित हो रही थी।

जनवरी 2017 की जिनवाणी में एक दीक्षा जलगाँव में तथा दो दीक्षाएँ पीपाड़ में सम्पन्न होने के समाचार एवं तीन मुमुक्षुओं के परिचय प्रकाशित हुए थे। किन्तु इसके अनन्तर क्रमशः श्राविकारत्न श्रीमती उजासबाईजी डाकलिया-जोधपुर तथा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई ने भी अपने परिवारजनों की आज्ञा प्राप्त कर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. से पीपाड़ में 09 फरवरी को आयोज्य दीक्षा कार्यक्रम में दीक्षित करने हेतु भावभरी प्रार्थना की। वैराग्य की तरंगें संसार की असारता को अभिव्यक्त कर रही थीं। पूज्य आचार्यप्रवर ने उनकी वैराग्य भावना एवं साधु जीवन अंगीकार करने की योग्यता का सहज आकलन कर 09 फरवरी की दीक्षा हेतु आज्ञा प्रदान की। आज्ञा प्राप्त होते ही पीपाड़ में आयोज्य दीक्षा कार्यक्रम के प्रति उत्साह चतुर्गुणित हो गया। मोबाइल के माध्यम से व्हाट्स एप पर यह सूचना तुरन्त सम्पूर्ण देश में प्रसारित हुई तो सर्वत्र आश्चर्यमिश्रित खुशियाँ छा गईं। पीपाड़ नगर की गलियों में स्थान-स्थान पर दीक्षा के सम्बन्ध में सुभाषित वाक्य एवं मुमुक्षुओं के पोस्टर लगने लगे।

रत्नसंघ में यह प्रथम अवसर था जब किसी संघ के कार्याध्यक्ष सदृश पदाधिकारी ने पावन प्रव्रज्या पथ अपनाया हो। डॉ. अशोकजी अखिल भारतीय श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष ही नहीं उपाध्यक्ष भी रहे। वे अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष एवं निदेशक भी रहे तथा आध्यात्मिक शिक्षा समिति का भी अत्यन्त रुचि के साथ निदेशक का कार्य सम्भाला। संघ के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित डॉ. अशोकजी कवाड़ सी.ए. होने के साथ जैन

दर्शन में एम.ए. एवं पी-एच्.डी. हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ. अशोकजी कवाड़ अपने सुपुत्र को आज्ञा प्रदान करने के साथ ही स्वयं भी संयम पथ स्वीकारने का मानस बना चुके थे। वे अंतरंग तैयारी में लगे हुए थे। पृथ्वी एक्सचेंज का कारोबार उन्होंने व्यवस्थित कर लघुपुत्र श्री पवनकुमारजी को सम्भलाया तथा स्वयं ने उसके त्याग का मानस बना लिया। वीर पिता श्री दलीचन्दजी कवाड़, वीर माता श्रीमती अमरावबाईजी कवाड़, सास-ससुर श्रीमती राजकुमारीजी एवं पानमलजी दुगड़, धर्मसहायिका श्रीमती उषाजी कवाड़, सुपुत्र मुमुक्षु श्री कल्पेशजी एवं श्री पवनकुमारजी तथा पुत्रवधू श्रीमती रिश्तीजी कवाड़ धन्य है जिन्होंने साहस दिखाकर एक सुयोग्य गृहस्थ को सुयोग्य संत बनने हेतु आज्ञा प्रदान की। दीक्षा तिथि 09 फरवरी के चार दिन पूर्व 05 फरवरी को दीक्षा की घोषणा हुई। उनका न कोई दीक्षा कार्ड छपा और न ही विभिन्न नगरों में अभिनन्दन हुआ। आदर्श गृहस्थ ने दीक्षा भी उसी प्रकार सहज अंगीकार की।

पीपाड़ में जन्मी बचपन से ही स्वाध्याय के प्रति रुचिशील, धर्मनिष्ठ, मुमुक्षु श्रीमती उजासबाईजी डाकलिया को उनके सुपुत्र श्री रौनकजी एवं श्रीमती रेखाजी डाकलिया ने दीक्षा की अनुमति देकर संयम का मार्ग प्रशस्त किया।

08 फरवरी को आयोजित अभिनन्दन समारोह में पीपाड़ में मुमुक्षुओं ने जो भावाभिव्यक्ति की उसे सुनकर समस्त श्रोता रोमांचित हो उठे, आँखों से अश्रु ढलक आए तथा उनके अहोभाव की मन-ही-मन प्रशंसा करने लगे। **मुमुक्षु डॉ. अशोकजी कवाड़** ने कहा- ''संयम के बिना यह आत्मा पवित्र नहीं होती। संयम ही ऐसा पथ है, जहाँ निष्पाप जीवन जीया जाता है।'' **मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़** ने कहा- ''अब मुझे करुणावान, लगनशील, पवित्र और शीलवान बनना है।'' **मुमुक्षु श्रीमती उजासजी डाकलिया** ने कहा-''मेरे बचपन की संयम भावना, पचपन में आकर पूरी हो रही है।'' **मुमुक्षु सुश्री मधुबालाजी कवाड़** ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा- '' मैं संयम लेना चाहती हूँ, यह अधूरा सत्य है, पूर्ण सत्य तो यह है कि मैं संयम को जीना चाहती हूँ।''

09 फरवरी को आयोजित दीक्षा समारोह में सबके नेत्र मुमुक्षुओं के दीक्षा पाठ ग्रहण करने की ओर केन्द्रित थे। इस दीक्षा से अनेकों के मन में वैराग्य का पोषण हुआ एवं सबने चारित्र का अनुमोदन किया।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शासनकाल में रत्नसंघ सतत दीप्तिमान हो रहा है। आपके शासनकाल में **इन पाँच दीक्षाओं को मिलाकर अब तक 94 दीक्षाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं,** जिनमें 19 संत और 75 महासतियों ने संयम अंगीकार किया है। पीपाड़ नगर की महत्ता भी निरन्तर बढ़ रही है। पूज्य आचार्य हस्ती पीपाड़ के थे, पूज्य आचार्य हीरा पीपाड़ के हैं। डॉ. अशोकजी कवाड़, श्री कल्पेशजी कवाड़, सुश्री मधुबालाजी कवाड़ भी पीपाड़ के हैं तो श्रीमती उजासजी डाकलिया पीहर पक्ष से पीपाड़ की हैं।

पीपाड़ शहर में चार मुमुक्षुओं की शोभा यात्रा, अभिनन्दन समारोह एवं दीक्षाएँ

शोभायात्रा-

पुण्यधरा पीपाड़ में चार मुमुक्षुओं की जैन भागवती दीक्षा महोत्सव का आगाज 8 फरवरी 2017 को प्रातः 10.30 बजे शोभायात्रा से हुआ। दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करने हेतु देशभर के अनेक स्थानों से श्रावक-श्राविकाएं, आबाल वृद्ध पीपाड़ शहर पहुँच चुके थे। 8 फरवरी भोर से ही पीपाड़ एवं आसपास ग्राम-नगरों से भी श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही थी। मुमुक्षु डॉ. अशोक जी कवाड़, श्री कल्पेश जी कवाड़, श्रीमती उजास जी डाकलिया एवं सुश्री मधु जी कवाड़ परिजनों के साथ अपने-अपने निवास स्थान से स्थानक में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पहुंचे तथा मांगलिक प्राप्त की। संयम मार्ग पर अग्रसर होने हेतु तत्पर मुमुक्षुओं के चेहरे पर अपूर्व प्रसन्नता के भाव देखकर उपस्थित जन समूह भाव-विभोर हो रहा था। मुणोत स्वाध्याय भवन से प्रारम्भ हुई

शोभायात्रा में सर्वप्रथम सुव्यवस्थित बैण्ड वादकों की ध्वनियां चारों ओर स्वर-सुमन बिखेर रही थी। उसके पश्चात् मुमुक्षु डॉ. अशोक जी कवाड़ तथा मुमुक्षु श्री कल्पेश जी कवाड़ हाथ जोड़ कर सभी का अभिवादन कर रहे थे। पुरुष वर्ग अधिकांशतः सफेद गणवेश में दीक्षा के नारों को गुंजायमान करते हुए कतारबद्ध चल रहे थे। उनके बाद भजन मण्डली संयम-भावना से ओतप्रोत भजनों के माध्यम से पीपाड़ नगरी को भक्ति के रस में सराबोर कर रही थी। तत्पश्चात् दोनों मुमुक्षु बहिनें श्रीमती उजास जी डाकलिया तथा सुश्री मधुबाला जी कवाड़ जनसमूह का हाथ जोड़ कर अभिवादन करते हुए शोभायमान हो रही थी। अन्त में महिलाएं चून्दड़ी साड़ी में तथा बालिकाएं एक-सी वेशभूषा में व्यवस्थित चलते हुए संयम-महिमा के गीत गाते हुए चल रही थी। विभिन्न स्थानों पर मुमुक्षु भाई-बहिनों का स्वागत किया गया। शोभायात्रा पीपाड़ शहर के प्रमुख स्थलों से होती हुई मुमुक्षु अशोक जी कवाड़ के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई।

संयम-पथ की दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रभावित कर गई मुमुक्षुओं की अभिव्यक्ति

श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट) के विशाल प्रांगण में दोपहर 1 बजे से ही आगन्तुक अपने स्थान पर विराजने लगे। दोपहर 2.30 बजे वीर परिवार एवं दीक्षार्थी भाई-बहिनों का अभिनन्दन समारोह प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम मंच संचालन करते हुए श्री सुमतिचन्द जी मेहता तथा नमन जी मेहता ने समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के गृहमंत्री **माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया,** विशिष्ट अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निदेशक माननीय **श्री रवि जी जैन,** सम्माननीय अतिथि अलवर जिला एवं सत्र न्यायाधीश **श्री हेमन्त कुमार जी जैन,** पीपाड़ शहर विधायक **श्री गर्ग साहब,** पीपाड़ नगर पालिका अध्यक्ष **श्री महेन्द्र सिंह जी कच्छवाहा** सहित संघ के महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों को मंच पर आमंत्रित किया। दीक्षार्थी भाई-बहिन भी जय-जयकारों के बीच मंच पर आसीन हुए। मंगलाचरण के पश्चात् पधारे हुए सभी अतिथिजनों का संघ द्वारा माल्यार्पण, शॉल तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया।

संघ सेवा शिरोमणि माननीय **श्रीमान् मोफतराजजी मुणोत** ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि सर्वप्रथम मैं पीपाड़ की धरा को प्रणाम करता हूँ, जिस धरा ने जिनशासन में आचार्य हस्ती एवं आचार्य हीरा को प्रदान किया। आज तक गुरु हीरा के शासन में 90 दीक्षाएँ हो चुकी हैं। चार कल होने वाली है। इसी पीपाड़ में पिता और पुत्र की साथ में दीक्षा, एक परिवार से तीन दीक्षा, संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष की दीक्षा, पीपाड़ की दीक्षा, ये हम सब के लिए गौरव की बात है। श्री कटारिया साहब गृहमंत्री तो हैं ही, साथ ही श्रद्धाशील श्रावकरत्न भी हैं। श्री रविजी जैन, होनहार आई.ए.एस. अफसर हैं, पीपाड़ के भानजे हैं, इनका भी स्वागत है। भाई हेमन्तकुमारजी जैन का भी स्वागत है। श्री महेन्द्रसिंहजी कच्छवाहा जिन्होंने दीक्षा आयोजन में महती भूमिका निभायी, उनका भी हार्दिक स्वागत है। मुमुक्षु भाई अशोक जी कवाड़, जो विगत 15 वर्षो से संघ-सेवा में कार्यरत रहे हैं। कल्पेशजी भी पिताजी के पदचिह्नों पर चल रहे हैं। कवाड़ परिवार आचार्य भगवन्त की सेवा में सर्वतोभावेन समर्पित रहा है। सुश्राविका श्रीमती उषाजी कवाड़ को भी मैं नमन करता हूँ, जिन्होंने पति और पुत्र को रत्नसंघ में सहर्ष समर्पित कर वीरता का परिचय दिया है। श्रीमती उजासजी डाकलिया की दीक्षा कराने में श्री सुमतिचन्दजी मेहता का भी बड़ा योगदान रहा है। मधुजी कवाड़ की तो क्या बात करें इन्हीं के कारण ही पीपाड़ में दीक्षा होने जा रही है। संघ के पूर्व पाँचों अध्यक्षों का भी हार्दिक स्वागत है। आदरणीय रतनलालजी बाफना साहब को रत्नसंघ विभूषण से सम्मानित किया जा रहा है, उनका भी हार्दिक स्वागत करता हूँ। सभी वीर परिवारों का, सुदूर एवं नजदीक से पधारे सभी श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का भी हार्दिक स्वागत है।

स्वागत भाषण के पश्चात् वीर परिवारों का अभिनन्दन किया गया। वीर पिता एवं वीर दादा श्री दलीचन्द जी कवाड़, वीर श्वसुर जी श्री पानमल जी दुग्गड़, वीर पिता श्री प्रेमचन्द जी कवाड़, वीर पुत्र श्री रौनक जी डाकलिया का संघ द्वारा माला एवं शॉल से अभिनन्दन किया गया। साथ ही वीर दादी एवं वीर माता श्रीमती अमरावबाई जी कवाड़, वीर धर्मपत्नी श्रीमती उषाबाई जी कवाड़, वीर सासूजी श्रीमती राजकुमारी जी दुग्गड़, वीर माता श्रीमती ललिताबाई जी कवाड़, वीर पुत्रवधू श्रीमती रेखा जी डाकलिया का संघ द्वारा माला एवं चून्दड़ी से अभिनन्दन किया गया। सभी वीर परिवारों को संघ की ओर से रजत पट्टिका प्रदान की गई।

अभिनन्दन समारोह के अन्तर्गत शासन सेवा समिति के संयोजक आदरणीय **श्रीमान् रतनलाल जी बाफना को संघ-दीप्ति में अतुलनीय एवं अमूल्य योगदान हेतु 'रत्नसंघ विभूषण'** सम्मान से अलंकृत किया गया। उक्त सम्मान हेतु आदरणीय बाफना साहब को अतिथिगणों ने माला, शॉल, अभिनन्दन पत्र के साथ ही रजत पट्टिका प्रदान की। आदरणीय बाफना साहब ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि संघ ने मुझे बहुत प्रेम दिया, सम्मान दिया। आज जो अभिनन्दन किया, उसके लिए संघ के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मुमुक्षु बन्धुओं के प्रति हार्दिक आभार एवं नमन करता हूँ।

अभिनन्दन समारोह के **सम्माननीय अतिथि श्री हेमन्तजी जैन** ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि अभिनन्दन का यह समारोह मुमुक्षु आत्माओं के लिए है। जिस प्रकार दीपक स्वयं आलोकित होकर जन-जन को प्रकाशित करता है, वैसे ही जैन संत स्व-कल्याण के साथ जन-जन के कल्याण में निरत रहते हैं। वे पाँच महाव्रतों का कठोरता से पालन करते हैं। आज के इस सुविधा भोगी युग में इनका त्याग, महान् त्याग है। विरले महापुरुष ही संयम की राह पर चल पाते हैं। ऐसे मुमुक्षु आत्माओं की मैं हार्दिक अनुमोदना करते हुए उन्हें नमन करता हूँ। संत परम्पराओं में जैन परम्परा के सन्तों का अपना उत्कृष्ट स्थान है। जिस तरह समुद्र में प्रकाश स्तम्भ मार्गदर्शक बनते हैं, उसी प्रकार जैन संत एवं सतियाँ भी मार्गदर्शक बनते हैं। अन्त में चारों मुमुक्षु आत्माओं को वन्दन करता हूँ। इनके वीर परिवार को भी नमन करता हूँ।

समारोह में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए मुमुक्षु अशोक जी कवाड़ की **वीर धर्मपत्नी श्रीमती उषाजी कवाड़** ने फरमाया कि कल 09 फरवरी है। कल की 09 फरवरी मेरे जीवन में विशेष है। मेरा पुत्र कल जगत् पुत्र बन जायेगा। जिससे सारी महिलाएँ उसकी माताएँ बन जायेंगी। अब तक वह मेरे पास रहा था, अब वह गुरु हीरा के पास रहेगा। मैंने ऐसे सुन्दर कार्य किए, जिससे मुझे कल्पेश की माता बनने का सौभाग्य मिला। कल्पेश तुम संत बनकर सिद्ध बनोगे, मैं तो संत-सतियों की सेवा करके वहाँ तक पहुँच जाऊँगी। मधुजी मेरी ननद है, सब ननद के तो एक बार पैर छूते हैं, पर इनको तो प्रतिदिन तीन-तीन बार वन्दना करेंगे। मेरे साथ में पूरा कवाड़ परिवार, दुग्गड़ परिवार, रत्नसंघ परिवार है, इसलिए मैंने श्रावकजी (अशोकजी) को आज्ञा दी है। आप सब का प्रेम बना रहे, यही मंगल मनीषा है। कल्पेश! तुम ऐसी साधना करना कि दुबारा जन्म नहीं लेना पड़े। अब किसी और माँ को मत रूलाना। कल्पेश तुम्हारा ध्यान रखने के लिए पापा है। पापा का ध्यान रखने के लिए तुम हो। तुम दोनों का ध्यान रखने के लिए गुरुदेव हैं।

मुमुक्षु श्रीमती उजासबाई जी डाकलिया के **वीर सुपुत्र श्री रौनकजी डाकलिया** ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि "माता ने मेरा पालन किया, अब छह काय की माता बनने जा रही है।" संयम मार्ग पर दृढ़तापूर्वक निरन्तर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है।

मुख्य अतिथि महोदय **श्री गुलाबचन्दजी कटारिया** ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि आप और हम सब

भाग्यशाली हैं, जहाँ दीक्षार्थी भाई और बहिनों का अभिनन्दन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। पुण्य का उदय तो मेरा हुआ, जो आज मैं यहाँ उपस्थित हुआ। कुछ ऐसे अवसर होते हैं जो अन्तःकरण में सोचने को बाध्य कर देते हैं। जीवन में बदलाव गुरु कृपा से ही बनता है। लोहे को भी पारस बनाने की शक्ति गुरु के पास है। वीर परिवार की वीरता को मैं प्रणाम करता हूँ। उनका सम्मान करता हूँ। मैंने 72 वर्ष की उम्र में बहुत-सी दीक्षाएँ देखी, किन्तु ऐसा उदाहरण मैं प्रथम बार देख रहा हूँ। वह माँ कितनी सौभाग्यशाली है जो अपने दिल के टुकड़े को तथा अपने सौभाग्य को जिनशासन में समर्पित कर रही है। दीक्षार्थी भाई-बहिनों ने जिस संकल्प को स्वीकार किया है, उस संकल्प को मैं प्रणाम करता हूँ। आचार्य हीरा तो ऐसे पॉवर हाउस है, जिनका स्पर्श करते ही ऊर्जा मिलती है, अत: मैं उनके चरण स्पर्श करने की सदैव भावना रखता हूँ।

समारोह के **विशिष्ट अतिथि डॉ. रविजी जैन (आई.ए.एस.)** ने फरमाया कि इस पावन प्रसंग पर आकर मुझे अपूर्व प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। जैन धर्म में जन्म लेने के कारण ही आज के इस अवसर पर मैं पुलकित हूँ। चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों को नमन करता हूँ। संघ को भी नमन करता हूँ।

अतिथियों के उद्बोधन के पश्चात् मुमुक्षु भाई-बहिनों को अपने उद्गार रखने हेतु आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम **मुमुक्षु डॉ. अशोक जी कवाड़** ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि भाग्य से वैराग्य आता है। सौभाग्य से गुरु हीरा मिलते हैं। परम सौभाग्य से जिनशासन में पंचम पद को पाने का अवसर मिलता है। संयम के बिना यह आत्मा पवित्र होती नहीं। संयम ही ऐसा पथ है, जहाँ निष्पाप जीवन जीया जाता है। जब जीवन में थोड़ी-सी निष्पापता भी हमारे भय को भगा देती है तो सम्पूर्ण जीवन को निष्पाप बनाने वाले पंचम पद का तो कहना ही क्या? उस पंचम पद को मैं वन्दन करता हूँ। पूर्व भव की उत्कृष्ट पुण्याई से हमें जिनशासन मिला है। महासतीजी के प्रवचन से प्रेरणा मिली कि अगले भव में तुम्हारा क्या होगा? मेरी माताजी ने फरमाया कि जब मैं गर्भ में था, तब माताजी संत-सतियों को सुपात्र दान भावनापूर्वक देती। पूज्य पिताजी के अनन्त उपकार हैं, दादासा दानवीर थे, दादीसा ज्ञानवान, क्रियावान् श्राविकारत्न थीं। पूरे परिवार का इतना प्रेम, इतनी आत्मीयता रही। कल मेरा आश्रवरूपी जीवन का समापन है तथा संवर-निर्जरारूप संयम जीवन का जन्म है।मुझे श्राविकाजी का पूरा सहयोग मिला, उनका जितना उपकार मानूँ उतना ही कम है। संघ के प्रत्येक सदस्य का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने मुझमें योग्यता न होते हुए भी यहाँ तक बढ़ाया। आप सब पूर्व के सम्बन्धों को भुलाकर मुझे आध्यात्मिक साधना में आगे बढ़ने हेतु अम्मा-पियरो का विरुद निभाना, मेरा मार्गदर्शन करना, यही विनम्र निवेदन है।

मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि संसार असार है, संयम में सार है। चाहे संन्यास कहो, चाहे दीक्षा कहो, चाहे अनगार कहो, अभिप्राय एक ही है। परिवर्तन संसार है, संसार परिवर्तन ही है। क्षणिक परिवर्तन- पानी से बर्फ बनना तथा विकास यात्रा का परिवर्तन- दूध से दही बनना है। संयम में उत्कृष्ट पुरुषार्थ करे तो उसी भव में, मध्यम पुरुषार्थ होने पर तीन भव, जघन्य पुरुषार्थ करें तो 15 भव में तो मोक्ष हो ही जाता है। परिवर्तन की यात्रा में मेरा वेश परिवर्तन न हो अपितु भाव परिवर्तन हो। आज तक जो भी जाने-अनजाने में गलतियाँ हुईं उनसे छुटकारा पाने का मौका मिला है। कौन कहते हैं प्रभुवर दूर गये, वे तो मेरे ही भीतर में उतर गये। प्रभु को अपने भीतर मैं कैसे बिठाऊँ। ऐसा सोचने पर ज्ञात हुआ कि गुरु भगवन्तों की असीम कृपा से ही होगा। मेरा त्याग कवाड़ परिवार का त्याग नहीं, किन्तु सर्व संग (आसक्ति) का त्याग है। साधना पथ पर बढ़ते हुए यदि मेरे कदम विपरीत चलने लगे तो आप मुझे चेताते रहना, यही मेरी विनती है। अब मुझे- **क**- करुणावान, **ल**- लगनशील, **पे**- पवित्र, **श**- शीलवान बनना है। कवाड़ परिवार का त्याग कर मैं आचार्य हीरा के परिवार का सदस्य

बनने जा रहा हूँ। गुरु के उपकारों को मैं दो पंक्तियों में अभिव्यक्त करना चाहता हूँ:- ''गुरु के चरण तले, मुक्ति का सुख है मिले। जो कुछ भी पाया तुमसे ही पाया, अर्पण है तेरे लिए।।'' तीनों मुमुक्षुओं के प्रति मेरी हार्दिक मनोभावना:- ''संयम की महिमा क्या है, जीकर के दिखा देना। दुनिया गाये यश तेरा, इतिहास बना देना।।''

मुमुक्षु बहिन उजासजी डाकलिया ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भगवन्त को कोटिशः वन्दन। आचार्य भगवन्त की अनन्त कृपा रही, उसी कारण मैं संथम-पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। बचपन में भी संयम की भावना थी, किन्तु कर्मोदय के वश नहीं ले सकी। इस प्रकार पचपन आ गया। 01 जनवरी को गुरु भगवन्त के चरणों में पहुँची। मुझे दीक्षा लेनी है। गुरु भगवन्तों ने महती कृपा की। परिवार वालों ने भी मुझे खूब सहयोग दिया। आप सबसे हार्दिक क्षमायाचना करती हूँ।

मुमुक्षु बहिन मधुबालाजी कवाड़ ने अपनी सुमधुर वाणी में संयम की महिमा का बखान करते हुए फरमाया कि समय रहते समय में रमण कर लें, इसमें समझदारी है। समय रहते सिद्धान्त रूपी संयम में आत्मारूपी समय को रमण कराना चाहती हूँ। जिनशासन की प्राप्ति अनन्त पुण्य का परिणाम है। जिनशासन में, अच्छे धर्म में, अच्छे परिवार में जन्म लेने के बाद भी संयम न लूँ तो क्या करूँ? माता-पिता, दादा-दादाजी ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा के दर्शन कराये। मेरे पापा को तो आचार्य भगवन्त के जीवन में भगवान नजर आते हैं। मैं संयम लेना चाहती हूँ पर यह अधूरा सत्य है, किन्तु पूर्ण सत्य यही है कि मैं संयम को जीना चाहती हूँ। एक पल भी मैं असंयम में नहीं रहना चाहती। अब मेरी हर रात, हर बात, हर प्रभात संयम के साथ होगी। अब मैं ज्ञान की लक्ष्मी बनना चाहती हूँ। कर्मो को परास्त करने वाली रानी बनना चाहती हूँ। चन्दनबाला और मृगावती के समान समता और सहनशीलता की परिभाषा बनना चाहती हूँ। मैं मधु से मृगावती बनने का पूरा प्रयास करूँगी। संघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति आभार ज्ञापित करना चाहती हूँ। जिनके उत्साह को देखकर हमारा उत्साह संयम में बढ़ रहा है। मेरे माता-पिता के प्रति तो मैं नत-मस्तक हूँ, जिन्होंने एक बार ही गुरुदेव के कहते ही आज्ञा दे दी। मेरी मम्मी ने कभी भी मुझे संयम के लिये नहीं रोका, उनका अनन्त-अनन्त आभार। साधना से मुझे सिद्धि पद प्राप्त हो जाये, यही मनोभावना है।

मुमुक्षुओं एवं वीर परिवार के हृद्योद्गार सुनकर मंचासीन अतिथि, पदाधिकारी गण सहित उपस्थित जन समूह की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। तत्पश्चात् अभिनन्दन पत्र का वाचन कर सभी मुमुक्षुओं को अभिनन्दन पत्र प्रदत्त किये गये। **संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी** ने पीपाड़ संघ सहित सभी का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।

चारों ओर दीक्षार्थियों का जयकारा, मुमुक्षुओं ने संयम पथ स्वीकारा

9 फरवरी 2017 का पावन दिवस, चारों मुमुक्षु बन्धु संयम पथ पर अग्रसर होने के लिए हर्षित थे। प्रातः 9 बजे चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों की अभिनिष्क्रमण यात्रा अपने-अपने निवास स्थान से प्रारम्भ हुई। चारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने दीक्षा स्थल पर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से मांगलिक श्रवण कर वेश-परिवर्तन हेतु निर्धारित स्थलों की ओर प्रस्थान किया।

दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम में आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा. महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 14 पाट पर शोभायमान हो रहे थे, वहीं विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 28 पाट के समीप जमीन पर विराज रही थी। सामने वीर परिवार और उनके पीछे हजारों श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति अत्यन्त मनभावन लग रही थी।

वेश परिवर्तन के पश्चात् जय-जयकार की जयध्वनि के साथ जैसे ही दीक्षार्थी भाई-बहिन अपने पारिवारिक-परिजनों और संघ पदाधिकारियां के साथ दीक्षा-स्थल ओसवाल लोडे साजन विकास केन्द्र (कोट) के विशाल प्रांगण में पहुंचे, हजारों की संख्या में दीक्षा-महोत्सव की अनुमोदना में आए देश के हर भाग के श्रद्धालुओं ने दीक्षार्थियों के आगमन पर हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए नारों के जयनाद में स्वर मिलाते हुए जयनाद किया। भगवान महावीर स्वामी की जय, आचार्य भगवंत पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की जय, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय, साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. की जय, निर्ग्रंथ संत-मुनिराजों की जय, महासतीवृंद की जय जैसे जयघोष कोट के चारों ओर स्वप्रेरित भावना से जन-जन के मुंह से उच्चरित हो रहे थे। धन्य है चारित्रात्माओं को जो संसार की मोह-माया, घर-परिवार और आरम्भ-परिग्रह को त्याग कर शाश्वत सुख की प्राप्ति में संयम स्वीकार कर रहे हैं।

चारों चारित्रात्माओं ने आचार्य प्रवर प्रभृति संत-सतीवृंद को विधिवत् वंदन किया। दीक्षा पूर्व संयम की महत्ता पर संत-सतियों के हृदयोदगार चल रहे थे। प्रवचन का शुभारंभ श्री यशवंत मुनि जी म.सा. ने किया। महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेश प्रभा जी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने संक्षेप में संयम जीवन की महत्ता बतलाई। श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेश मुनि म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने गद्य, पद्य भाषा-भाव में पुण्य भूमि पीपाड़ में पिता-पुत्र सहित चार-चार मुमुक्षु आत्माओं का रत्नसंघ और जिन शासन में समर्पित होने को पीपाड़ की पुण्यवानी, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का अतिशय और दीक्षार्थी भाई-बहिनों तथा उनके पारिवारिक परिजनों की शुभ-भावना बताते हुए संयम का माहात्म्य समझाया।

दीक्षार्थी भाई-बहिनों के वन्दन के चलते महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. ने संक्षेप में अपनी भावना के साथ जोधपुर विराजित उपाध्याय प्रवर की ओर से आया शुभकामना-पत्र पढ़कर सुनाया। मुनिश्री ने श्रमण संघीय उपाध्याय रमेशमुनि जी म.सा. एवं रत्नसंघीय महासतीवृंद जो सुदूर प्रदेशों में विचरण कर रहे हैं, उनके पत्रों के भाव भी रखे।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की ओर से दीक्षा-पाठ दिए जाने के पूर्व विरक्त-विरक्ताओं ने अपने माता-पिता और पारिवारिक परिजनों के चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। हजारों की संख्या में उपस्थित जनमेदिनी को हाथ जोड़कर अपनी ओर से हुई भूलों के लिए विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की। जन समुदाय ने हाथ जोड़कर क्षमायाचना की भावना जाहिर की। क्षमा मांगने और क्षमा देने का दृश्य अनूठा था।

आचार्यप्रवर ने पीपाड़ सकल जैन संघ और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों की अनुज्ञा चाही तो संघ-संरक्षक मंडल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, पीपाड़ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष-मंत्री सहित संघ के पदाधिकारियों ने खड़े होकर आज्ञा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने संघ पदाधिकारियों एवं परिवारजनों की आज्ञा-अनुमति प्राप्त कर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा- ''मैं आज एक ऐसा मंत्र देकर इन दीक्षार्थियों को संयम-जीवन में प्रवेश करा रहा हूँ, जिससे ये नर से नारायण, जीव से शिव और संसार सागर से तिरकर शाश्वत सुख प्राप्त कर सकते हैं। आप दूर-दूर तक मेरी बात भले ही ना सुन पा रहे हों, लेकिन शांत बैठकर दीक्षा-विधि देख सकते हैं। आप सुन सकें तो सुनें, लेकिन देखकर भी अन्तर्मन में त्याग के प्रति भावना जगाएं।''

आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेण (आलोचना पाठ) तस्सउत्तरी (कायोत्सर्ग-सूत्र) दीक्षार्थियों को सुनाया। चारों मुमुक्षुओं ने गुरु आदेश पर पहली बार इच्छाकारेणं तथा दूसरी बार लोगस्स का ध्यान किया। ध्यान के अनन्तर लोगस्स-पाठ के उच्चारण में संघनायक के साथ संत-मुनिराजों का समवेत स्वर संयुक्त हो जाने से एक-एक शब्द अपने आप में जन-जन के मन को खींचने वाला बन गया। आचार्यप्रवर ने 'करेमि भंते' के पाठ से तीन करण-तीन योग से प्रतिज्ञा-सूत्र पाठ पढ़ाया, तो समुदाय ने जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, वहीं मन ही मन कवाड़ और डाकलिया परिवार की शासन-दीप्ति में शुभ भावना पर अन्तर्मन से अनुमोदना प्रकट की। प्रतिज्ञा सूत्र पूरा होते ही, संत-मुनिराजों ने नवदीक्षित दोनों संतों को आचार्य प्रवर के आजू-बाजू बिठाया तो नवदीक्षिता महासतीद्वय को महासतीवृंद ने अपने पास आगे स्थान उपलब्ध करवाया।

दीक्षा के बाद ध्यान-मौन का समय हो जाने के चलते आचार्य प्रवर ने मंगलपाठ सुनाया और जनसमुदाय से कहा कि आप दूर से ही वन्दन कर लें, नजदीक आकर चरण-स्पर्श का प्रयास नहीं करें। मांगलिक श्रवण कर जन-समुदाय के मुख से जय-जयकार के जयनाद तो चले ही, नवदीक्षित संत-सतियों के नाम की जय ध्वनि भी कर्णगोचर हुई।

दीक्षा के पश्चात् हजारों लोगों की सुव्यवस्थित भोजन-व्यवस्था कोट में रखी गई। सुरुचिपूर्ण व्यंजनों के साथ आत्मीयता-अपनत्व के क्षणों में सभी ने भोजन का आनन्द प्राप्त किया। पीपाड़ शहर के कार्यकर्ताओं के साथ ही अन्य ग्राम-नगरों के सेवाभावी युवक-युवतियों ने भोजन व्यवस्था में अपना सहयोग प्रदान किया।

दीक्षा समारोह में प्रत्येक भक्त के चेहरे पर हर्ष था। हर व्यक्ति पुण्यधरा पीपाड़ और हस्ती-हीरा की जननी जन्मभूमि की सराहना करते और सुनते देखा गया। पीपाड़ में चार मुमुक्षु आत्माओं का संयम मार्ग में आगे बढ़कर संयम स्वीकार करने का नजारा अद्भुत था।

जलगांव में मुमुक्षु सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की दीक्षा सम्पन्न

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जलगांव एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जलगांव के तत्त्वावधान में नागौर निवासी वीर पिता श्री भंवरलाल जी कांकरिया की सुपुत्री मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की जैन भागवती दीक्षा महोत्सव का कार्यक्रम जलगांव में सानन्द सम्पन्न हुआ। जलगांव में 30 जनवरी से 6 फरवरी तक अष्टदिवसीय कार्यक्रम तैयार किया गया। सभी कार्यक्रमों में श्री जैन रत्न युवक परिषद्, नवयुवक मण्डल, आनन्द ग्रुप आदि अनेक मण्डलों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। दीक्षा गीत, मेहंदी गीत, भजन नाटिका, प्रश्नमंच के कार्यक्रम प्रतिदिन दोपहर 2 से 4 बजे तक चले, जिनमें सैकड़ों की संख्या में उपस्थिति रही।

5 फरवरी को मुमुक्षु बहिन की शोभायात्रा का सुव्यवस्थित संचालन हुआ। शोभायात्रा में हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। आर.सी. बाफना शोरूम, सुभाष चौक से प्रात: 8.30 बजे प्रारम्भ हुई शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से होती हुई रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन पहुंची।

दोपहर 2 बजे वीर परिवार एवं मुमुक्षु बहिन का अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ। समारोह में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक, संघ सेवा शिरोमणि श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पारसचन्द जी हीरावत-मुम्बई, शासन सेवा समिति सह संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-जयपुर, संघ संरक्षक श्री सुमेरसिंह जी बोथरा-जयपुर सहित संघ के गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित हुए। जलगांव एवं आस-पास के क्षेत्रों के आबाल-वृद्ध सभी ने हजारों की संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अभिनन्दन समारोह

के पश्चात् रक्षा-बंधन का कार्यक्रम तथा सायंकाल भजनों के साथ ही नाटिका का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. के मुखारविन्द से 6 फरवरी, 2017 को मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशी जी कांकरिया की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। प्रवचन सभा में महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने संयम का माहात्म्य प्रस्तुत किया। प्रातः 10 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास से प्रारम्भ होकर अभिनिष्क्रमण यात्रा दीक्षा स्थल पहुंची। अपार जनसमूह के बीच व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. ने मुमुक्षु बहिन को दोपहर 11.30 बजे दीक्षा पाठ प्रदान किया। दीक्षा पाठ के पश्चात् उपस्थित जनमेदिनी ने जय-जयकारों के साथ नवदीक्षित महासती के नाम का भी जयनाद किया।

बड़ी दीक्षा सम्पन्न

13 फरवरी 2017 को एमआईडीसी, जलगांव में नवदीक्षिता महासती जी की **बड़ी दीक्षा** भी हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र के चारों अध्ययन को सुन्दर तरीके से समझाया। बड़ी दीक्षा के अवसर पर संघ संरक्षक श्री सुरेशदादा जैन, श्री ईश्वरबाबूजी ललवाणी, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, रत्नसंघ पूर्व अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर, श्री देवीचन्द जी छोरिया, श्री दलीचन्द जी चोरडिया सहित गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। बड़ी दीक्षा उपरान्त नवदीक्षिता महासती जी का आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त नाम **महासती श्री हेमप्रभा जी म.सा.** घोषित किया गया।

पीपाड़ में 9 फरवरी 2017 को दीक्षित चारों नव दीक्षार्थी संत-सतियों की बड़ी दीक्षा 15 फरवरी 2017 को सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आचार्यश्री ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करते हुए फरमाया- आप धर्म-मार्ग में कर्त्तव्य करते चलें, पर जब तक शरीर है तब तक इस शरीर का कोई-न-कोई नाम होगा ही। नाम भी आगे बढ़ने में सहायक होता है। आचार्यश्री ने नवदीक्षित संत-सतियों को नए नाम प्रदान किए, जो इस प्रकार हैं-

	दीक्षा पूर्व नाम	**नया नाम**
1.	श्री अशोक जी कवाड़	नवदीक्षित श्री अशोकमुनिजी म.सा.
2.	श्री कल्पेशजी कवाड़	नवदीक्षित श्री कल्पेशमुनिजी म.सा.
3.	श्रीमती उज्जासजी डाकलिया	नवदीक्षिता महासती श्री कल्पयशाजी म.सा.
4.	सुश्री मधुबालाजी कवाड़	नवदीक्षिता महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.

आचार्यश्री ने नवदीक्षित संत-सतियों से अपेक्षा रखी कि नाम के अनुसार आप गुणों में, कर्त्तव्य पालन में प्रदत्त नामों को सार्थक करें।

श्री कुशल जैन छात्रावास जोधपुर में प्रवेश प्रारम्भ

सूर्यनगरी जोधपुर में श्री कुशल जैन छात्रावास का सफल संचालन विगत कई वर्षो से किया जा रहा है, जिसमें सैकण्डरी, हायर सैकण्डरी एवं कॉलेज स्तर के छात्र-छात्राओं के ठहरने एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था है। छात्रावास में प्रवेश लेने वाले छात्र को 2500 रुपये मात्र में आवास-निवास एवं भोजन की व्यवस्था प्रदान की जाती है। प्रवेश के इच्छुक छात्र निम्नांकित पदाधिकारियों से सम्पर्क कर सकते हैं:- 1. मूलचन्द बाफना, ट्रस्टी-9461549178, 2. भागचन्द कांकरिया, ट्रस्टी-9829027379, 3. सुगनचन्द छाजेड़, संयोजक-7568421744 **छात्रावास का पता-** श्री कुशल जैन छात्रावास, प्लॉट नं. 30, प्रथम पोलो, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन नं. 0291-2546713

समाचार विविधा

पीपाड़ में चार मुमुक्षुओं की दीक्षा के पश्चात् आचार्यप्रवर का कोसाणा पदार्पण

फाल्गुनी चौमासी पर कोसाणा में तथा आदिनाथ जन्म-कल्याणक पर रणसीगाँव में विराजने की स्वीकृति, चातुर्मास की निरन्तर विनतियाँ

19 मार्च को आगामी चातुर्मास खोलने की संभावना

29 अप्रेल, 2017 को अक्षय तृतीया पर गोटन विराजने की स्वीकृति

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुण रत्नाकर, जिनशासन गौरव, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** प्रभृति संतवृन्द के सान्निध्य में 29 जनवरी को पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 97 वां दीक्षा-दिवस तप-त्याग, सामूहिक एकाशन एवं सामायिक-साधना के साथ मनाया गया। महान् अध्ययवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने पूज्य आचार्य हस्ती के जीवन व्यक्तित्व, कार्यों एवं महान् गुणों पर प्रवचनामृत का पान कराया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. अपने उद्बोधन में फरमाया- "अढ़ाई हजार वर्ष पश्चात् भी वीतरागवाणी जयवन्त है। इसी गाँव, इसी जगह, इस राता उपासरा में भगवन्त के चरणों में रहकर ज्ञान सीखा, परिस्थितिवश आगे नहीं बढ़ पाया। पैसा पैदा करने के लिए पाप करना पड़ता है, भगवन्त की वाणी को सुनकर मैं जाग गया। पर्युषण के पश्चात् ऑफिस में जाकर इस्तीफा दे दिया। अधिकारी जैन था। मेरे वैराग्य भाव को जानकर सेवानिवृत्ति की स्वीकृति प्रदान कर दी। माँ एवं पिता से दीक्षा के लिए निवेदन किया, जवाब मिला गुरुदेव कहेंगे उसी दिन दीक्षा दे देंगे। पूज्यश्री के चरणों में रहते हुए दो माह के पश्चात् दीक्षा हो गई।" गुरुदेव की दीक्षा के प्रसंग पर कहूँ तो चार परिवारों में वे इकलौते पुत्र थे। कठिनाइयाँ आयी, उन्हें पार किया। माँ रूपा ने दीक्षा ली एवं लाड़ले पुत्र को दीक्षा दिलवाई। आज वही दीक्षा दिवस है। पीपाड़ में अभी दो दीक्षाएँ (कल्पेशजी एवं मधुबालाजी कवाड़ की) हो रही हैं। डाकलिया परिवार की बहन की भी भावना बनी है। पीपाड़ के श्रावक श्री पृथ्वीराजजी कवाड़, अम्मा सुन्दरबाईजी कवाड़ संस्कार देने में अग्रणी रहे, ऐसे समर्थ परिवार से दीक्षाएँ होने जा रही हैं। आप भी संसार भावना से संयम भावना में आकर दीक्षा तिथि पर संयम-व्रत-नियम के क्षेत्र में आगे बढ़ें, ऐसी मंगल भावना है।" सभा का संचालन संघ मंत्री श्री परेशजी मुथा ने किया।

29 जनवरी को ही व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में पीपाड़ पधारे। नागौर संघ के सदस्य चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। **31 जनवरी को गोटन संघ अक्षय तृतीया का लाभ प्राप्त करने की भावना लेकर उपस्थित हुआ।** पूज्य प्रवर ने गोटन संघ को साधु मर्यादा के साथ स्वीकृति फरमाई। 01 फरवरी को महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 दीक्षा प्रसंग के निमित्त जोधपुर से पीपाड़ पधारे। 02 फरवरी को गोपालगंज भीलवाड़ा के भाई-बहिन चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। 03 फरवरी को **कोसाणा संघ फाल्गुनी चौमासी पर्व** के साथ शेषकाल विराजने की विनति लेकर उपस्थित हुआ। 04

फरवरी को विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का जोधपुर से पीपाड़ पदार्पण हुआ। जोधपुर संघ के पदाधिकारी नेहरूपार्क में चातुर्मास हेतु विनति लेकर उपस्थित हुए।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़ ने दीक्षा लेने की प्रबल भावना व्यक्त की तथा परिवारजनों की सहमति बनी। 05 फरवरी को पूज्य आचार्यप्रवर ने श्रेष्ठिवर्य स्व. श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ के पौत्र एवं श्री दलीचन्दजी कवाड़ के सुपुत्र डॉ. अशोकजी कवाड़ की दीक्षा की स्वीकृति कवाड़ परिवार, दुगड़ परिवार के सभी सदस्यों की सहमति लेकर सम्बोधित किया-''शिक्षा के साथ दीक्षा आवश्यक है। भाई अशोकजी ने उच्च शिक्षा प्राप्त की ही है, वे अब दीक्षा पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। इन्होंने अंतर में आगे बढ़ने की तैयारी कर जो आदर्श पथ चुना है, वह वर्षों से वैराग्य भाव में रत वैरागियों के लिए प्रेरणास्पद कदम है।'' पूज्य श्री ने फाल्गुनी चौमासी पर्व की स्वीकृति साधु मर्यादा के साथ कोसाणा संघ को प्रदान की।

06 फरवरी को पूज्य आचार्यप्रवर की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के मुखारविन्द से जलगांव में **मुमुक्षु बहिन सुश्री हिमांशीजी कांकरिया की भागवती दीक्षा** हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। 07 फरवरी को किशनगढ़ संघ चातुर्मास की पुरजोर विनति लेकर गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ।

08 फरवरी को चार दीक्षार्थी भाई-बहनों की शोभायात्रा (वरघोड़ा) पूज्य आचार्यप्रवर से मांगलिक श्रवण करने के अनन्तर प्रारम्भ हुआ। पीपाड़ की गलियों में जयनाद के समवेत स्वर विशाल जनमेदिनी के साथ गुंजरित होते रहे। इधर पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में भोपालगढ़, मेड़तासिटी, हाउसिंग बोर्ड-सवाईमाधोपुर, महावीरनगर-जयपुर, जामनेर, तोंडापुर, होलनांथा, भीलवाड़ा एवं सुदूर कर्नाटक से भी श्रावकवृन्द एवं संघ अपने-अपने क्षेत्र की विनतियाँ प्रस्तुत कर रहे थे। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आप सबकी विनति झोली में है, फाल्गुनी चौमासे के पश्चात् यथासमय चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान करने के भाव हैं। दोपहर में चारों मुमुक्षुओं एवं वीर परिवारों का अभिनन्दन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें माननीय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, गृहमंत्री राजस्थान सरकार मुख्य अतिथि थे।

09 फरवरी को **मुमुक्षु डॉ. अशोकजी कवाड़, मुमुक्षु श्री कल्पेशजी कवाड़, मुमुक्षु श्रीमती उजास जी डाकलिया, मुमुक्षु सुश्री मधुजी कवाड़** पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से कोट के विशाल प्रांगण में लगभग सात-आठ हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने जा रहे थे।

इस अवसर पर **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने बंधन-मुक्त होने की प्रेरणा की। **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** ने फरमाया कि सम्पन्नों की दीक्षा होने जा रही है। उजासबाईजी का अंतर जगा, अल्पकाल में ही संयम अंगीकार करने का संकल्प किया। मधुजी इंगियागार सम्पन्न हैं। अप्रमत्तता सजगता के कारण लगता है वे हमें शिक्षित करने आ रही हैं। कल्पेशजी में आत्मबल है, शक्तिबल है। वे सभी गुणों से सम्पन्न हैं। अशोक सा सेवा सम्पन्न श्रावक हैं, अम्मा-पियरों की भावना से आपने सेवा की। मेरे जीवन के संयम पज्जवों के विकास में माता-पिता, भाई-मित्र बनकर योगदान किया। आचार्य भगवन्त 36 गुणों से सम्पन्न हैं। हम गुरु हीरा जैसे आचार्य के शिष्य होने से सम्पन्न हैं। यह रत्न संघ सम्पन्न है। गुरुदेव से प्रार्थना है कि वे हमें आत्मवैभव से सम्पन्न बनाएँ। व्याख्यात्री **महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.** ने समता, प्रवचनमाता एवं जननी माता के स्वरूप पर प्रकाश डाला। **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए फरमाया- ''धन्य है कवाड़ परिवार जिसके तीन-तीन मुमुक्षु दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं। डॉ. अशोकजी कवाड़ अचाह की चाहना करने जा रहे हैं। चारों मुमुक्षु परित्त संसारी बनने जा रहे हैं। गुरु हीरा फरमाते हैं- ''जागो! त्यागी बनो।'' **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.** ने फरमाया- ''मेरे गुरु का शीतल स्वभाव है, इनकी साधना लाजवाब है। उजास जी

डाकलिया गुरु हीरा के शासन में आ रही हैं। चेन्नई के चैन को छोड़कर मधुजी संयम का मिठास चखने आ रही हैं। डॉ. अशोकजी, कल्पेशजी के रूप में **पिता-पुत्र गुरु-चरणों में दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं,** यह इस संघ में अद्भुत घटना है। सभी झंझटों से मुक्ति पानी है तो संयम का मार्ग श्रेष्ठ है। ये मुमुक्षु सूर्य की तरह चमके, चाँद की तरह दमके, यही मंगल भावना है।''

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ''जिन्हें उस पार जाना है, उन्हें इस पार क्या करना.......। एक माता संसार में प्रवेश दिलाती है, अष्टप्रवचनमाता सिद्धत्व को प्राप्त करवाती है।'' श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया-''दुनिया का बनकर देख चुका, अब खुद का बन कर देख जरा।'' पराक्रम करने वाला ही परिवर्तन करने में सफल होता है। पृथ्वी एक्सचेंज की शाखाओं का दायित्व संभालते हुए अनासक्त भावों को वर्धापित किया और आज डॉ. अशोकजी ने प्रवज्या मार्ग को श्रेष्ठ समझकर उसका वरण किया है।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने फरमाया- ''परिस्थिति के परिवर्तन के साथ भीतर की परिणति का परिवर्तन आवश्यक है। ये मुमुक्षु साधक परिस्थिति के परिवर्तन के साथ परिणति का परिवर्तन भी कर रहे हैं।'' **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने फरमाया- शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया कौनसा कार्य करूँ?, गुरु ने कहा जो कार्य पूरा कर सको वो कार्य करो। संसार के कार्य कभी पूरे नहीं होते। चारों मुमुक्षु संयम अंगीकार कर उस कार्य को करने जा रहे हैं, जो पूर्णता की ओर ले जाता है। उन्होंने भजन के माध्यम से फरमाया-

''बढ़ते हो संयम पथ पर, ये पथ है अंगारों का रखना कदम संभाल...।
सफल आराधना हो, सफल ये साधना हो....।
संयम की महिमा क्या है, जीकर के बता देना.....।''

वेश परिवर्तन के पश्चात् आचार्यप्रवर एवं समस्त विराजित सन्तप्रवरों एवं महासतीवृन्द को चरों मुमुक्षुओं ने वन्दन किया तथा सबसे क्षमायाचना की। परिवारजन तथा संघ के पदाधिकारियों के द्वारा अनुज्ञा प्रदान करने के पश्चात् दो चउवीसत्थव के साथ जीवनपर्यन्त की सामायिक का पाठ पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा फरमाया गया। दीक्षा पाठ के अनन्तर दो नमोत्थुणं दिए गए। **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने फरमाया- ''चारों मुमुक्षु संयम आरूढ़ हो गए हैं। मार्गशीर्ष शुक्ला ग्यारस, **संवत् 1818 में श्री गुमानचन्द्रजी एवं अखेराजजी पिता पुत्र के पश्चात् यह पिता-पुत्र की दीक्षा का नज़ारा पूज्य आचार्यप्रवर के अतिशय से देखने को मिल रहा है।** वीर परिवार धन्य है, उजास जी को आगे बढ़ाने का कार्य डाकलिया परिवार ने अति अल्प समय में किया। पृथ्वीराजजी-सुन्दरबाईजी के संस्कारों से श्रद्धानिष्ठ, संघनिष्ठ कवाड़ परिवार से तीन दीक्षाएँ हो रही हैं। सवाईमाधोपुर में प्रेमकुमारजी-ललिताबाई जी ने संकेत मात्र से मधुजी का आज्ञा पत्र समर्पित कर दिया। श्री दलीचन्दजी-श्रीमती अमरावकंवरजी ने सहर्ष पुत्र एवं पौत्र की आज्ञा प्रदान की। वीरांगना उषाजी ने स्वीकृति देकर सौभाग्य को अखण्ड बनाया है।''

मुनि श्री ने परम श्रद्धेय **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.** प्रभृति संत मुनिराजों एवं महासतीवर्या से प्राप्त मंगल भावों को प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि उपाध्यायप्रवर, सन्तवृन्द एवं महासतीवृन्द ने संयम-साधना में प्रवृत्त होने वाले मुमुक्षुओं के प्रति शुभभावना प्रदर्शित करते हुए अपेक्षाकी है कि मुमुक्षु आत्माएँ संयम अंगीकार करके अपना, अपने परिवार का, अपनी जन्मभूमि-कर्मभूमि का, रत्नसंघ और जिनशासन का नाम रोशन करें। ज्ञान ध्यान की वृद्धि के साथ गौरवशाली संघ की समाचारी का पूरी निष्ठा से पालन करते हुए, ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना में अप्रमत्त रहें, यही मंगल मनीषा है।''

श्रमणसंघीय **उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री** से कल्याणपुरा से इन्द्रवज्रा छन्द में शुभकामनाएँ प्राप्त हुईं-

मोमुद्यते मानसमस्मदीयम्, दीक्षाप्रसङ्गशुभदं निशम्य।
सन्त्यस्य सर्वे भविनः सुयोग्या, सद्बोधपीयूषरसेन पूर्णाः।।

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. से भी शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने स्वरचित संस्कृत श्लोकों में अपनी मनोभावना व्यक्त की। अंत में मांगलिक के पूर्व पूज्य आचार्यप्रवर ने फरमाया की बड़ी दीक्षा 15 फरवरी को पीपाड़ में होने की संभावना है।

10 फरवरी को कवाड़ वीर परिवार के सभी सदस्यों ने तप-त्याग की भेंट चढ़ाकर पूज्य गुरुदेव के श्री मुख से व्रत नियम अंगीकार किए। 11 फरवरी को यवतमाल संघ का विनति पत्र प्रस्तुत हुआ। 12 फरवरी को अलीगढ़-रामपुरा से श्री रामकल्याणजी, श्री सुशीलकुमारजी समस्त परिवारजनों के साथ स्वाध्यायी श्रीमती संजूलताजी धर्मपत्नी श्री रविन्द्रकुमारजी के स्वर्गवास के पश्चात् मांगलिक श्रवण करने हेतु उपस्थित हुए। श्रीमती संजूजी जैन ने पूज्य गुरुदेव के महावीर नगर जयपुर चातुर्मास में मासक्षपण तप का अर्घ्य अर्पित किया था। इसी दिन संस्कारकेन्द्र में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं ने स्वाध्याय भवन में गुरुदेव के दर्शनों का लाभ लिया। 14 फरवरी को जबलपुर संघ विनति पत्र के साथ उपस्थित हुआ।

15 फरवरी को नवदीक्षितों को छेदोपस्थापनीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) में आरूढ़ किया गया। कोट परिसर में पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः 8.30 बजे संत-सतीवृन्द के साथ धर्म सभा स्थल पर पधार आये। नवदीक्षित मुनियों एवं महासतियों के द्वारा संत-सतीवृन्द को वंदन-नमन किया गया। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. एवं पूज्य आचार्यप्रवर ने सम्बोधित किया। पूज्य आचार्यप्रवर ने विधिपूर्वक दशवैकालिक सूत्र के माध्यम से नवदीक्षितों को बड़ी दीक्षा प्रदान की। पूज्य आचार्यप्रवर ने नवदीक्षितों के नामकरण करते हुए फरमाया-'अनाम बनना लक्ष्य है, किन्तु सम्बोधनार्थ नामकरण आवश्यक है। अशोकजी को शोक छोड़ **अशोकमुनि** बनना है। कल्प के ईश बनने वाले **कल्पेशमुनि**, उजासजी का नाम **कल्पयशा**, मधुबाला का जीवन मन, वचन, काया से माधुर्य से भरा रहे, अतः माता-पिता द्वारा रखा गया नाम **मधुश्री** ही उचित लगता है।

रणसी गाँव की विनति पर आदिनाथ जैन कल्याणक, चैत्र कृष्णा अष्टमी की स्वीकृति सुखे समाधे फरमाई गई। बड़ी दीक्षा के पश्चात् आदर्श विद्यालय पधारे। वहाँ से दूसरे दिन कटारिया की पोल में व्याख्यान के पश्चात् कोसाणा की ओर विहार हो गया। पीपाड़ संघ की तत्परता एवं व्यवस्थाएँ श्लाघनीय रहीं। श्री सुमतिचन्दजी मेहता, श्री हस्तीमलजी बोहरा, संघाध्यक्ष श्री धनेन्द्रजी चौधरी, मंत्री श्री परेशजी मुथा, दीक्षा संयोजक, भोजन व्यवस्था प्रभारी, आवास प्रभारी एवं सभी कार्यकर्ताओं, युवकों एवं बहिनों की सेवाएँ प्रमोदकारी रही।

कटारियों की पोल से मालियों की ढाणी एवं साथिन होते हुए 18 फरवरी को पूज्य गुरुदेव का मंगलमय पदार्पण कोसाणा की पावन भूमि पर हुआ। 19 फरवरी को नागौर संघ, 22 को सोजतसिटी संघ चातुर्मास की विनति लेकर गुरुचरणों में उपस्थित हुए। 23 फरवरी को व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ठाणा 11 से कोसाणा पधार आये। यहाँ सूयगडांग सूत्र की वाचनी पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से प्रारम्भ हुई। 24 फरवरी को पंजाब से बंगा एवं 25 को जयपुर संघ चातुर्मास की विनति हेतु उपस्थित हुए। पाक्षिक पर्व पर अच्छी संख्या में 11-11 सामायिक, दया, एकाशन, उपवास, पाँच तेले व अठाई की तपस्या हुई। यहाँ अजैन समाज के भाई-बहिन व्याख्यान वाचनी में तथा तप-त्याग में पूरा लाभ लेते हैं। 26 फरवरी को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 एवं व्याख्यात्री

महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा कोसाणा पधारे तथा 27 फरवरी को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 ने भोपालगढ़ की ओर विहार किया। कोसाणा संघ पूज्य आचार्य भगवन्त की पावन सन्निधि का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव कर रहा है।

अक्षय तृतीया पर गोटन पधारने की स्वीकृति

फाल्गुनी चौमासी 12 मार्च, 2017 को पूज्य आचार्यप्रवर के कोसाणा विराजने की संभावना है तथा 21 मार्च को आदिनाथ जन्म-कल्याणक के अवसर पर रणसीगाँव पधारने की स्वीकृति साधुमर्यादा के साथ प्रदान की गई है। पूर्व में 31 जनवरी को प्रदत्त स्वीकृति के अनुसार अक्षय तृतीया पर गोटन पधारने की संभावना है। तप-साधक इस अवसर अपने पधारने की स्वीकृति नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए सूचना संघ के प्रधान कार्यालय घोड़ों के चौक, जोधपुर, ईमेल-**absjrhssangh@gmail.com**, फोन- (0291) 2636763/ 2641445 पर अथवा गोटन संघ के सम्पर्क सूत्र पर भिजवाने का श्रम करावें। **गोटन के सम्पर्क सूत्र**-श्री हंसराजजी चौपड़ा-अध्यक्ष, हस्ती किराणा स्टोर, मेन मार्केट, पोस्ट- गोटन-342902 (जिला-नागौर), मोबाइल-94602-85067, श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल-मंत्री, महावीर ऑटोमोबाइल्स, पोस्ट-गोटन-342902 (जिला-नागौर), मोबाइल-94685-48048 -***जगदीश जैन***

सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा निम्नांकित प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की गई हैं-

1.गुणी-अभिनन्दन

2. आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान

3. युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा-सम्मान,

4. न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा-शिक्षा प्रतिभा सम्मान

5. डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

जिनवाणी के फरवरी-2017 अंक में विवरण द्रष्टव्य है। आवेदन हेतु अन्तिम तिथि 30 जून 2017 है। गुणी-अभिनन्दन हेतु आप अपने क्षेत्र के विशिष्ट तपस्वी, सेवाभावी, साधनाशील श्रावक-श्राविका का नाम प्रेषित कर सकते हैं। -***पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763***

गुजरात क्षेत्रीय सम्मेलन 02 अप्रेल को उमरगाँव रोड़ में आयोज्य

गुजरात क्षेत्र का क्षेत्रीय सम्मेलन 02 अप्रेल, 2017 को उमरगाँव रोड़, जिला वलसाड़ में आयोजित किया जा रहा है। यह सम्मेलन संघ सदस्यों, कार्यकर्ताओं, स्वाध्यायियों सबके लिए हितकर एवं प्रेरणाप्रद रहेगा। उमरगांव रोड़ में वर्ष 2015 में व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न हुआ था। वर्तमान में व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता म.सा. आदि ठाणा 6 का विचरण-विहार गुजरात क्षेत्र के उमरगांव रोड़ की ओर चल रहा है। उमरगांव रोड़ अहमदाबाद, मुम्बई रेल्वे लाईन एवं सड़क मार्ग पर स्थित है। मुम्बई से रेल्वे द्वारा 140 किमी. अहमदाबाद से 400 किमी., सूरत से 140 किमी. एवं वापी से 35 किमी. तथा बस

मार्ग से मुम्बई से 160 किमी. एवं सूरत से 145 किमी. दूरी पर स्थित है।

आपके सपरिवार उमरगांव रोड़ पधारने पर व्याख्यात्री महासती श्री रूचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का भी लाभ प्राप्त होगा। आप सभी अतिथियों के लिए ठहरने के उत्तम व्यवस्था की गई है। कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना से अवगत करावें। द्रपया अपने पधारने की पूर्व सूचना से अवगत करावें।
सम्पर्क सूत्रः- श्री प्रकाशचन्दजी मेहता, क्षेत्रीय प्रधान-गुजरात सम्भाग, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, रेल्वे स्टेशन के पास, महावीर मेडिकल के पीछे, पोस्ट-उमरगाँव रोड़-396195,जिला-बलसाड (गुजरात), फोनः 0260-2562213, मोबाइल-92278-44589/79903-47887, ईमेल- mehtashreyans @rediffmail.com

बनें आगम अध्येता (6)

आवश्यकसूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत 'आवश्यक सूत्र' आगम पर परीक्षा आयोजित की जा रही है। इस परीक्षा में श्राविकाओं की रुचि को देखते हुए मुख्य समापक परीक्षा सभी केन्द्रों पर **26 मार्च, 2017** को आयोजित की जायेगी।

उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3 का परिणाम सभी प्रतिभागियों के मोबाइल पर भेजा गया है। परीक्षा का पारितोषिक उत्तराध्ययनसूत्र के तीनों भागों के परिणाम को मिलाकर भिजवाया जायेगा। प्रतिभागियों का पारितोषिक प्रतिभागी के बैंक खाते में ही प्रेषित किया जायेगा। अत: प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें :- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No. *-बीना मेहता-महासचिव*

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के भावी कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आगामी कार्यक्रम निम्नानुसार आयोजित किये जायेंगेः-

1. ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर- 13 से 28 मई 2017
2. परिवार संस्कार शिविर- 23 से 25 जून, 2017
3. युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन- रविवार, 10 सितम्बर, 2017

कार्यक्रम के आयोजन हेतु आवश्यक स्थान समयानुसार निश्चित कर सूचित किया जायेगा।

-मनीष लोढ़ा, महामंत्री

मेवाड़ एवं मध्य प्रदेश में प्रचार-प्रसार सम्पन्न 2017

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा 25 से 29 जनवरी 2017 तक मेवाड़ के कुछ क्षेत्र एवं मध्यप्रदेश में आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया प्रचार-प्रसार में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सहमंत्री श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर, स्वाध्याय संघ के प्रचार-प्रसार संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल-जोधपुर, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री धीरजजी डोसी-जोधपुर, मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ के वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मोहनजी पीपाड़ा-इंदौर, श्री शिखरचंदजी छाजेड़-करही, श्री अभिषेकजी नाहर-इंदौर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। कार्यक्रम के अन्तर्गत मेवाड़ के भीलवाड़ा, अरनोदा, बाडी, प्रतापगढ़ तथा मध्यप्रदेश के

कालुखेड़ा, नागदा, उन्हैल, बडवाह, सनावद, खरगौन, बडवानी, कसरावद, करही, बागोद, इंदौर, आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी बुलाने, नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा की गई। शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षा का नया परीक्षा केन्द्र भी खोला गया। प्रचार-प्रसार के माध्यम से सभी श्रावक-श्राविकाओं, युवाओं, बालक-बालिकाओं को रोजाना स्थानक भवन में आकर सामायिक करने की प्रेरणा की गई तथा पाठशालाओं का भी निरीक्षण किया गया। -*ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक*

स्वाध्यायियों के लिए आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों से निवेदन है कि वे जिनवाणी पत्रिका के दिसम्बर-2016 में पृष्ठ संख्या 35 पर प्रकाशित स्वाध्यायी परिचय-पत्र को पूर्ण भरकर शीघ्र ही स्वाध्याय संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) में प्रेषित करावें जिससे सभी स्वाध्यायी भाई-बहनों का परिचय-पत्र एवं निर्देशिका तैयार की जा सके। कुछ क्षेत्रों के स्वाध्यायी भाई-बहनों के परिचय-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें यह परिचय-पत्र भरने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही आप उसमें अपनी **पर्युषण सेवा वर्ष** (कहाँ से कहाँ तक) की भी जानकारी अवश्य दें। परिचय-पत्र आप **31 मार्च, 2017** तक तक कार्यालय में प्रेषित करावे। 31 मार्च, 2017 तक उपलब्ध जानकारी ही निर्देशिका में प्रकाशित की जाएगी। इसके पश्चात् प्राप्त होने वाले विवरण का प्रकाशन निर्देशिका में नहीं होगा। -*गोपालराज अबानी, सचिव*

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा प्रतिक्रमण परीक्षा का आयोजन

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा फरवरी-2017 में विभिन्न केन्द्रों पर प्रतिक्रमण की मौखिक परीखा आयोजित की गई जिनमें 146 बालक-बालिकाओं ने परीक्षा दी। 19 छात्रों ने वरीयता सूची में, 5 छात्रों ने विशेष योग्यता सूची में, 80 छात्रों ने प्रथम श्रेणी में, 26 छात्रों ने द्वितीय श्रेणी में तथा 12 छात्रों ने तृतीय श्रेणी में यह परीक्षा उत्तीर्ण की। परीक्षा परिणाम 97 प्रतिशत रहा। लक्ष्मीनगर-जोधपुर की प्रीति रांका सुपुत्री श्री सुरेन्द्रजी रांका ने पूरे 100 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान अर्जित किया। 90 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले विशेष योग्य छात्र-छात्राओं को 500/-रुपये, 71 से 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले प्रथम श्रेणी के छात्र-छात्राओं को 450/- रुपये, 61 से 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले द्वितीय श्रेणी के छात्र-छात्राओं को 350/- रुपये तथा 50 से 60 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को 300/- रुपये की राशि पुरस्कार में दी जायेगी। 50 प्रतिशत से कम अर्थात् अनुत्तिर्ण छात्रों को 70/- रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जायेगी।

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा वर्षभर में करणीय कार्य

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र ने वर्ष भर का कलैण्डर तैयार किया है। अप्रेल से जून-2017 में जोधपुर, पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्र, मारवाड़, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक एवं आन्ध्रप्रदेश में नये संस्कार केन्द्र खोले जायेंगे। जुलाई में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परिक्षा में अधिकतम छात्र प्रविष्ट हो उसके लिए प्रयत्न किया जायेगा। अगस्त एवं सितम्बर में कार्यशालाओं का आयोजन किया जायेगा तथा अक्टूबर माह में बोर्ड परीक्षा परिणामों की समीक्षा की जायेगी। नवम्बर-दिसम्बर माह में विधि सहित मौखिक प्रतिक्रमण परीक्षा आयोजित की जायेगी। जनवरी-2018 में प्रचार-प्रसार हेतु प्रवास कार्यक्रम होंगे। फरवरी माह में छात्रों के लिए विकास के सोपान विषय पर व्याख्यान माला का आयोजन किया जायेगा। मार्च माह में समस्त संस्कार केन्द्रों एवं शिविरों का मूल्यांकन होगा। मिड ब्रेन एक्टिविटी प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न केन्द्रों पर वर्ष भर चलेगा।

-*राजेश भण्डारी, सचिव*

हीरा प्रवचन पीयूष भाग-5 का विमोचन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित ''हीरा प्रवचन पीयूष'' भाग-5 का विमोचन पीपाड़ दीक्षा अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि श्री गुलाबचन्दजी कटारिया-गृहमंत्री, राजस्थान सरकार के कर कमलों द्वारा हुआ। इस पुस्तक में जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रवचनों का संकलन है, जो जिज्ञासु पाठकों के लिये पठनीय है। इस पुस्तक का संकलन एवं सम्पादन श्री नौरतनमल जी मेहता-जोधपुर ने किया है। इस कार्य में उन्हें श्री सौभाग्यमलजी जैन-अलीगढ़ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष एवं परामर्शदाता श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का मूल्य 30/- रुपये मात्र रखा गया है। इच्छुक पाठक पुस्तक मंगवाने हेतु मण्डल कार्यालय, जयपुर से सम्पर्क करें:-
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन:- 0141-2575997

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2017 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारंभ

(भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक संस्कारों के साथ उच्च अध्ययन का स्वर्णिम अवसर)

भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों के लिए वर्ष 2017 से प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन 01 मार्च 2017 से प्रारम्भ है। संस्थान में प्रवेश के लिए कक्षा 9वीं से उच्च कक्षा के कोई भी विद्यार्थी रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। माह जून 2017 में प्रवेश के लिए चयनित छात्रों का साक्षात्कार आयोजित किया जायेगा। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा की प्रेरणा से वर्ष 1973 में संस्थापित शिक्षण संस्थान में आध्यात्मिक शिक्षण के साथ-साथ उच्च अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। साथ ही सर्वांगीण विकास के लिए कई कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटर प्रशिक्षण,इंग्लिश स्पिकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएं आयोजित होती रहती है। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र / अभिभावक संस्कारित रहकर जयपुर में उच्च अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें:- डॉ प्रेमसिंह लोढा 'व्यवस्थापक', ए-9 महावीर उद्यान पथ,बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.), फोन न. 0141-2710946,94614-56489, Email:-ahassansthan@gmail.com

Engaging Jainism With Modern Issues विषय पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी आयोजित

जैन विश्व भारती संस्थान, लॉडनूँ द्वारा उपर्युक्त विषय पर 24 से 26 फरवरी, 2017 को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें 90 से अधिक विद्वान् प्रतिभागियों ने भाग लिया। संगोष्ठी का आयोजन भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के अर्थ सौजन्य से हुआ। जैन धर्म दर्शन के सिद्धान्त आज के जीवन में एवं समस्याओं के निराकरण में किस प्रकार उपयोगी है। इस विषय पर 50 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत हुए। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष प्रो. एस.आर. भट्ट ने उद्घाटन भाषण दिया। प्रो. चन्द्रकला पडिया-वाराणसी, वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. नरेश दाधीच ने भी सम्बोधित किया। अध्यक्षता जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बी.आर.दुगड़ ने की। समणी ऋजुप्रज्ञा ने स्वागत-भाषण तथा प्रो. समणी चैतन्य प्रज्ञा ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। लगभग 13 सत्रों में सम्पन्न संगोष्ठी में प्रो. दयानन्द भार्गव-जयपुर, डॉ. पारसमल अग्रवाल-उदयपुर, प्रो. नरेन्द्र भण्डारी-अहमदाबाद, डॉ. सुरेन्द्र पोखरना-

अहमदाबाद, डॉ. एन.एल. कछारा-उदयपुर आदि की सहभागिता रही। विज्ञान को आधार बनाकर अनेक लेख प्रस्तुत हुए। जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने 'संग्रह एवं परिग्रह का औचित्य' विषय पर तथा सह-सम्पादक डॉ. श्वेता जैन ने 'बच्चों के लालन-पालन में जैन दृष्टि' विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

-डॉ. श्वेता जैन, सह-सम्पादक

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान में Wings to fly संस्कार पाठशाला की किलपॉक शाखा का वार्षिक उत्सव 12 फरवरी, 2017 को स्वाध्याय भवन, साहूकारपेठ में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा एवं संघ संरक्षक श्री गौतमराजजी सुराणा एवं विभिन्न स्थानीय पदाधिकारियों ने भाग लिया। शिविर के सभी प्रशिक्षकगणों वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भारतीय संस्कृति एवं जैन संस्कारों पर आधारित 'जैन प्रदर्शनी' का नन्हे-नन्हे शिविरार्थियों एवं प्रशिक्षकों द्वारा सुन्दर आयोजन किया गया। पानी की बचत कैसे करें, जीव हिंसा से कैसे बचें, प्लास्टिक थैलियों का उपयोग नहीं करें, जंक फूड से बचें आदि विभिन्न संदेशों के साथ 25 स्टॉल की प्रस्तुति प्रेरक रही। प्रदर्शनी का लगभग 1700 जैनों ने अवलोकन किया तथा अभयजी सुराणा सहित 20 से अधिक कार्यकर्ताओं ने योगदान दिया। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया*

भोपालगढ़- 15 जनवरी, 2017 को श्री जैन रत्न उच्च माध्यामिक विद्यालय का 89 वां स्थापना समारोह श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान के तत्त्वावधान में उत्साह के साथ मनाया गया। विद्यालय की स्थापना सन् 1929 में श्री मोहनऋषिजी म.सा. की प्रेरणा से हुई थी तथा युगद्रष्टा पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के शुभ आशीर्वाद से निरन्तर आगे बढ़ती गई। स्थापना दिवस समारोह की अध्यक्षता श्री सज्जनराजजी कर्णावट सुपुत्र स्व. श्री चम्पालालजी कर्णावट निवासी भोपालगढ़ हॉल मुकाम मुम्बई ने की। संस्थान के अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्दजी ओस्तवाल ने स्वागत भाषण दिया। बालक-बालिकाओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम सराहनीय रहा।

-गौतमचन्द ओस्तवाल

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ की आमसभा में 07 फरवरी, 2017 को हुए चुनावों में श्री शम्भुलालजी चोरडिया को अध्यक्ष, श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल को मंत्री, श्री मनोजकुमारजी कांकरिया को कार्याध्यक्ष, श्री अजितराजजी मेहता और ज्ञानचन्दजी लूंकड़ को उपाध्यक्ष, श्री नेमीचन्दजी कर्णावट को सहमंत्री, श्री दिलीपजी बाफना को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। परामर्शदात्री समिति में श्री रतनलालजी बाफना, श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना (संयोजक), श्री सुरेशचन्दजी कांकरिया (सह-संयोजक) मनोनीत किए गए। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

घाटकोपर (मुम्बई)- साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हुलासमलजी संचेती की जैन भागवती दीक्षा 61 वर्ष की वय में आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से 06 फरवरी, 2017 को सम्पन्न हुई।

-महेश नाहटा

बोटाद- श्री बोटाद स्थानकवासी जैन संघ के तत्त्वावधान में गच्छाधिपति श्री अमीगुरुजी आदि संत-सतीवृन्द के निश्रा में कुमारी निधि अतुलभाई शाह एवं कुमारी वेदान्ती जयसुखभाई शाह ने 02 फरवरी, 2017 को जैन भागवती प्रव्रज्या अंगीकार की। *-संजयकुमार प्राणलाल दोशी-मंत्री*

कांचीगुड़ा (तेलांगना)- आन्ध्रा जैन स्वाध्याय संघ कांचीगुड़ा को अपने संघ के अन्तर्गत संचालित धार्मिक

पाठशालाओं, धार्मिक उपकरण केन्द्र, कार्यालय व्यवस्था हेतु अध्यापक की आवश्यकता है। इच्छुक अपने पूर्ण विवरण के साथ (अनुभव, उम्र एवं योग्यता) आवेदन करे। वेतन योग्यतानुसार। **सम्पर्क सूत्रः**- 1. हस्तीमल गुन्देचा- 098664-14110, 2. आदेश सुराणा- 098498-71555, **पताः**- जैन स्वाध्यायी संघ, पूनमचन्द गाँधी जैन धर्मशाला बिल्डिंग, 3-4-1022, कांचीगुड़ा, हैदराबाद-500027 (तेलंगाना)

हैदराबाद- ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रान्तीय शाखा, युवा शाखा एवं महिला शाखा द्वारा विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से त्रयनगर में 21 रक्तदान शिविर लगाये गये, जिनमें 1648 लोगों ने रक्तदान किया। *-सज्जनराज गाँधी, अध्यक्ष*

चित्तौड़गढ़- साध्वी युगल शीलप्रभा-सत्यप्रभा द्वारा संकलित "प्रश्नोत्तर महोदधि-भाग 7" पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि 15 अप्रेल, 2017 है। 21 हजार, 15 हजार, 11 हजार आदि राशि के कई पुरस्कार दिए जायेंगे। पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका आदि प्राप्ति हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी शान्त-क्रान्ति जैन युवा संघ, नवकार भवन, 279-एच, हिरणमगरी, सेक्टर-3, उदयपुर-313002 (राज.), श्री विजय पटवा, प्रतियोगिता सह-प्रभारी-098501-27307

बधाई

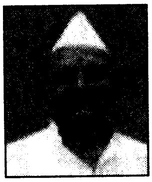

जलगांव- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की शासन सेवा समिति के संयोजक, सदाचार एवं शाकाहार के प्रबल प्रचारक, अहिंसा तीर्थ कुसुम्बा के संस्थापक संघसेवी श्री रतनलालजी बाफना को 08 फरवरी, 2017 को पीपाड़ में **'रत्न संघ विभूषण'** के अलंकरण से सम्मानित कर संघ ने गौरव का अनुभव किया।

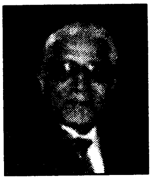

जयपुर- कैंसर विशेषज्ञ डॉ. पन्नालालजी सुपुत्र श्री स्वरूपचन्दजी नवलखा का 29 जनवरी, 2017 को सार्वजनिक अभिनन्दन राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याणसिंहजी द्वारा किया गया। आपकी आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा एवं रत्नसंघ के प्रति अनन्य भक्ति है। आप अत्यन्त दयालु, रोगियों के प्रति प्रेमभाव एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व है। आप निःशुल्क लेन्सर कैंसर रोग परामर्श का कार्य कर रहे हैं।

बूंदी- इतिहासविद् प्रो. (डॉ.) एस.एल. नागौरी को नई दिल्ली की ऑल श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा समाज भूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष नेमनाथजी जैन एवं राष्ट्रीय महामंत्री रमेशजी भण्डारी जैन द्वारा अभिनन्दन पत्र से सम्मानित किया गया।

-दिनेश विजयवर्गीय, पत्रकार

श्रद्धाञ्जलि

बोटाद- बोटाद सम्प्रदाय के गच्छाधिपति पूज्य श्री अमीगुरुजी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी एवं पूज्य तपस्वी श्री चम्पाबाईजी म.सा. की सुशिष्या प्रवचनप्रभाविका, आगमविदुषी महासती श्री प्रफुल्लाबाईजी म.सा. का 05 फरवरी 2017 को बोटाद में संलेखना-संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। 47 वर्ष की दीक्षा पर्याय के साथ 76 वर्ष की वय में पंडितमरण प्राप्त करने वाली महासतीजी का जीवन तप-साधना के साथ चारित्रनिष्ठा में संलग्न रहा।

-पारसमल चौरड़िया, उज्जैन

पाली- सुश्राविका श्रीमती लीला मेहता धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्दजी मेहता का 61 वर्ष की आयु में 20 फरवरी, 2017

को जोधपुर में स्वर्गवास हो गया। आप सरल, शान्त, दयालु, धर्मनिष्ठ, सेवाभावी एवं तपस्वी श्राविका थीं। आपने जीवन में तेले, अठाइयाँ, 15 उपवास व मासक्षपण जैसी अनेक तपस्याएँ की थीं। आपने अन्तिम समय में अन्न-जल के त्याग का प्रत्याख्यान कर लिया था। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के पूर्व महामंत्री श्री जगदीशमलजी कुम्भट की सबसे छोटी बहन थी। रत्नसंघ के सभी संतों के प्रति आपकी अटूट आस्था एवं भक्ति थी।

हिण्डौनसिटी- स्वाध्यायप्रेमी सुश्रावक श्री हुकमचन्दजी जैन सुपुत्र श्री गेंदालालजी जैन का 29 जनवरी, 2017 को

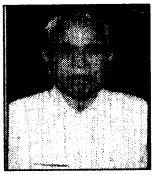

75 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। वे नियमित सामायिक-स्वाध्याय व प्रतिक्रमण करते थे। अष्टमी, चतुर्दशी को एकाशन व उपवास, नवकारसी आदि नियम करते थे। आजीवन रात्रिभोजन का त्याग, जमीकंद, रात्रि-तिविहार त्याग, अष्टमी, चतुर्दशी को हरी सब्जी का त्याग करते थे। श्री स्थानकवासी स्वाध्याय संघ से सन् 1984 से स्वाध्यायी बनकर पर्युषण में सेवाएँ देने हेतु जाते रहे। वर्ष 2015 में आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तपस्या का लाभ उठाया। आपने एवं आपके परिवार वालों ने चातुर्मास एवं शेखेकाल में विहार सेवा एवं अतिथि सत्कार का लाभ उठाया।

सवाईमाधोपुर- सुश्राविका श्रीमती कपूरीबाईजी (डांगरवाडा वाले) का 24 दिसम्बर 2016 को देवलोकगमन हो

गया। आपने दो बार वर्षीतप, तीन बार अठाई, बेले, तेले, पचोले की अनेक बार तपश्चर्याएँ कीं। प्रति वर्ष तीन बार तेला करती थीं। आपके पाँच सामायिक का नियम था। डांगरवाड़ा में स्थानक निर्माण में आपके परिवार की अहम भूमिका रही। डांगरवाडा में आप जैन, अजैन भाई-बहनों को धर्म कथा, भजन, लावणी के माध्यम से कुव्यसनों से दूर रहने की प्रेरणा करती रहती थीं। ग्राम में आने वाले दर्शनार्थियों, अतिथियों की सेवा करने में आपका परिवार अग्रणी रहा है। *-दीपक जैन*

इन्दौर- सुश्राविका श्रीमती स्नेहलताजी धर्मपत्नी श्री पदमचन्दजी जैन का 09 फरवरी 2017 को देवलोकगमन हो गया। आपकी देव, गुरु और धर्म में अटूट श्रद्धा थी। आप वरिष्ठ श्रावक श्री चौथमलजी जैन की पुत्रवधू थीं।

इन्दौर- सरलमना सुश्रावक श्री सुजानमलजी देशलहरा का 94 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। सादा जीवन उच्च विचार के आप मूर्तिमंत प्रतीक थे और आपका जीवन धर्म और सेवा भावना से अनुप्राणित था। मरणोपरांत आपके नेत्रों का दान किया गया।

जयपुर- श्रीमती बादामबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री गुलाबचन्दजी जैन का 23 जनवरी, 2017 को 78 वर्ष की वय में परलोकगमन हो गया। सन् 1989 में आपने शीलव्रत ग्रहण किए तथा दो वर्ष तक एकान्तर तप की तपस्या की।

भोपाल- सुश्राविका श्रीमती चन्द्रलेखाजी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्रकुमारजी मेहता का 75 वर्ष की आयु में 05 फरवरी 2017 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक, स्वाध्याय, तप-आराधना करती थीं। मेहता परिवार संघ सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य सत्कार में सदैव समर्पित रहा है। आपकी सक्रिय सेवाएँ संघ को नियमित रूप से प्राप्त होती रहती हैं।

जोधपुर- संघसेवी, सुश्रावक श्री लखपतजी जैन सुपुत्र श्री किशोरमलजी लूंकड़ का 12 फरवरी, 2017 को 67 वर्ष की आयु में संथारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सादगी एवं सेवा

कार्यों से पूर्ण था। *-गणपत सुराणा 'एडवोकेट'*

जोधपुर- सुश्राविका सुश्री काजलजी सुपुत्री श्री उमरावमलजी बाफना का 05 फरवरी, 2017 को 34 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप नित्य सामायिक करती थीं एवं स्वाध्याय में भी रुचिशील थी।

यादगिरी- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचंदजी सुपुत्र श्री पुखराजजी धोका (साथिन वाले) का 13 फरवरी, 2017 को स्वर्गवास हो गया। आप सरलमना, मिलनसार एवं गुरुभक्त श्रद्धावान श्रावक थे। आप नित्य सामायिक, शीलव्रत का पालन एवं बारह व्रत के आराधन में तत्पर रहते थे।

-गौतमचंद धोका

कोटा- सुश्राविका श्रीमती शिल्पाजी जैन (जूली) धर्मपत्नी श्री नरोत्तमजी जैन (भगवतगढ़ वाले) का 11 जनवरी, 2017 को 34 वर्ष की अल्प आयु में परलोकगमन हो गया। आपका जीवन सादगी एवं सेवाभावना से युक्त था। आप नियमित सामायिक स्वाध्याय करती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	:	जयपुर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
4. प्रकाशक का नाम	:	विनय चन्द डागा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)
5. सम्पादक का नाम	:	डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते: जिनका पत्र पर स्वामित्व है		सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-302003 (राज.)

मैं, विनय चन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च 2017

हस्ताक्षर-विनय चन्द डागा
प्रकाशक

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल से प्रकाशित सत्साहित्य की 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

788 श्री जैन स्वाध्याय संघ हैदराबाद, हैदराबाद (तेलंगाना)

789 श्री अजयजी मेहता, भोपाल (मध्यप्रदेश)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15782 से 15791 तक 10 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

श्रीमान् ज्ञानचन्दजी संतोषदेवीजी बाघमार, श्रीकालाहस्ती, 9 फरवरी 2017 को पीपाड़सिटी में श्री अशोकजी, कल्पेशजी एवं सुश्री मधुजी कवाड़ की जैन भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में उदारभाव से अर्थसहयोग।

11000/- श्री प्रदीपजी मेहता सुपुत्र श्री नवरतनराजजी मेहता, जोधपुर, हाल मुकाम नोएडा, दिल्ली, अपने पुत्र श्री पुलिन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

4100/- श्री शांतिलालजी जितेन्द्रजी बागरेचा, हैदराबाद, सुपुत्र जितेन्द्र संग सौ.कां. निकिता के शुभ विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

3100/- श्री जैन सा, लासूर स्टेशन, सप्रेम भेंट।

2100/- श्री कपूरचन्दजी, ओमप्रकाशजी, सोमप्रकाशजी जैन (बिलोपा वाले), आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, सौ.कां. डोलीजी सुपुत्री श्री सोमप्रकाशजी जैन का शुभविवाह चि. अंकितजी सुपुत्र श्री नरेशचन्दजी जैन के संग 6 फरवरी 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में।

2100/- श्री शांतिलालजी कोठारी, चेन्नई, सहयोग हेतु।

2100/- श्री पन्नालालजी कोठारी, चेन्नई, सहयोग हेतु।

2100/- श्रीमती कंचनदेवी जी जीरावला धर्मपत्नी श्री रूपराजजजी जीरावला, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री हितेश-स्वाति जीरावला के विवाह की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री मीठालालजी मनसुखकुमारजी, पदमचंदजी, कुशालचंदजी, पृथ्वीराजजी, अरविंदकुमारजी गोगड़ आगोलाई वाले, जोधपुर, श्री लालचंदजी सुपुत्र स्व. श्री पुखराजजी गोगड़ का 01 फरवरी 2017 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावनस्मृति में।

1300/- श्री उम्मेदमलजी जैन 'चौथ का बरवाड़ा', मानसरोवर जयपुर, धर्मपत्नी स्व. श्रीमती पुष्पादेवीजी जैन की 13 वीं पुण्य स्मृति में भेंट।

1150/- श्रीमती मंजूश्रीजी-गणपतजी सुराणा, जोधपुर एवं श्रीमती आशाजी-प्रकाशजी सुराणा, सूरत द्वारा श्री लखपतजी जैन का 12 फरवरी, 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन पुण्य स्मृति में।

1101/- श्री रमेशचन्दजी, चेतन कुमारजी, दिनेश कुमारजी शाह (अलीगढ़ वाले), जयपुर, पूजनीया माताश्री स्व. श्रीमती बादामबाईजी जैन के देवलोकगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री दुलीचन्दजी जैन (समीधी वाले), आवासन मंडल-सवाईमाधोपुर, चि. प्रमोदजी का शुभ विवाह सौ.कां. स्वातिजी सुपुत्री श्री नरेशचन्दजी जैन (कुण्डेरा वाले), जयपुर के संग 16 नवम्बर 2016 को सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल, बैंगलोर, 9 फरवरी 2017 को पीपाड़सिटी में जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री देवराजजी, किरणचन्दजी, महावीरचन्दजी, विमलचन्दजी चौपड़ा, बैंगलोर, पूजनीया माताश्री स्व. श्रीमती केलीबाईजी चौपड़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री गौतमचन्दजी जैन (डी.एस.ओ.), जयपुर, सुपुत्र मिहिरजी जैन का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री सौभाग्यमलजी, धर्मचन्दजी जैन, कुश्तला, चि. अंकितजी सुपुत्र श्री नरेशचन्दजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. डोलीजी सुपुत्री श्री सोमप्रकाशजी जैन (बिलोपा वाले) के संग 6 फरवरी 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री माणकलालजी, आसकरणजी सिसोदिया, नन्दूरबार, सुपौत्र चि. मेहुल कुमारजी सुपुत्र श्री महेन्द्र माणकलालजी सिसोदिया का सिविल इंजीनियरिंग के पद पर नियुक्ति होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री चौथमलजी, ओमप्रकाशजी जैन, इन्दौर, श्रीमती स्नेहलताजी जैन धर्मपत्नी पदमचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन, बीलोता, पूजनीया माताश्री की पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री धर्मचन्दजी जैन, शेखपुरा वाले, हिण्डौनसिटी, अपने सुपुत्र विकास जैन का शुभविवाह 18 फरवरी, 2017 को सौ. कां पूजा जैन सुपुत्री श्री सुरेशचन्दजी जैन, गंगापुरसिटी वाले के संग सुसंपन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री उमरावमलजी बाफना, जोधपुर, सुश्री काजल बाफना सुपुत्री श्रीमती पुष्पा देवी उमरावमलजी बाफना सुपौत्री सीता देवी धर्मपत्नी स्व. श्री सम्पतराजजी बाफना के 05 फरवरी 2017 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री राजेशजी निर्मलजी सुरेशजी जैन, चेन्नई, सहयोग हेतु।

1100/- श्रीमती हेमलताजी एवं श्री हुकमचन्दजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, सुपुत्र चि. चेतन का सौ. ज्योत्सना सुपुत्री श्रीमती निशाजी-श्री महेन्द्रकुमारजी जैन 'अलीगढ़-रामपुरा, के साथ 14 फरवरी, 2017 को विवाह संपन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रामकल्याणजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पुत्रवधू श्रीमती संजूलताजी धर्मसहायिका श्री रवीन्द्रजी जैन का 20 दिसम्बर 2016 के परलोकगमन पर स्मरणांजलि स्वरूप।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

श्रीमान् ज्ञानचन्दजी संतोषदेवीजी बाघमार, श्रीकालाहस्ती, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित सत्साहित्य हेतु उदारमना होकर अर्थसहयोग प्रदान किया।

58000/- श्री नरपतराजजी चौपड़ा, पाली, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से नवीन पुस्तक "साधना संग्रह" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

11000/- श्रीमती प्रमिलाजी बम्ब, जयपुर, सत्साहित्य प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- श्री मोहनलालजी सुमेरचंदजी चोरडिया, इंदौर, सहयोग हेतु।

2100/- श्री गोपालराज अबानी सुपुत्र स्व. श्री गुलराजजी अबानी, जोधपुर, सहयोग हेतु।

2100/- श्री उत्तमचंदजी मेहता, अपनी पूजनीय माताजी श्रीमती शांतिजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री गौतमचंदजी मेहता का 11 मार्च, 2017 को प्रथम पुण्यस्मृति के अवसर पर।

2000/- श्री हुकमचंदजी चंचलबाईजी जैन, चेन्नई, सहयोग हेतु।

1100/- श्री राजेशजी सुरेशजी निर्मलजी जैन, चिंतादरीपेठ, चेन्नई, सहयोग हेतु।

1100/- श्री दिलीपजी बाफना, जोधपुर, अपने पुत्र श्री जय बाफना के सी.ए. बनने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री गौतमचन्दजी जैन (डी.एस.ओ.), जयपुर, सुपुत्र मिहिरजी जैन का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजूलालजी, सुरेशचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), कोटा, चि. नितेशजी जैन का शुभविवाह सुसम्पन्न होने की खुशी में।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

50,000/- सुश्री रतिजी, आशीषजी, वर्षाजी, नतिनजी, मान्याजी, चार्तीजी जैन, सूरत, जीवदया सहयोग हेतु।

42705/- श्री शांतिलालजी श्रीमती सरलादेवीजी सुराणा, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

28835/- श्री राजीवजी श्रीमती प्रीतिजी एवं आयुष्मती कश्वीजी सुराणा, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

24820/- श्री संदीपजी श्रीमती लीनमजी एवं चिरंजीवजी रचितजी सुराणा, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

21000/- श्री सागरमलजी, श्री महावीरचन्दजी एवं श्री राजेशजी छाजेड़, चेन्नई, जीवदया सहयोग हेतु।

5100/- श्री तेजराजजी, श्री प्रकाशचन्दजी खिंवसरा (कोठारी) 'रणसी गाँव वाले', चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

2100/- श्रीमती सुशीलादेवजी जैन, चेन्नई, शिक्षा-दीक्षा सहयोगार्थ।

1100/- श्री राजेशकुमारजी, श्री सुरेशजी एवं निर्मलजी रांका, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री गजेन्द्रकुमारजी, श्री हेमन्तकुमारजी दुधेड़िया, मेड़ताशहर, अपनी दादीजी स्व. श्रीमती भँवरीदेवीजी की पुण्यस्मृति में जीवदया सहयोगार्थ।

1100/- श्री हस्तीमलजी डोसी, मेड़ताशहर, जीवदया सहयोगार्थ।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

15000/- डॉ. (श्री) अजीतराजजी रांका, भड़गाँव (महा.), पुस्तक प्रकाशन हेतु।

1100/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई, सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में मुमुक्षु भाई श्री अशोकजी कवाड़, मुमुक्षु भाई श्री कल्पेशजी कवाड़ एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री मधुबालाजी कवाड़ की भागवती दीक्षा की अनुमोदनार्थ प्राप्त अर्थ सहयोग।

पुन्नमल्लै (चेन्नई)

10000/- श्री दलीचन्दजी कवाड़
10000/- श्री पी. प्रेमकुमारजी कवाड़
10000/- मैसर्स हरीशकुमार एण्ड संस
10000/- दक्षा वेलफेयर ट्रस्ट
10000/- दर्शना वेलफेयर ट्रस्ट
10000/- श्री हरीश कुमारजी कवाड़
10000/- मैसर्स हरीशकुमार कवाड़ (एच.यू.एफ.)
10000/- सुश्री दक्षाजी कवाड़
10000/- श्री रविन्द्रकुमारजी कवाड़
10000/- श्रीमती अनीताजी कवाड़
10000/- श्रीमती आरतीजी कवाड़
10000/- श्री सुरेशचंदजी कवाड़
10000/- श्री नवरतनजी कवाड़
10000/- श्री प्रवीणकुमारजी कवाड़
10000/- श्री राधाकृष्णनजी
10000/- श्रीमती अमरावती जी कवाड़
10000/- श्री गुरु हस्ती फाउण्डेशन प्रा. लिमिटेड
10000/- श्रीमती चंचलकंवर मांगीलालजी कवाड़
10000/- मैसर्स मांगीलालजी (एच.यू.एफ.)
10000/- श्री यश कवाड़ वेलफेयर ट्रस्ट
10000/- श्रीमती एच. प्रभाजी कवाड़
10000/- मैसर्स हरीशकुमार यश कवाड़ (एच.यू.एफ.)
10000/- गुरु हस्ती प्लान्टेशन प्रा. लिमिटेड
10000/- श्रीमती सिरदारबाईजी कवाड़
10000/- श्री मनोजकुमारजी कवाड़
10000/- श्री प्रमोदजी कवाड़
10000/- श्रीमती मीनाजी कवाड़
10000/- श्रीमती वसन्ताजी कवाड़
10000/- श्री धीरजकुमारजी कवाड़

तिरूवल्लूर(तमिलनाडू)

10000/- श्री पी. पदमचन्दजी लूंकड़
10000/- श्री पी. किशोरकुमारजी लूंकड़
10000/- श्री पी. अजितकुमारजी लूंकड़
10000/- श्री के. कौशिकजी लूंकड़
10000/- श्रीमती पी. विनीताजी लूंकड़
10000/- श्रीमती के. रेखाजी लूंकड़
10000/- श्रीमती ए. हर्षाजी लूंकड़

कोयम्बटूर(तमिलनाडू)

10000/- श्री ऋषभकुमारजी कोठारी
10000/- श्रीमती मदनबाईजी कोठारी
10000/- श्री आई. प्रसन्नकुमारजी कोठारी
10000/- श्रीमती पिंकीजी कोठारी
10000/- श्री इन्दरचन्दजी कोठारी
10000/- श्री अंजुश्रीजी कोठारी
10000/- श्री इन्दरचन्दजी प्रवीणकुमारजी कोठारी

आरकोणम (तमिलनाडु)

30000/- श्री एस. प्रकाशचन्दजी धारीवाल
10000/- श्रीमती पी. मैनाबाईजी धारीवाल
10000/- श्री पी. प्रवीणकुमारजी धारीवाल
10000/- श्री पी. श्रेयांशजी धारीवाल
20000/- श्री पी. सुशीलकुमारजी धारीवाल
10000/- श्रीमती एस. अनीताजी धारीवाल
10000/- श्रीमती पी. मंजूबाईजी धारीवाल
10000/- सुश्री पी. आदित्यजी धारीवाल

चेन्नई (तमिलनाडु)

10000/- श्री पवनजी कवाड़
10000/- श्री राजु एन. वोरा
10000/- श्री मुकेशकुमारजी कोठारी
10000/- श्री संकेतजी कोठारी
10000/- श्री हिमांशुजी गहलोत
10000/- श्री मनोजजी कुचेरिया
10000/- श्रीमती रिष्टीजी कवाड़
10000/- श्रीमती भारती आर. वोरा
10000/- श्रीमती ममताजी कोठारी
10000/- श्री जे. भैरूलालजी जैन
10000/- श्री पी. जय पॉल
9000/- श्री पवनकुमारजी कोठारी

साहूकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु)

10000/- श्री अशोककुमारजी साण्ड
10000/- श्रीमती कान्ताजी साण्ड
10000/- श्रीमती रेखाजी साण्ड
10000/- श्रीमती मंजूदेवीजी एन.
10000/- श्रीमती शर्मिलाजी के. जैन
10000/- श्रीमती आर. निशाजी सेठिया
10000/- श्री हितेशकुमारजी साण्ड
10000/- श्री अक्षयकुमारजी साण्ड
10000/- श्री नेमीचन्दजी बोथरा
10000/- श्री कमलजी जैन
10000/- श्री पी. राकेशजी सेठिया

आवड़ी, चेन्नई (तमिलनाडु)

10000/- श्री जे. कमलचन्दजी कटारिया
10000/- श्रीमती विमलाजी के. कटारिया
10000/- श्री मनीषजी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
10000/- श्री हर्षदजी कटारिया
10000/- श्री कुशालचन्दजी कटारिया
10000/- श्री रमेशकुमारजी चौधरी, मैसूर (कर्नाटक)
12000/- श्री इन्दरमलजी, पीयूषजी जारोली, बालोतरा (राज.)
12000/- श्री राजेशजी, अर्पितजी बोहरा, जोधपुर (राज.)
2100/- श्री अजयजी मेहता, भोपाल (मध्यप्रदेश), स्व. श्रीमती चन्द्रलेखाजी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री नरेन्द्रकुमारजी मेहता की पुण्य स्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

फाल्गुन शुक्ला 15, रविवार	**12.03.2017**	**पक्खी, फाल्गुनी चौमासी पर्व**
चैत्र कृष्णा 8, मंगलवार	**21.03.2017**	**अष्टमी, भ. आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 79 वां जन्मदिवस**
चैत्र कृष्णा 14, सोमवार	**27.03.2017**	**चतुर्दशी, पक्खी**
चैत्र शुक्ला 7, सोमवार	**03.04.2017**	**आयम्बिल ओली प्रारम्भ**
चैत्र शुक्ला 8, मंगलवार	**04.04.2017**	**अष्टमी**
चैत्र शुक्ला 13, रविवार	**09.04.2017**	**भगवान महावीर जन्म कल्याणक**
चैत्र शुक्ला 14, सोमवार	**10.04.2017**	**चतुर्दशी, पक्खी**

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 71 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 19 अगस्त से 26 अगस्त 2017** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2017** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम..............................जिला.......................प्रान्त..................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?..............................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...
10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, 94141-26279(कार्यालय), फैक्स-2636763, मो.-9461522309 (संयोजक), 09422775692 (सह-संयोजक), 8003615215(सचिव), 9462543360 (का. प्रभारी), ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail. com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री प्रकाशचन्द मुथा (संयोजक)-09884554801, श्री सुधीर सुराणा (पूर्व संयोजक)-09381540004

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, पूँजणी, मुँहपत्ती, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम रियायती दर पर 200/- रुपये में उपलब्ध है। जोधपुर से बाहर मंगवाने पर पार्सल खर्च अतिरिक्त देय होगा।

-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन नं. 0291-2636763

बाल-जिनवाणी

भगवान महावीर

सुश्री लोरी मोदी

महावीर 'शब्द' को जीवन में आचरित कर 'महावीरत्व' प्रकटाएँ:-

M	=	**Make our heart merciful.**	हृदय को दया, अनुकम्पा से भर दें।
A	=	**Anger is the madness of mind.**	क्रोध दिमाग का पागलपन है, इसे त्यागें।
H	=	**Humanity is the root of all virtues.**	मानवता सर्वगुणों की जननी है।
A	=	**Abandonment should be our motto.**	त्याग ही जीवन का सिद्धान्त हो।
V	=	**Virtue makes man great and happy.**	सद्गुण व्यक्ति को महान् एवं सुखी बनाते हैं। सरलता, सहिष्णुता, समता, धैर्य आदि गुण अपनाएँ।
I	=	**Idleness is the root of all sins.**	प्रमाद पाप का मूल है- प्रमाद से बचें।
R	=	**Righteousness must be root of all life.**	सच्चाई ही जीवन का मूल है- सत्यमेव जयते नानृतम्।

-सुपुत्री श्री लोकेन्द्रनाथ मोदी,
''हुकुम'' 5-ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

सुविनीत कौन?

श्री बटुक

इन पन्द्रह कारणों से बुद्धिमान बालक सुविनीत कहलाता है:-

1. उद्धत न हा, नम्र हो।
2. चपल न हो, स्थिर हो।
3. मायावी न हो, सरल हो।
4. कुतूहली न हो, गंभीर हो।
5. किसी का तिरस्कार न करता हो।
6. शास्त्रों के अध्ययन का गर्व न करता हो।
7. किसी के दोषों का भंडाफोड़ न करता हो।
8. मित्रों पर क्रोधित न होता हो।
9. अप्रिय मित्र की भी पीठ पीछे भलाई ही करता हो।
10. किसी प्रकार का झगड़ा फसाद न करता हो।
11. बुद्धिमान हो और अभिजात अर्थात् कुलीन हो।
12. लज्जाशील हो।
13. एकाग्र हो।
14. क्रोध को अधिक समय तक न रखता हो, शीघ्र ही शान्त हो जाता हो।
15. अपने से मित्रता का व्यवहार रखने वालों के प्रति पूरा सद्भाव रखता हो।

वर्ग पहेली

नीचे दिए गए वर्ग से 24 तीर्थंकरों के नाम ढूँढकर उनमें अलग-अलग रंग भरने हैं और ये सीधे, आडे एवं तिरछे कॉलम में ढूँढे जा सकते हैं ?

ना	थ	म	सु	म	ति	ना	थ	द्धा	सु	म	हा	ण
त	म	अ	पा	ल्लि	र	वा	ऋ	श्रे	भ	शा	क्ष्म	श्रें
अ	थु	आ	र्श्व	स	ग	ना	सु	सि	पा	ल	र्थ	या
गौ	र	दि	ना	ष	हा	द्	वा	पू	वी	र्श्व	म	स
म	कु	ना	थ	प	भ	चं	प	ख	ज्य	गा	ना	ना
प्र	म	थ	थ	ल्लि	द्म	द्र	न	थ	र	म	स्वा	थ
सु	भु	द	मु	अ	श्रे	प्र	सं	थ	यां	मु	ति	श्र
वि	न्त	ऋ	व्र	भि	जि	भ	भ	व	न्ति	नि	स	म
घि	ष्प	त	ष	नं	पू	त	व	पा	म	सु	मी	अ
ना	च	व	सु	द	आ	ज्य	ना	शा	भि	व्र	ण	रि
थ	आ	वि	अ	न	न्त	ना	थ	थ	अ	त	भ	ष्ट
न्द्र	भ	पा	म	ल्लि	ना	थ	ध	सु	ने	र्श्व	र	ने
दे	र्श्व	शी	त	ल	ना	थ	न	मि	मु	नं	त	मि
ध	दि	वा	ना	अ	ना	वि	ना	म	रा	नि	द्रा	नं
र्म	पु	सु	शा	न्ति	ना	थ	वा	द	म	भ	सु	दा
ना	व्र	र्म	न्त	जि	त	न	म	हा	वी	र	प	त
थ	त	कुं	थु	ना	थ	पा	ल	बा	हु	ब	लि	ह

विद्यार्थी के पाँच लक्षण

बड़ों का विनय करना।
अभिमान नहीं करना।
सात कुव्यसन का त्याग करना।
किसी की निन्दा नहीं करना।
पढ़ाई में रुचि रखना।

सोते समय चिंतन करना

क्रोध मेरा नष्ट हो- क्षमा-गुण प्रकट हो।
मान मेरा नष्ट हो- विनय-गुण प्रकट हो।
माया मेरी नष्ट हो- सरलता-गुण प्रकट हो।
लोभ मेरा नष्ट हो- संतोष-गुण प्रकट हो।

An Apple Tree

Sh. Shol Silversteen

A Long time ago, there was a huge apple tree. A Little boy loved to come and play around it everyday. He climbed to the treetop, ate the apples and took a nap under the shadow.

He loved the tree and the tree loved to play with him. Time went by, the little boy had grown up and he no longer play around the tree every day.

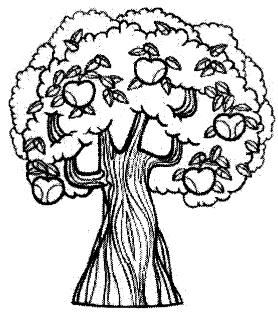

One day the boy came back to the tree and looked sad.

Come and play with me, the tree asked. I am no longer a kid. I do not play with ground trees any more, the boy replied I want toys, I need money to buy them.

"Sorry, I do not have money but you can pick all my apples and sell them. So, you will have money."

The boy grabbed all the apples and left happily. The boy never came back after he picked the apples. The tree was sad.

One day the boy who now turned into a man returned and the tree was excited.

"Come and play with me the tree said."

" I do not have time to play. I have to work for my family. We need a house for shelter. Can you help me?"

"Sorry I do not have any house. But you can chop of my branches to build your house." So the man cut all the branches of the tree and went happily. The tree was glad to see him happy but the man never came back since then. The tree was again lonely and sad.

One hot summer day, the man returned and the tree was delighted. "Come and play with me" the tree said.

"I am getting old. I want to go sailing to relax myself. Can you give me a boat?" Said the man.

"Use my trunk to build your boat. you can sail for away and be happy." Said the tree.

So the man cut the tree trunk to make a boat. He went sailing and never showed up for a long time.

Finally the man returned after many years. "Sorry my boy, But I do not have anything for you any more. No more apples for you. the tree said.

No problem. I do not have any teeth to bite. The man replied.

"No more trunk to climb on. I am too old for that now" the man said.

I really can not give you anything, the only thing left us with my dying roots, the tree said.

"I do not need much now. Just a place to rest. I am tired after all these years" the man replied.

Good! Old tree roots are the best place to lean on and rest. Come, sit down with me and rest. The man sat down and the tree was glad and smiled with tears.

This is a story of everyone. The tree is like our parents. When we were young. We loved to play with our mother and father. When we grow-up. We leave them; only come to them when we need something or when we are in trouble. No matter what parents will always be there and give everything they could just to make you happy.

You may think the boy is cruel to the tree, but that is how all of us treat our parents. We take them for granted: we do not appreciate all they do for us, until its too late.

Moral- Treat your parents with loving care... for you will know their values. When you see their empty chair... We never know the love of our parents for us till we have become parents.

वैज्ञानिक बन जाऊँ

डॉ. दिलीप धींग

माँ मैं वैज्ञानिक बन जाऊँ।।

ज्ञान-विज्ञान की रोचक बातें।
स्वप्न खगोल-भूगोल के आते।
कर दूँ प्रकट जो छिपा हुआ है,
नया आविष्कारक बन जाऊँ।
माँ मैं वैज्ञानिक बन जाऊँ।।

कोई गया था चन्दा के घर।
कोई चढ़ा एवरेस्ट-चोटी पर।
मैं जाऊँगा मंगल-ग्रह पर,
सर्वप्रथम तिरंगा फहराऊँ।
माँ मैं वैज्ञानिक बन जाऊँ।।

जीव-अजीव का भेद करूँगा।
'आत्मा है' यह सिद्ध करूँगा।
नई दिशा विज्ञान को देकर,
वसुन्धरा को स्वर्ग बनाऊँ।
माँ मैं वैज्ञानिक बन जाऊँ।।

सत्य, अहिंसा, भाईचारा।
परिवार संसार है सारा।
विनाश से विकास की ओर बढ़े,
ऐसा विज्ञान बताऊँ।
माँ मैं वैज्ञानिक बन जाऊँ।।

सर्वांगीण सर्वोत्तम प्रगति।
कसर रहे ना पाव रति।
मचे तहलका विश्व-पटल पर,
भारत का सम्मान बढ़ाऊँ।
माँ मैं वैज्ञानिक बन जाऊँ।।

-निदेशक, अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु

पापा सुना है तम्बाकू खाने से लोग मर जाते हैं, प्लीज! इसे छोड़ दीजिए

24 फरवरी, 2017 के दैनिक भास्कर में उपुर्यक्त शीर्षक से प्रकाशित सूचना व नन्हीं कशिश का अपने पापा के नाम लिखित मार्मिक भावुकता भरा पत्र पढ़ने में आया। पत्र क्या था पुत्री के मन में रही पवित्रता, पिता के प्रति प्यार, अटूट विश्वास व उसके कल्याण-कामना के शब्द ही स्वर गुंजित हो रहे थे। सहसा मुझे स्मरण हो आया जन-जन के तारणहार युग प्रबोधक आचार्य हस्ती के सुयोग्य पट्टधर व्यसनमुक्ति के अग्रदूत पूज्य श्री हीरा का जिनके पीयूष प्रवचनामृत व पावन प्रेरणा से सहस्रों व्यसनी व्यसन से मुक्त हुए हैं। नन्हीं 'कशिश' की यह कोशिश इस बात का भी संदेश दे रही है कि भले ही संसार में संस्कार के बीज-वपन का दायित्व माता-पिता व गुरुजनों का है, पर निश्छल बच्चों के मन की पवित्रता भी बड़ों के लिए पथ प्रदर्शन की पवित्र किरण बन सकती है। कशिश का पत्र-

डियर पापा, आई लव यू!

पापा, आज मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ। आप बहुत अच्छे हैं। दुनिया के सबसे अच्छे पापा। आपने मुझे हमेशा लाड-प्यार दिया है। मेरी हर ख्वाहिश पूरी की है। आपके भरोसे पर ही मैं अपने दोस्तों के बीच बड़ी से बड़ी चुनौती स्वीकार कर लेती हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि आप उस चुनौती को पूरा करने में हर तरह से मेरी मदद करेंगे। इसी तरह चुनौतियों को पार करते हुए मैं आपके हर सपने को सच करने में जुटी हूँ। लेकिन पता नहीं क्यों पापा, मुझे डर लग रहा है। मुझे ऐसा लगता है कि जब मैं आपके सपने पूरे कर रही होऊँगी, तब आप मेरे साथ नहीं होंगे। मुझे पता चला है कि जो लोग सिगरेट या बीड़ी पीते हैं या तम्बाकू-जर्दा खाते हैं, वो बहुत जल्दी मर जाते हैं। पापा, आप भी तो तम्बाकू खाते हो। इसलिए मुझे डर लग रहा है कि कहीं आपके साथ भी ऐसा न हो जाए।

पिछले दिनों मैंने अखबार में पढ़ा था कि तम्बाकू के इस्तेमाल से होने वाली बीमारियों के कारण भारत में हर साल दस लाख लोग मर जाते हैं। पूरी दुनिया के लिहाज से यह आंकड़ा हर साल 50 लाख मौतों का है। दुनिया में होने वाली हर पाँच मौतों में से एक मौत तम्बाकू की वजह से होती है। हर आठ सैकेण्ड में होने वाली एक मौत तम्बाकू और तम्बाकू जनित उत्पादों के सेवन से होती है। कितना डरावना है यह सब। पापा, कहीं ऐसा न हो जाए कि आने वाले किसी साल में इन लोगों में से एक नाम आपका हो। तब मैं क्या करूँगी पापा मेरे साथ कौन होगा जो मेरी मदद करेगा और अगर मैं कुछ बन भी गई तो आप तो यह देखने के लिए दुनिया में नहीं होंगे ना।

प्लीज पापा! मेरे कहने से आप तम्बाकू खाना छोड़ दीजिए। मेरे साथ रहिए। मेरा भरोसा बनकर, मेरे सबसे बड़े मददगार बनकर। मुझे यकीन है कि आप मेरी बात जरूर मानेंगे। बस, यही कहना था पापा कि मुझे आपसे बहुत प्यार है कि आप भी मुझसे बहुत प्यार करते हो। मेरे कहने पर आप सिगरेट पीना छोड़ दो। आपको मेरी कसम पापा। आपको मेरी कसम।

-आपकी प्यारी बेटी, कशिश

मैं अपने युवाओं व प्रौढ़जन साथियों को जब गुटखा, जर्दा इत्यादि तम्बाकूजनित पदार्थों का सेवन करते देखता हूँ तो मन पीड़ा से भर जाता है। क्या मैं आशा करूँ कि आप सब पूज्य आचार्य हीरा की जीवन-निर्माण की प्रेरणा को इस पत्र के माध्यम से समझकर अपने नन्हें-मुन्नों के पवित्र स्नेह श्रद्धा व विश्वास को मन में संजोकर अपने आपको व्यसनमुक्त बनायेंगे एवं अपने परिवार को सच्चा प्यार देंगे।

-संकलन - श्री मुन्नालाल आबड़, रायचूर-पलासनी-9448987255

बाल-स्तम्भ

जैन जीवन-शैली

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अप्रेल 2017 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

जैन अल्पसंख्यक की श्रेणी में आते हैं। जैनियों का विश्व आंकड़ा 44,51,753 लोगों का है। अल्प संख्यक होते हुए भी जैनियों का वर्चस्व चारों ओर फैला हुआ है। क्योंकि जैन जीवन शैली समृद्ध, परिष्कृत और परिपक्व है। 'अहिंसा परमो धर्मः' पर टिकी हुई है। इसकी जड़ें सुसंस्कारित और सुदृढ़ हैं। जैन धर्म को सबसे प्राचीन धर्म कहा गया है। सिन्धु घाटी से मिले जैन शिलालेख भी जैन धर्म को प्राचीन धर्म होने की पुष्टि करते हैं।

जैन समाज छोटा होते हुए भी इसके 86.73 प्रतिशत लोग साक्षर हैं। आचार-विचार श्रेष्ठ है। डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए., वकील, जज, प्रशासनिक सेवा एवं एम.बी.ए. डिग्री प्राप्त व्यक्ति पर्याप्त संख्या में हैं। कुछ जैन व्यापारी भी ईमानदारी से व्यापार करते हैं। उन व्यापारियों पर ईमानदारी की छाप भी लगी हुई है। आपस में लड़ाई-झगड़े कम हैं। परस्पर सौहार्द पूर्ण वातावरण है। जैनी भामाशाह हैं। जगह-जगह विद्यालय संचालित करने, अस्पताल बनवाने, मंदिर बनवाने आदि में भी आगे हैं।

जैन जीवन शैली सात्त्विक भोजन की प्रणाली है। अभक्ष्य वस्तुओं का सेवन वर्जित है। शराब पीने का भी चलन नहीं है। बहुत से जैनी जमीकन्द का त्याग करते हैं। विवाह एवं उत्सवों में भी सात्त्विक भोजन होता है। कई स्थानों पर अधिक व्यंजनों पर भी रोक लगी हुई है। बड़े गौरव की बात तो यह है कि होटलों में जैन थाली मांगने पर सात्त्विक भोजन उपलब्ध हो जाता है। अजैन लोग भी जो मांस का प्रयोग नहीं करते हैं वे भी जैन थाली मांगते हैं। यह जैनियों की परिचायिका है।

आजकल कुछ शादियाँ भी वैदिक प्रणाली से न होकर जैन-पद्धति से होने लग गई हैं। रात्रिभोजन से बचने और तेउ काय के जीवों की हिंसा से बचने के लिए दिन में विवाह रचा लेते हैं। होम-हवन की प्रथा भी टूटने लगी है।

जैनियों की त्याग-तपस्या एक मिसाल है। चातुर्मास में त्याग तपस्या की घटा छा जाती है। जिस प्रकार बादल वर्षा की झड़ी लगाते हैं, वैसे ही त्याग-तपस्या की झड़ी लग जाती है। छोटे-छोटे बच्चे तेला कर लेते हैं। अठाई, ग्यारह, पंद्रह, इक्कीस, मासक्षपण, वर्षीतप, आयंबिल आदि की तपस्या घर-घर में मिल जाती है। आप्त पुरुषों और महापुरुषों की जन्म-जयन्तियाँ, पुण्य तिथियाँ, त्याग-तपस्या, दान और अभय-दान से मनाई जाती है।

पर्युषण पर्व की छटा बेजोड़ है। आठों दिनों में घरों में हरी सब्जी नहीं बनती है। मंदिरों में भक्ति, पूजा-अर्चना का आयोजन होता है। धर्म-स्थानों में विशेष प्रवचन, शास्त्र-वाचन तथा अन्य धर्म क्रियाएँ होती हैं। संध्या

को सामूहिक प्रतिक्रमण होता है। रात्रि को पौषध करने वालों से स्थानक भरा रहता है। पर्युषण का अंतिम दिन (आठवां) क्षमा पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह विशिष्ट दिन है। इस दिन अधिकतर लोग उपवास करते हैं और प्रतिक्रमण में 84 लाख जीव योनियों से क्षमायाचना की जाती है। पश्चात् सभी जैनी लोग परस्पर वैर-द्वेष छोड़कर क्षमायाचना करते हैं।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे,
मित्ती मे सव्व भुएसु, वेरं मज्झं न केणई।।

क्षमा मांगने की परिपाटी जैनियों की विशेषता है। प्रत्येक दैनिक कार्य विवेक से किया जाता है। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय एवं त्रसकाय सभी प्रकार के जीवों की रक्षा की जाती है। निगोद, फूलन एवं फफूंदी का भी बचाव किया जाता है। खाद्य सामग्री को धूप दी जाती है ताकि जीवों की उत्पत्ति न हो। सामग्रियों की देखभाल करके भोजन बनाया जाता है। पानी को छानकर प्रयोग में लिया जाता है। धोवन पानी काम में लिया जाता है। मुख्य रूप से यही ध्यान रखा जाता है कि जीवों की हिंसा नहीं हो।

जैन चिह्न में अंकित 'परस्परोपग्रहो जीवानम्' के स्लोगन से प्रेरित जैनी आपस में मृदु व्यवहार रखते हैं, परस्पर सहयोग करते हैं। श्रावकों का अपना संघ होने से धर्म अनुष्ठानों को वे मिलकर करते हैं। वृद्ध श्रावक-श्राविकाएँ अपना अधिकांश समय धर्मस्थानकों में बिताते हैं। जैन युवक संघ भी समाज के प्रति अपने बहुत से दायित्व निभाते हैं, वे समय-समय पर मुफ्त चिकित्सा शिविर, रक्तदान शिविर, बाढ़-भूकम्प आदि क्षेत्रों में सहयोग करने जैसे कई लोकोपकारी कार्य करते हैं। बच्चों में दयालुता, सौहार्द की भावना, उदारता, विनम्रता के गुण देखे जाते हैं। साधु वर्ग प्रवचन द्वारा जैन परिवारों में करुणा, क्षमाशीलता, दया-दान, व्यसन-त्याग आदि के संस्कार देते हैं, जिससे जैन जीवन शैली संवृद्ध और संपुष्ट होती है।

जैनियों में वर्ण एवं जाति का, किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है।
जात-पात पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई।।

कोई भी व्यक्ति जैन धर्म का पालन कर सकता है यहाँ तक कि साधु-साध्वी भी बन सकते हैं। स्वेच्छा से संथारा लेने का विधान है।

प्रश्नः-

1. जैन किस श्रेणी में आते हैं और उनकी जनसंख्या कितनी है?
2. जैन जीवन शैली की कोई पाँच विशेषताएँ बताइये।
3. आयम्बिल तप कैसे किया जाता है?
4. होटल में जैन थाली किसकी पहचान है?
5. पर्युषण कम एवं कितने दिन मनाया जाता है? अष्टम दिवस को किस रूप में मनाया जाता है?
6. जातिवाद के सम्बन्ध में जैनों का क्या मत है?

-ई-123, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

(जिनवाणी के जनवरी-2017 के अंक का परिणाम पृष्ठ संख्या 32 पर द्रष्टव्य)

प्रिय बच्चों!

आप लोगों के विकास के लिए 'बाल जिनवाणी' प्रारम्भ की गई है। इसे पढ़ें, समझें, यह कैसी लगी, जरा लिखकर भेजें। आप अपनी रचनाएँ भी भेज सकते हैं।-सम्पादक

हमारा जैन धर्म गुणखान

श्री सूरजचन्द सत्यप्रेमी

हमारा जैन धर्म गुणखान।
सत्य अहिंसा का प्रतिपादक सुख का सत्य विधान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।टेर।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान आचरण कहा मुक्ति का द्वार।
संयम तप सेवा बतलाया, विश्व शांति का सार।।
श्रमण संस्कृति का ले आधार,
कर्म कांडों में किया सुधार।
क्रूरता का करके संहार,
सिखाया सब प्राणों पर प्यार।
कर्म चेतना में समझाया सरल भेद विज्ञान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।1।।
त्याग और वैराग्य भाव में समझ जगत का त्राण।
वीतरागता ध्येय बनाया जीवन का कल्याण।।
शरण उत्कृष्ट सिद्ध भगवंत,
हमारे पूज्य देव अर्हंत।
सुगुरु निर्ग्रंथ उच्चतम सन्त,
दयामय धर्म पन्थ सुखवन्त।
परमाधार चतुर्मङ्गल हैं शिवमय मोद निधान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।2।।
निराकार साकार जिनेश्वर और संघ आचार्य।
उपाध्याय मुनिराज आदि सब ध्येय हमारे आर्य।।
यही है महामंत्र सुख धाम,
अनवरत अवलम्बन अभिराम।
किया करते हम नित्य प्रणाम,
हृदय पाता विशुद्ध विश्राम।
विघ्न विनाशक अंध संहारक पंच शक्ति का ध्यान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।3।।
राग-द्वेष की ग्रन्थि भेदकर दूर किया दुःस्वार्थ।
छोड़ा सब मिथ्यात्व दुराग्रह मिला पूर्ण परमार्थ।।
सीख कर प्रथम धर्म सागार,
लिये फिर पंच महाव्रत धार।
हटाये सब प्रमाद व्यवहार,
पूर्ण संयम का पाया सार।
निर्विकार बन दूर हटाया, क्रोध लोभ छल मान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।4।।
विविध नयों का द्वन्द्व देखकर, बना मनुज दिग्भ्रान्त।
अनिरपेक्ष स्याद्वाद सिखाकर, दूर किया एकान्त।।
द्रव्यषट् व्याप्त सर्वत्र ही लोक,
किन्तु पर्याय अनेकानेक।
मिटाई ध्रुव अध्रुव की टेक,
कहा पाखंड सदा अतिरेक।
शुद्ध समन्वय शक्ति बताई, सद्विवेक पहिचान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।5।।
वर्ण व्यवस्था यज्ञ नाम पर फैले अत्याचार।
आत्म शुद्धि के निर्मल बल से उन पर किया प्रहार।।
युद्ध भी रहा दया का अंग,
कभी हो सका न संयम भंग।
पड़े आकर जब कठिन प्रसंग,
बनाया उचित धर्म का ढंग।
सप्त भंगियों का विश्लेषण, सत्य उदार महान्।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।6।।
सभी धर्म जग में महान् हैं, प्रेम सभी का प्राण।
सबने समय समय पर आकर किया लोक कल्याण।।
किन्तु हम बने रुढि के दास,
हृदय में हुआ दम्भ का वास।
द्वेष अवसाद मोह उच्छ्वास,
हमारे पास अन्ध विश्वास।
सत्य प्रेम के सूर्य चन्द्र की ज्योत्स्ना हो कि विहान।
हमारा जैन धर्म गुणखान।।7।।

जिनवाणी, जून-1955 से साभार

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

Since 1986

Certificate No. H-2012-0136

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

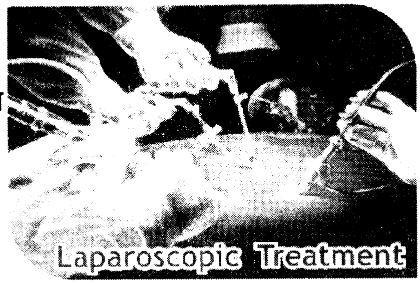

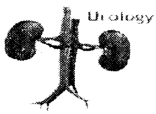

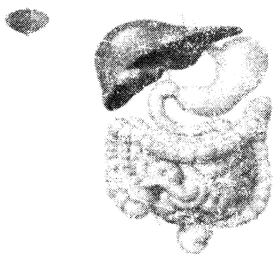

सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018

फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

Committed to Quality Committed to You

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

CUSTOMER GUARANTEED SATISFACTION

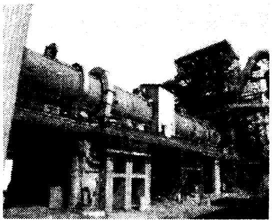
DRI Plant

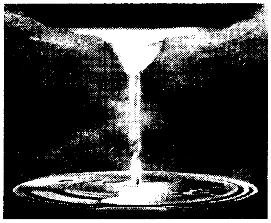
Electric Arc Furnace

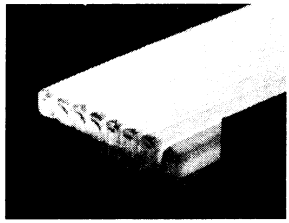
Billets

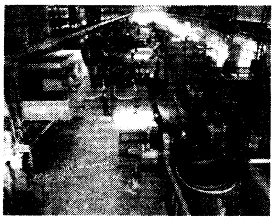
Rolling Mill

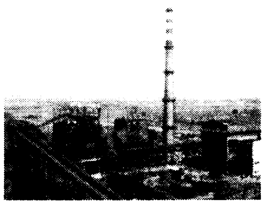
Captive Power Plant

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam……….

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad,Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!! !!Jai Guru Hasti!! !!Jai Guru Man!!

LIFE
SHOULD NOT
ONLY BE LIVED,
IT SHOULD BE
CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies
Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

Pradeep Kothari
Sanjay Kothari
Hemant Kothari
Alok Kothari

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENSA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन